माणिभद्र

महावीर जन्म वाचना दिवस

द्वितीय भादवा वदी अमावस, गुरुवार

दिनांक 16 सितम्बर, 1993

35वां

पुष्प

वि. सं. 2050

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ का वार्षिक मुख-पत्र

कार्यालय :

आत्मानन्द जैन सभा भवन, घीवालों का रास्ता, जयपुर

फोन : 563260

श्री जैन श्वे तपागच्छ सघ, जयपुर की स्थायी प्रवृत्तियाँ

1 श्री सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर,
घीवालो का रास्ता, जयपुर ।

2 श्री सीमधर स्वामी मन्दिर,
पाच भाइयो की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर ।

3 श्री रिखब देव स्वामी मन्दिर
ग्राम वरखेडा, (जयपुर)

4 श्री शान्ति नाथ स्वामी मन्दिर
ग्राम चन्दलाई, (जयपुर)

5 श्री जैन चित्रकला दीर्घा एव भगवान महावीर के जीवन चरित्र का भीति चित्रो मे सुन्दरतम चित्रण, सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घीवालो का रास्ता, जयपु

6 श्री आत्मानन्द सभा भवन, घीवालो का रास्ता, जयपुर

7 श्री जैन श्वेताम्बर तपगाच्छ उपाश्रय, मालजी का चौक, जयपुर

8 श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द सभा भवन, जयपुर

9 श्री जैन श्वे भोजनशाला, आत्मानन्द सभा भवन, जयपुर

10 श्री आत्मानन्द जैन धार्मिक पाठशाला

11 श्री जैन श्वे मित्र मण्डल पुस्तकालय एव सुमति ज्ञान भण्डार

12 श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

13 स्वरोजगार प्रशिक्षण, उद्योगशाला, सिलाई शाला

14 जैन उपकरण भण्डार, घीवालो का रास्ता, जयपुर

15 "माणिभद्र' वार्षिक मुख पत्र

24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी

-: वीर-स्तुति :-

—मुनि श्री ललितप्रभ सागरजी म.

जय-जय वीरा, जय जय श्री महावीरा
चलो जी मधुवन जाएंगे, प्रभु की महिमा गाएंगे।
अक्षय पुण्य कमाएंगे तीर्थवन्दन कर आएंगे
जो भाव सहित वन्दे, कट जाये सब फन्दे।
लख चौरासी के चक्कर से, अब मुक्ति पाएंगे।

तीर्थङ्कर ने वचन उचारे कोटि-कोटि मुनि मोक्ष पधारे।
फिर से वो युग लाएंगे, आत्म कल्याण कराएंगे।
भाव से भजन सुनाएंगे, पूजन का फल पाएंगे।

चलो कुण्डलपुर जाएंगे, प्रभु महावीर मनाएंगे।
सुमेरु पर्वत जाएंगे, प्रभु के चंवर ढुलाएंगे।
वो त्रिशला का प्यारा, दुनिया का उजियारा।
उस वर्धमान को पलने मांही आज झुलाएंगे।

जिसमें झूले वीर-सा ललना
भाग्यशाली वो चन्दन-पलना
सिद्धार्थ अब आएंगे, स्वर्ण की मोहर लुटाएंगे
खजाने सब खुल जाएंगे बधाई लेकर आएंगे

चलो पावापुर जाएंगे, पूजा भाव रचाएंगे।
प्रभु का पूजन गाएंगे, परम पद हम भी पाएंगे।
जल मन्दिर सुखकारी, निर्वाण-भूमि प्यारी,
दीवाली के दीये जाकर वहाँ जलाएंगे।

मोक्ष गये [illegible]
[illegible]
[illegible], [illegible]
'ललित' जिनवाणी [illegible]

सन्देश

परम पूज्य आचार्य भगवन्त
श्रीमद् विजय कला पूर्ण सूरीश्वरजी म

श्री सघ को योग्य धर्मलाभ,

मन को स्थिर बनाने का प्रयत्न करें उसके पहले निर्मल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। निर्मलता वैराग्य से आती है। वैराग्य भाव स्वरूप के चिन्तन एव स्वाध्याय से आता है। चित्त को निर्मल बनाने के लिए इतनी बात खास याद रखो कि राग मेरे चित्त को मलीन बनाता है और वैराग्य मेरे चित्त को निर्मल बनाता है। अत मुझे राग को दूर करना होगा और वैराग्य को प्रगट करना होगा। वैराग्य का चिराग मेरे दिल मे प्रदीप्त करना होगा। वैराग्य की यदि एक किरण भी प्रगट हो तो प्रभु, आपकी कृपा हुई और मेरे दिल मे वैराग्य की किरण प्रगट हुई, बाकी मेरे मे कहा ताकत है कि मै वैराग्य को प्रगट कर सकू, उसको अखण्ड रख सकू। आपकी कृपा सदा बनी रहे, यह मेरे दिल मे प्रगट हुआ वैराग्य का चिराग सदा जलता रहे। पर्युषण के पवित्र दिनो मे प्रभु के प्रति यह हार्दिक प्रार्थना हर व्यक्ति को करना जरूरी है, यह हमारा शुभ सन्देश है।

माणिभद्र के प्रकाशन द्वारा आपके द्वारा जो साहित्य प्रसार किया जाता है उसमे कई बाते ऐसी भी है कि जो वैराग्य को परिपुष्ट बनाती है। वैराग्य की वृद्धि करती है। अच्छे साहित्य का वाचन, चिन्तन, स्वाध्याय वैराग्य भाव को पैदा करके हमारे हृदय को निर्मल बनाता है।

माणिभद्र का यह अक भी मुमुक्षुओ के लिए स्वाध्याय मे प्रेरक बने यही हमारी शुभकामना है।

मद्रास
25-8-93

आचार्य कलापूर्णसूरी

दिनाक १२-७-१९९३

परम पूज्य आचार्य भगवन्त
श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वरजी महाराज साहब का सन्देश

श्री मणिभद्र के ३५वें वर्ष मे अङ्क प्रकाशन पर हमारी हार्दिक शुभ कामना।

श्री जिनेन्द्र शासन की महिमा युक्त सम्यग्ज्ञान के प्रचारात्मक सामग्री सहित इसके प्रकाशन मे विशेष सुन्दरता लावें, यही कामना।

आचार्य सुशील सूरी

सम्पादकीय

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर की वार्षिक स्मारिका "माणिभद्र" के २५वें अङ्क को श्री संघ को समर्पित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है। वर्तमान में कार्यरत महासमिति (वर्ष १९९१-९३) के कार्यकाल का यह तीसरा अंक है।

तीन वर्षों के कार्यकाल में प्रथम गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा. का, द्वितीय आचार्य श्री हिरण्यप्रभ सूरीश्वरजी म. सा. तथा तृतीय इस वर्ष में उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म. सा. आदि ठाणा-२ एवं आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी म. सा. की समुदायवर्त्ती साध्वी श्री राजेन्द्रश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-२ का चातुर्मास इस वर्ष जयपुर में सम्पन्न हो रहा है। उपाध्याय श्री के "योग शास्त्र" एवं "श्री चन्द्र केवली चरित्र" पर बहुत ही ओजस्वी, तत्वज्ञान पूर्ण एवं सारगर्भित प्रवचन हो रहे हैं। आप सभी की उपस्थिति से श्री संघ में अत्यन्त हर्षोल्लास का वातावरण बना हुआ है एवं अनेक प्रकार की विशिष्ठ आराधनायें हो रही है।

इस अङ्क में आचार्य भगवन्त श्री पदमसागर सूरीश्वरजी म. सा. की कर्म स्थली आचार्य श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मन्दिर परिसर में विराजित भगवान महावीर स्वामी की भव्य प्रतिमाजी का चित्र प्रकाशित किया गया है जो दर्शनीय एवं संग्रहणीय है।

सदैव की भांति जैन शासन शिरोमणि आचार्य भगवन्तों, मुनिवृन्दों साधु-साध्वीजी म. सा. एवं विद्वान लेखकों ने अपनी रचनाओं से इस अङ्क को भी परिपूर्ण एवं पठनीय बनाने में योगदान किया है जिनके लिए सम्पादक मण्डल उनका कृतज्ञ है।

विज्ञापन की दरों में वृद्धि करने के उपरान्त भी दानदाताओं ने उदार मन से विज्ञापन देकर इस अङ्क को प्रकाशित करने में आर्थिक सहयोग प्रदान किया है उनके लिए भी सम्पादक मण्डल सभी के प्रति आभार व्यक्त करता है।

लेखकों के विचार एवं मान्यतायें अपनी है जिनका सम्पादक मण्डल से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस बात की पूरी सावधानी बरती गई है कि ऐसी कोई रचना प्रकाशित नहीं हो जिसमें किसी धर्म की भावना को ठेस पहुंचे अथवा विवादास्पद हो, फिर भी ऐसी कोई रचना अथवा वाक्यांश ऐसा आ गया हो तो सम्पादक मण्डल पवित्र मन से क्षमा प्रार्थी है।

आशा है कि यह अङ्क भी स्वाध्याय प्रेमियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, इसी आशा के साथ,

— सम्पादक मण्डल

दि० [illegible]

गीत

डा० शोभनाथ पाठक, भोपाल

"माणिभद्र" मानव मगल का, चला रहा अभियान है,
पाचो व्रत अपनाने मे ही, जन-जन कल्याण है।

महावीर प्रभु जन्म वाचना पर अद्वितीय सृजन न्यारा,
तपागच्छ की गरिमा जिसमे जैन जगत का उजियारा ।।
आत्मानन्द सभा की आत्मा, अगणित आशाओ का रूप,
आध्यात्मिक उत्थान अलौकिक, सबकी श्रद्धा के अनुरूप ।।

पाप-ताप का छटे अधेरा, युग के लिये विहान है।
माणिभद्र मानव मगल का, चला रहा अभियान है।

पैतीसवा अक यह उत्तम, ज्ञान धर्म थाती न्यारी,
इसके सुमन की सुमधुरता से, गमक उठे धरती सारी ।।
मानवता का प्रतिपल मगल, जन जाग्रति आह्वान मे।
आकुल विश्व शाति सुख पाये, नव युग के निर्माण मे ।।

तपागच्छ सघ के भावो का यह अद्वितीय विधान है।
माणिभद्र मानव मगल का चला रहा अभियान है।

● ● ●

राष्ट्र संत युगद्रष्टा

जैनाचार्य श्रीमद् पदमसागरसूरिश्वरजी म. सा.

आप श्री का चातुर्मास वर्ष १९९४ में दिल्ली में होना निश्चित हो गया है।

[illegible] श्री पूनमचन्द पारसमल [illegible], दिल्ली

आचार्य प्रवर का सक्षिप्त जीवन परिचय

नाम	प्रेमचन्द/लब्धिचन्द
पिता का नाम	श्री रामस्वरूपसिंहजी
माता का नाम	श्रीमती भवानीदेवी
जन्म	10 सितम्बर 1935, मगलवार को अजीमगज (बगाल) मे
प्रारम्भिक शिक्षा	अजीमगज मे
धार्मिक शिक्षा	शिवपुरी सस्थान मे
भाषा - ज्ञान	बगाली, हिन्दी, गुजराती, सस्कृत, प्राकृत राजस्थानी व अग्रेजी
दीक्षा	13 नवम्बर 1954, शनिवार को साणद (गुजरात) मे
दीक्षा प्रदाता	आ श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी म सा
गुरु	आ श्री कल्याणसागरसूरीश्वरजी म सा
गणि-पद	28 जनवरी 1974 सोमवार को जैन नगर, अहमदाबाद
पन्यास - पद	8 मार्च 1976, सोमवार को जासनगर (गुजरात) मे
आचार्य - पद	9 दिसम्बर 1976, गुरुवार को महेसाणा (गुजरात) मे
तीर्थ-यात्राएँ	तकरीबन भारत के छोटे-बडे सभी तीर्थों की
भ्रमण	राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तामिलनाडु तथा गोआ
पद यात्रा	कोई 43000 किलोमीटर से अधिक
प्रतिष्ठाएँ	सैंतीस
उपधान तप	ग्यारह
यात्रा - सघ	पाच
दीक्षाएँ	सैंतीस भाई-बहनो की
शिष्य प्रशिष्य	बारह-बारह
साहित्य प्रकाशन	हिन्दी-गुजराती व अग्रेजी मे छोटी बडी कुल तेईस पुस्तकें।

— ० —

अनुक्रमणिका

उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागरजी म० सा०

चित्र परिचय

उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म. सा.

उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म सा जिनका चातुर्मास इस वर्ष जयपुर मे सम्पन्न हो रहा है, सक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

आसोज सुदी 14, सम्वत् 1994 के शुभ दिन श्री हुक्मराजजी सा मुणोत पिताश्री एव श्रीमती ज्ञानदेवी की कुक्षी से आपका जन्म हुआ। माता पिता ने अपने लाडले का नाम शकरराज रखा। आपकी शिक्षा उस काल मे भी 10वी कक्षा तक हुई तथा आपने राज्य सेवा प्रारम्भ की लेकिन पूर्व जन्म के सस्कारो से ओत प्रोत आपमे वैराग्य भावना उद्वेलित हो रही थी और आपका मन न राज्य सेवा मे लग रहा था और न ही सांसारिक कार्यकलापो मे।

जेठ वदी 5 सम्वत् 2016 के दिन मेडता रोड तीर्थ पर आपकी दीक्षा आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी म सा के पास सम्पन्न हुई। आपकी बडी दीक्षा फाल्गुन शुक्ला 3 सम्वत् 2018 को चान्दराई राजस्थान मे हुई। यही से आपकी साधु जीवन की वैराग्य भावना से ओत प्रोत एव सासारिक बन्धनो से मुक्त होने की जीवन यात्रा प्रारम्भ हुई।

25 वर्ष के कठोर साधु जीवन को व्यतीत करने के बाद फाल्गुन शुक्ला 3, सम्वत् 2043 को आपको पन्यास पद पर आरूढ किया गया तथा सम्वत् 2049 के वैशाख शुक्ला 3 के दिन आपको उपाध्याय की पदवी से विभूषित किया गया है। आपमे अध्यापन की अनोखी शक्ति, कण्ठ मे जादू और आत्मा मे तपश्चर्या का तेज है।

आपकी हिन्दी, गुजराती, सस्कृत, अग्रेजी आदि मे अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आपकी निश्रा मे अनेक स्थानों पर प्रतिष्ठायें सम्पन्न हुई हैं एव पद यात्री सघो के सफल आयोजन हुए हैं।

परम श्रद्धेय, युगदृष्टा, ओजस्वी प्रवचनकार, राष्ट्रसन्त आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वजी के प्रथम पट्टधर उपाध्याय श्री का यह चातुर्मास जयपुर जैन जगत के लिए प्रबल पुण्योदय का हेतु है जिनकी पावन निश्रा मे अनेक जप तप, ज्ञान ध्यान, शिक्षण शिविर आदि धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न हो रहे हैं।

—सम्पादक मण्डल

धर्म पुरुषार्थ

उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म. साहब

वर्तमान काल का विज्ञान केवल शरीर की बात करता है परन्तु आत्मा को भूल गया है। धर्म केवल आत्मा की बात करता है परन्तु शरीर को भूल गया है। इसी ऊहापोह में इन्सान दुविधा में पड़ गया है। विज्ञान ने हमको भोजन तो दिया परन्तु भूख को छीन लिया हथियार दिये परन्तु प्रेमवात्सल्य कोछीन लिया है। ऐशोआराम की सुविधा दी परन्तु मीठी नींद कोभी छिनलिया।धर्मएक आत्मा का दूसरी आत्मा से सबकी अनुभूति कराता है। डॉ. राधाकृष्णन ने ठीक कहा था—विज्ञान के युग में इन्सान मछली की तरह तैरना सीख गया है, पक्षी की तरह आकाश में उड़ना सीख गया है परन्तु इन्सान की तरह जमीन पर चलना नहीं सीख सका। जमीन पर चलने का तरीका सिर्फ धर्म ही दे सकता है अतः जीवन में धर्म पुरुषार्थ अत्यन्त आवश्यक है।

आज का मनुष्य (मानव) जब मकान बनवाता है या पेन्ट खरीदता है अथवा [illegible] खरीदता तब सबसे पहले पूछता है कि [illegible], [illegible] है या नहीं। [illegible] पसन्द करेगा। इस मनुष्य को पूछिये कि [illegible] जीवन धर्म के [illegible] है या नहीं? [illegible] है या नहीं? [illegible] धर्म के [illegible] हो जायेगा।

अपन किसी भी गति या किसी भी योनि में थे वहाँ एक क्षण भी ऐसा नहीं होगा जहाँ अपनने पुरुषार्थ न किया हो। यह पुरुषार्थ सत् या असत् होता ही है। एक बड़ा बंगला था। नौकर कचरा निकाल रहा था। वहीं सेठजी का बच्चा उसी कचरे से मुट्ठियां भर-भरकर बाहर बिखेर रहा था। दोनों का पुरुषार्थ है परन्तु एक का सत् है दूसरे का असत् है।

किसी भी पदार्थ का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त कियाजायउसके 11 उपाय बतायेगये हैं। उनमें प्रथम उपाय है उद्यम। दही में मक्खन है उसको आप साष्टांग प्रणाम करते रहें। वर्षों तक प्रार्थना करते रहे कि दही देवता कुछ तो मक्खन दे दो। तो क्या आपको प्रार्थना मात्र से मक्खन मिल जायेगा? समुद्र (रत्नाकर) के पास रत्नों का भण्डार है प्रार्थना करने से समुद्र आपको रत्न निकालकर दे देगा? एक विचारक ने कहा है कि भक्ति के पास हृदय है, ज्ञान के पास आँखें हैं तथा पुरुषार्थ के पास पग है। हृदय से आप किसी भी वस्तु पर विश्वास कर सकते हैं। आँखों के द्वारा आप उसे देख सकते हैं परन्तु उसको [illegible] काम तो पाँव का ही है। [illegible] विश्वास से [illegible] नहीं हो सकती। [illegible] है।

एक महात्मा को एक दिन भिक्षा जाते वक्त वैश्या ने उनसे पूछा कि आप पुरुप है या स्त्री ? योगी ने कहा किसी दिन इसका जवाव दू गा। योगी की अन्तिम अवस्था आ गई, वैश्या वहा पहु ची और फिर वही प्रश्न पूछा। जवाव दिया मैं पुरुप हू। तो आपने इतने दिन पहले जवाव क्यो नही दिया ? पुरुप तो आप पहले थे ही थे ? योगी ने कहा जो पुरुपार्थ की साधना करता है वही सच्चा पुरुप है। पुरुष के शरीर मात्र से पुरुप नही कहा जाता। पुरुपार्थ की साधना मे सफलता मिली या नही अपने जीवन के अन्त मे ही। पिछले जीवन का निरीक्षण करके ही जाना जा सकता है पहले नही। दैव निहत्य कुरू पौरुपमात्म शक्तया। भाग्य का नाश करके अपनी शक्ति से पुरुपार्थ करो। पुरुपार्थ के पाच पगतिये हैं। (1) उत्थान यानि आलस्य का त्याग करके खडा रहना। (2) कर्म यानि कार्य मे सलग्न रहना (3) वल यानि स्वीकृत कार्य मे मन वचन काय योग का उपयोग करना (4) वीर्य स्वीकृत कार्य को सपूर्ण करने का उत्साह आनन्द रखना (5) पराक्रम चाहे जैसी मुसीवत मे भी सामना करके धैर्य पूर्वक खडा रहना।

यदि आप पूछने हैं कि धर्म क्या है तो उत्तर होगा कि जैन धर्म मे धर्म की एक नही अनेक परिभापाए पढने को मिलती है।

स्वामि कार्तिकेय ने अपनी अनुप्रेक्षा नामक कृति मे धर्म की परिभाषा दी है। वत्थु सहावो धम्मो वस्तु का स्वभाव ही उसका धर्म है। पानी का ठडा होना, आग का गरम होना, नमक का खारा होना, शक्कर का मीठा होना। उसी प्रकार चेतन का ज्ञानवान होना, सहज स्वभावत सिद्ध अनुभूत है।

आचार्य कुन्दकुन्दाचार्य ने प्रवचन सार मे कहा कि आदा धम्मो मुणेयव्वो धर्म आत्मा का स्वरूप है। जिसका आत्म प्रवल महान है वही महान आत्मा महात्मा है।

आचाराग निर्यु क्ति मे आचार्य भद्रवाहु-स्वामि ने कहा कि सृष्टि का सार धर्म है। धर्म का सार निर्वाण है। निर्वाण का लाभ आत्मा को ही होता है।

वोधपाहुड मे कुन्दकुन्दाचार्य ने लिखा कि धम्मोदया विसुद्धे। जिसमे दया की विशुद्धता है पवित्रता है वह धर्म है। दया के भी दो भेद हैं (1) स्वदया और (2) परदया।

रत्नकरण्डक श्रावकाचार मे स्वामि समन्तभद्र ने कहा कि सद्दृष्ठि ज्ञानवृत्तानि धर्मेश्वरा विदु। तीर्थकरो ने सम्यग् दर्शन ज्ञान चरित्र को ही धर्म कहा है।

सम्यग् दर्शन यानि स्व और पर का भेद विज्ञान। ज्ञान यानि सुदेव, सुगुरु, सुधर्म मे अविचल अखड श्रद्धा।

तत्वार्थ सूत्रकार उमास्वाति महाराज न कहा कि उत्तम क्षमा मार्दवार्जव शौच सत्य सयम तपस्त्यागाकिंचन्य ब्रह्मचर्याणि धर्म। धर्म के क्षमा आदि 10 लक्षण है।

उत्तराध्ययन की दृष्टि से वृद्धावस्था और मृत्यु के महाप्रवाह मे डुवते हुए प्राणियों के लिये धर्म ही दीपक है। प्रतिष्ठा है, गति है, उत्तम शरण है। धर्म का अर्थ वास्तव मे

आत्मशोधन से है। परन्तु लोग इसे राज-नैतिक शस्त्र बनाकर इसका दुरुपयोग करते है। परिणाम स्वरूप धर्मकलह का कारण भी बन जाता है।

एक जापानी ने स्वामी विवेकानन्दजी से पूछा भारत में गीता रामायण वेद उपनिषद का इतना ऊंचा धर्म दर्शन है तथापि वहां के लोग परतन्त्र और निर्धन क्यों है? जवाब मिला बन्दूक बहुत ही अच्छी है परन्तु चलाना न जाने तो सैनिक को श्रेय नही मिल सकता। इसी तरह भारत का धर्म दर्शन तो श्रेष्ठ है परन्तु भारतीय दर्शन या धर्म को व्यवहार में लाने में ही इसकी सार्थकता है।

रात्रि में दीपक जल रहा था। बालक ने मां से पूछा यह दीपक क्यों जल रहा है? मां ने कहा अंधेरा है। यह दीपक कब तक जलेगा? जब तक रात है तब तक यह दीपक जलेगा।

पात्र बड़ा कि पदार्थ? अमृत तुल्य दुध भी शराब पात्र में रखने से खराब हो जाता है। इसीलिए भगवान ने फरमाया कि हृदय के पात्र को शुद्ध करोगे तभी आत्मा शुद्ध बुद्ध बनेगी। धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ। धर्म शुद्ध पवित्र हृदय में रहता है।

चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय,
दो पाटों के बीच में साबुत बचा न कोय।
[illegible] चलने दे [illegible] ॥

दो पाटों के बीच में अनाज का दाना सुरक्षित नहीं रह सकता इसी प्रकार सांसारिक प्रपंचों में मनुष्य नष्ट रहा है। जो कीलि [illegible] का सहारा पकड़ता है वह दुःख से बच जाता है।

जैसे पृथ्वी सबको आधार देती है और वनस्पति सबको ऑक्सीजन देती है वैसे ही धर्म भी सबको आधार एवं ऑक्सीजन देता है। वह आधार और ऑक्सीजन बाहर का नहीं, बाहर के आधार और ऑक्सीजन के होने पर भी मानव का अन्त रंग जीवन सब सुना सुना होता है, तब धर्म उसे आधार देता है।

एक शराबी मदिरालय में शराब पीने गया। नशे में चूर था। साथ में लालटेन लेकर आया था। शराब पीकर लालटेन लेकर चला। अंधेरी रात थी। रास्ता दिखाई नहीं देता था। शराबी बोला देखो कैसा घोर कलियुग आ गया है कि लालटेन ने प्रकाश देना बन्द कर दिया है। थोड़ा आगे चला खड्डे में गिर गया। लालटेन पर गाली देने लगा लालटेन प्रकाश नहीं देती है। घर जाकर सो गया। सुबह जहां शराब पीकर आया था वहां से चिट्ठी आई आप श्रीमान् रातको हमारे यहां मदिरा पीने आये थे उस समय आपकी लालटेन तो यहां छोड़ गये और हमारा तोते का पिंजरा लेकर चले गये थे। अतः आप हमारा पिंजरा दे जाइये और आपकी लालटेन ले जाइये। प्रश्न हुआ तोते का पिंजरा भी कभी प्रकाश करता है? नहीं करेगा, क्योंकि पिंजरा प्रकाश का साधन नहीं है। इसी प्रकार जो शुद्ध साधन नहीं है, जो [illegible] धर्म [illegible] है [illegible] होता है धर्म का शुद्ध स्वरूप [illegible]। और [illegible] प्रकाश [illegible]।

दृष्टान्त—[illegible]

किया केवल खोया ही खोया है । क्रोध अभिमान को खोया, मान लोभ को खोया । अहकार ईर्ष्या को खोया । परन्तु पाया कुछ नही आप भी क्रोध मान माया लोभ इर्स्या मत्सर को खो दें खोते-2 जो शेप बचेगा वह सोऽह होगा । नेति-3 कहते जायें शेप बचेगा वह अस्तित्व होगा । आजका आदमी आत्मा की खोज तथाधर्म की खोज मेजुटा है बहुत क्रियाएँ करता है किन्तु जब तक वह मन वचन काया का सयम नही करेगा उन्हे स्थिर नही करेगा तब तक आत्मदशन (धर्मदर्शन) नहीं होगा । जब तक सयम नही सधता तब तक जीवन मे परिवर्तन भी नही आता । जब तक दृष्टि नही बदलती तब तक सृष्टि नही बदलती । जीवन सफलता के 4 सूत्र हें, विस्तार-छाया-सौरभता और सरसता । विस्तार कहा से होगा ? जिसके जीवन मे जिज्ञासा होती है उसमें विस्तार होता है । प्रश्न होता है जानने की आवश्यकता क्या है ? जानकर भी मरना है और न जानकर के भी मरना हे फिर जानने से लाभ क्या ? गुरु ने शिष्य को पढने को कहा । शिष्य ने कहा मुझे पढने की आवश्यकता नहीं है । गुरुदेव आप ज्ञानी ह जब मुझ प्रश्न पूछना होगा आपसे पूछ लू गा । गुरु ने कहा मैं चाहता हूँ तुम स्वय ज्ञानवान बनो । गुरुजी सभी आदमी डॉकर या वैद्य नही होते ? आदमी बीमार होता है, डाक्टर या वैद्य की दवा मे निरोगी बनता है । हर आदमी को डाक्टर या वैद्य बनने की क्या जरूरत हैं ? बहुत से व्यक्ति ऐसे होते हैं कि उनमें अपने आपको जानने की इच्छा ही नही होती । आत्मा या धर्म या सत्य को जानने की बात तो जाने दीजिये परन्तु स्वय को भी जानना नहीं चाहता ।

चालना प्रेरणा शाब्दिक अर्थ है हिलाना । मन में जिज्ञासा जगी परन्तु मनमे प्रेरणा नही हुई । चालना नहीं किया । पुरुपार्थ नही किया जिससे जिज्ञासा अपने आप नष्ट हो गई ।

कुछ लोग जिज्ञासु बनते है तत्व को जान लेते हैं परन्तु अपने ज्ञान का चालना नही करते आगे नही बढते । जिज्ञासा जीवन का वृक्ष विस्तार है । चालना जीवन वृक्ष के पत्ते हैंजो छाया देते है । विनम्रता विनय जीवन वृक्ष का मूल है जो सौरभ सुगन्ध देता है । अत विनय से ज्ञान प्राप्ति होती है ।

सुख-दु ख यह तो कर्म का क्रम है,
यह सत्य हकीकत है, न कोई भ्रम है ।
साधक तेरी जिदगी का उपयोग कर,
आत्मिक सुधार ही सच्चा श्रम है ।।

पर्युषण पर्व का संदेश

आचार्यश्री विजय इन्द्रदिन्नसूरिजी म. साहब

प्रतिवर्ष आनेवाला पर्वाधिराज पर्युषण पर्व मनुष्य के लिए एक संदेश लेकर आता है। बहुत कम लोग उस संदेश को सुन पाते हैं और सुनकर उससे भी कम लोग उस संदेश का पालन करते हैं।

अधिकतर मनुष्य एक सतह पर जीते हैं, उनका आचरण गतानुगतिक होता है इसे हम भेड़िया धसान भी कह सकते हैं। गोताखोर बनकर गहराई में पहुंचने वाले कितने होते हैं? प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व आता है और चला जाता है। इसके आगमन के साथ ही नयी उमंग, नये उल्लास, नये उत्सव, नयी जागृति और नया पुरुषार्थ दिखाई देता है। हम आठ दिन आराधना, साधना, तपस्या, प्रतिक्रमण, सूत्र श्रवण, सामायिक, परस्पर क्षमायाचना भी करते हैं। परन्तु इस पर्व के विदा होते ही हम वहीं अटक जाते हैं, हमारे राग-द्वेष वैसे ही पूर्ववत मन पर कब्जा जमा लेते हैं। हमारे हृदय और मन में वही विषय-कषायों की कालिमा छा जाती है। हम उसी मोह और आसक्ति में मग्न हो जाते हैं।

इस महापर्व की आराधना के साथ हमारे जीवन में हमारे विचारों में, हमारे आचरण में हमारे व्यवहारों में, हमारे कुटुंब और [illegible] में परिवर्तन अवश्य होना चाहिए। [illegible]

[illegible]

आराधना द्रव्य है. उसे हम देख सकते हैं, उसे दिखाया जा सकता है। इसका सम्बन्ध शरीर से है। जैसे किसी व्यक्ति ने सामायिक की, तो हम द्रव्य रूप से देख सकते हैं कि उसने हाथ में चरवला और मुंहपति ली है, धोती और वेश पहना है। यह उसकी द्रव्य आराधना है।

इस सामायिक में वह अपने भावों को अपने विचारों को संयमित करता है, अपनी आत्मा का चिन्तन करता है, ध्यान करता है। क्रोध, मान, माया और लोभ को धीरे-धीरे जीतने का प्रयत्न करता है। अपने मन को समता में स्थापित करता है तो यह उसकी भाव आराधना है।

पर्युषण पर्व हमें भाव आराधना का संदेश देता है। हमारे ज्ञानियों ने कहा—'मूलं हि संसार तरो कषाया" संसार रूपी वृक्ष का मूल है कषाय। यह पर्व हमें कषायों को जीतने का संदेश देता है इन्हीं कषायों के कारण मनुष्य अनेक प्रकार का दुःख उठाता है। क्रोध, मान, माया और लोभ से व्यक्ति स्वयं भी दुःखी होता है और दूसरों को भी दुःखी करता है। वह स्वयं अपना भी अहित करता है और दूसरों का भी अहित करता है। [illegible]

जाएगी, न फूल लगेंगे न फल। वैसे ही मनुष्य जब इन कषायों को नष्ट कर देता है उसके प्रभाव से अपने को मुक्त कर लेता है। कषायों से उत्पन्न रस जब जीव को मिलना बंद हो जाता है तो उसके संसार के दुःखों का अन्त हो जाता है। उसकी भव परंपरा का अन्त होने लगता है। व्यक्ति में अध्यात्म का सूर्य उदित होने लगता है।

पर्युषण पर्व का प्राण है क्षमा। इस पर्व में हमें क्षमा को ही धारण करना हैं, क्षमा की ही उपासना करनी है, क्षमा की ही आराधना करनी है। मनुष्य जो पाप करता है उसका फल उसे भुगतना ही पडता है। यह प्रकृति का अटल नियम है। जैन धर्म ने इस पाप के फल से बचने का एक रास्ता खोजा है। क्षमा और प्रायश्चित का। आपसे पाप हो गया, जानकर भी हो सकता है, अनजान में भी हो सकता है। तो उस पाप के लिए आप क्षमा माग लें। क्षमा मागकर उसका प्रायश्चित कर लें। क्षमा मागने का अर्थ है आपने उस पाप को स्वीकार कर लिया है। पाप की स्वीकृति और पाप के लिए पश्चाताप आपको उस पाप से मुक्ति दे सकता है। क्षमा माग लेने से और प्रायश्चित कर लेने में आप पाप से बच सकते हैं। यही उपाय है पाप के फल से बचने का अन्य कोई उपाय नहीं।

पर्युषण पर्व में सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करने का विधान है। संवत्सरी के दिन हम वर्ष भर में हो गए पापों का प्रायश्चित करते हैं। इस के लिए चोरासी लाख जीव योनियों से क्षमा याचना करते हैं। क्षमा याचना में हमारा हृदय और मन निर्मल बन जाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसका व्यवहार एक दूसरे के सहयोग मे चलता है। अनेक व्यक्ति मिलकर समाज बनता है। समाज के बीच रहकर जीने का आनंद तभी आता है जब हमारी सबसे मित्रता होती है।

पर्युषण महापर्व का संदेश है अपने दूषित मनो भावों को परिमार्जित कर मन को स्वच्छ नीर की तरह निर्मल बना लो। यदि किसी से झगडा, मन मुटाव, बोल-चाल बंद है उससे जाकर क्षमा माग लो। और अपनी मित्रता पुनः स्थापित कर लो।

दिल की बोतल में हो करुणा का इत्र,
सकल जीवों को बनाए अपना मित्र।
साधक, दुनियाँ के देवल में देखो
वही जीव हकीकत में है, पवित्र॥

श्री अरिहन्त पद की महिमा

आचार्यश्रीसुशील सूरीश्वरजी म. साहब

श्री अरिहन्त प्रभु की महिमा में 'द्रव्य-संग्रह' में यह प्रशस्ति है :

णट्ठचदुघाइकम्मो, दंसणसुहणाणवीरियमईओ ।
सुहदेहत्थो अप्पा, सुद्धो अरिहो विचिन्तिज्जो ॥

(वे अरिहन्त, जिनके चारों घातिकर्म नष्ट हो चुके हैं, जो अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्तज्ञान और अनन्तवीर्य के अधिकारी हैं, वे शुभदेहधारी हैं और वे ही शुद्ध हैं। उनका चिन्तवन (ध्यान) करना चाहिए।

निश्चय नय के अनुसार अरिहन्त प्रभु अशरीरी हैं; व्यवहार नय के अनुसार इनका शरीर अति पवित्र, सप्तधातु रहित तथा सहस्र सूर्यों की कांति के समान दीप्तिमान होता है। इन्हें भूख, प्यास, भय, द्वेष, राग, मोह, चिन्ता, जरा, रोग, मृत्यु, खेद, स्वेद, मद, अरति, विस्मय, जन्म, निद्रा और विषाद—इन अठारह दोषों में से कोई स्पर्श नहीं कर सकता। अर्हन् वीतराग, अनिरुद्ध और निरंजन हैं।

इनसे अज्ञान, हिंसा, झूठ, चोरी, निद्रा, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, ईर्ष्या, दम्भ, शंका और राग—इन अठारह दोषों में से एक भी दोष न रहने पाता। अर्हन् प्रभु वीतराग, अनिरुद्ध एवं निरंजन हैं।

दुःखों के भार-भार को हटाने के लिए, मनुष्यों के [illegible] को मिटाने के लिए, कल्प-कल्प में तीर्थंकर अरिहन्त प्रभु जन्म लेते हैं। जब ये माता के गर्भ में आते हैं तो माताएँ शुभ स्वप्न देखती हैं। तीर्थंकरों के च्यवन और जन्माभिषेक के समय एवं दीक्षा, केवलज्ञान-प्राप्ति और निर्वाण के समय इन्द्रादि देवसमूह इनकी वन्दना करने और महोत्सव मनाने आते हैं। इस प्रकार की पंच महाकल्याण रूप पूजा (अर्हा) प्राप्त होने से तीर्थंकर 'अर्हन्' भी कहलाते हैं।

राग-द्वेषादि प्रचण्ड शत्रुओं का समूल नाश करने के कारण तीर्थंकर भगवान अरिहन्त भी कहलाते हैं।

अरिहन्त भगवान बारह दिव्यगुणों से विभूषित होकर अपने ज्ञान के प्रकाश से जगत् का अन्धकार दूर करते हैं; समस्त जीवों का कल्याण करते हैं। प्रभु के बारह गुणों में आठ प्रातिहार्य अर्थात् दिव्य वैभव हैं और चार अतिशयताएँ हैं। प्रातिहार्य का तात्पर्य है—अद्भुतता।

आठ प्रातिहार्यों की [illegible]

प्रतीक है। शुद्ध चैतन्यस्वरूप समस्त प्राणियो के स्वर्णसिंहासन पर आनन्दघन जिनेश्वर प्रभु विराजमान हैं। 6 भगवान के चारो ओर जगमगाता भामण्डल उनके अनन्तज्ञान अर्थात् केवलज्ञान की शुभ्र प्रभा है। 7 प्रभु-दर्शन मे षट्काय जीव-सृष्टि के अन्तर मे आनन्द-सगीत गूंजता है, यही देव-दुन्दुभि का जयघोष है। 8 मस्तक पर तीन छत्र है—सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन एव सम्यक् चारित्र के।

चार अतिशयताएँ—1 ज्ञानातिशय है—लोकालोक-प्रकाशक केवलज्ञान। 2 पूजातिशय है—तीनो जगत् के जीव उनको पूजते है। 3 वचनातिशय है-तीर्थंकरो का उपदेश सबको रुचिकर होता है, सबकी समझ मे आता है और सबके लिए कल्याणकारी होता है। 4 अपायापगमातिशय का तात्पर्य है—विघ्ननाशक अतिशय। अनन्त पुण्य के प्रताप से एव समस्त जीवो को तारने की उत्कृष्ट भावना के कारण भगवान जहाँ विचरते है वहाँ दुष्काल, रोग उपद्रव आदि दूर हो जाते है। वहा सुख शान्ति का नित्य वास रहता है। यही है अपायापगमातिशय।

आठ प्रातिहार्य एव चार अतिशय मिलकर अरिहन्त भगवान बारह दिव्य गुणो के धारी होते हैं।

प्रभुजी का समवसरण—देवाधिदेव अरिहन्त प्रभु की उपदेश भूमि समवसरण कहलाती है। वहा पर अशोक वृक्ष की शीतल छाया रहती है। समवसरण मे प्रभु रत्नमय सिंहासन पर विराजमान होकर मधुरतम मालकोश राग मे उपदेश देते हैं। देवता भक्तिवश उसमे बासुरी से दिव्यध्वनि का स्वर भरते है।

भगवान की दिव्यवाणी की तुलना अमृत से की जाती है। जिस प्रकार मेघो द्वारा बरसाया हुआ जल पहले एक ही रूप मे रहता है और पात्रभेद से अनेक नाम, रूप एव रग मे बदल जाता है, उसी तरह प्रभु की दिव्य-वाणी एकरूप होते हुए भी बाद मे विभिन्न देशो मे उत्पन्न मनुष्यो, देवो एव पशु-पक्षियो की विभिन्न भाषाओ और बोलियो मे रूपान्तरित होकर उनके अन्तर मे अमृत के समान रमण करती है। फलस्वरूप उनके समस्त सन्देह दूर हो जाते है। यही है वचनातिशयता अर्थात् प्रभुवाणी का चमत्कार।

गगन मे देवदुन्दुभि बजती है। इसे श्रवण कर भव्य जीव समवसरण मे आकर तारणहार प्रभु के वाणी रूपी पीयूष का पान करते हैं। समवसरण का वातावरण सगीतमय एव शान्त होता है। सभी प्राणी प्रभु का वचनामृत मत्रमुग्ध होकर पीते हैं।

ये अष्ट प्रातिहार्य इन्द्रादि देवताओ द्वारा भक्तिवश रचे जाते है जो तीर्थंकरो के सर्वोत्कृष्ट एव अनन्त पुण्य के द्योतक होते हैं।

अरिहन्त प्रभु की सर्वोत्कृष्टता—अरिहन्त प्रभु अर्थात् तीर्थंकर भगवान जन्म से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञानधारी होते हैं। इनका शरीर जन्म से ही अपूर्व कान्तिमान होता है। जिस प्रकार पुष्प से पराग उडता है उसी प्रकार भगवान तीर्थंकर के शरीर से सुवास आती है। तीर्थंकर प्रभु के नि श्वास मे भी अत्यन्त माधुर्य और सौरभ होता है। उनके शरीर का रक्त, मास विशुद्ध तथा सफेद होता है। केवलज्ञान प्राप्त होने पर उनका उपदेश सुनने के लिए प्राणिमात्र उत्कठित हो जाते है। यह उपदेश सभा 'समवसरण' कहलाती है।

अर्हत् दिव्य भामंडल से विभूषित होते हैं। जहाँ-जहाँ वे विचरण करते हैं वहाँ रोग, वैर, दुर्विपाक, महामारी अतिवृष्टि, दुर्भिक्ष और राज-अत्याचार आदि नहीं होते। तीर्थंकर भगवान के आगमन के साथ ही देश में सर्वत्र शान्ति, ऐश्वर्य और सद्भाव विराजमान हो जाता है। तीर्थंकर प्रभु के आगे एक धर्मचक्र चलता है। उनके दृष्टिपात मात्र से चारों दिशाओं के प्राणी यह अनुभव करने लगते हैं मानों वे भगवान के सामने ही बैठे हों। वृक्ष भी उनको नमन करते हैं। चारों ओर दिव्य दुन्दुभि-नाद सुनाई देता है। इन्हें मार्ग में जाते हुए कोई अन्तराय नहीं होता। उनके आसपास शीतल मन्द सुगन्धित पवन चलता है। पक्षी उनके आसपास कल्लोल करते हैं। देव इन पर पुष्पवर्षा करते हैं। सुगन्धमय वर्षा से धरती भी सुशीतल रहती है। उनके केश और नख नहीं बढ़ते देव सदैव उनकी आज्ञा में उपस्थित रहते हैं। ऋतु भी सदैव अनुकूल रहती है। समवसरण में क्रमशः तीन गढ़ रहते हैं। उनके चरणस्पर्श से सुवर्ण-कमल विकसित होते हैं। चामर, रत्नासन, तीन आतपत्र (छत्र), मणिमण्डित पताका और दिव्य अशोकवृक्ष उनके साथ ही रहते हैं।

त्रैलोक्यस्वामी करुणासागर जगत्तारक देवाधिदेव अरिहन्त प्रभु की भक्ति से सब प्रकार का कल्याण होता है।

> चिन्तामणिस्तस्य जिनेश ! पाणौ
> कल्पद्रुमस्तस्य गृहाङ्गणस्थः ।
> नमस्कृतो येन सदाऽपि भक्त्या ।
> स्तोत्रैः स्तुतो दामभिरर्चितोऽसि ॥29॥
>
> — श्री कुमारपाल भूपालविरचित
> साधारण जिनस्तवन ।

(हे जिनेश्वर ! जिसने भक्तिपूर्वक सदा आपको नमस्कार किया है; स्तवन से आपकी स्तुति की है एवं पुष्पमालाओं से पूजा की है, उसके हाथ में चिन्तामणिरत्न प्राप्त हुआ है और उसके घर के आँगन में कल्पवृक्ष उगा है।)

पवित्र तन और पवित्र मन रूपी मन्दिर में जो भगवान को विराजमान करता है, वह शाश्वत सुख को प्राप्त करता है।

> शुभध्याननीरैरुरीकृत्य शौचं,
> सदाचारदिव्यांशुकैर्भूषितांगाः ।
> बुधाः केचिदर्हन्ति यं देहगेहे,
> स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥29॥

(कोई पंडितजन शुभ ध्यान रूपी जल से पवित्र होकर एवं सदाचार रूपी दिव्य वस्त्रों से शरीर को अलंकृत कर निज देह-देवालय में भगवान के स्वरूप की पूजा करते हैं; जिनेन्द्रप्रभु की भक्ति में मेरी भी ऐसी ही गति हो, अनुरक्ति हो।)

श्री जिनेन्द्रदेव की अनन्त महिमा में कलिकालसर्वज्ञ भगवान हेमचन्द्राचार्य कहते हैं :

> निरीक्षितुं रूपलक्ष्मीं, सहस्राक्षोऽपि न क्षमः ।
> स्वामिन् ! सहस्रजिह्वोऽपि शक्तो वक्तुं न
> ते गुणान् ।
>
> —श्री वीतराग स्तोत्र

(हे स्वामिन् ! हजारों नेत्र वाले इन्द्र आपकी रूपलक्ष्मी देखने में असमर्थ हैं और न सहस्र जीभ वाला शेषनाग भी आपके गुण कहने में समर्थ है।)

●●

मौत के बिछौने से—एक दर्दी का आत्म संवेदन

संकलनकर्ता—आचार्य श्रीराजयशसूरिश्वरजी

सबसे पहले आदमी शराब की शुरूआत बीयर से करता है। दोस्तो की पार्टी मे एक ग्लास पीता है, फिर आकृष्ट होने पर दूसरा ग्लास भी पी जाता है। दूसरा ग्लास पूरा हो उसके बाद तीसरा ग्लास भी पी जाता है।

अब यहा से दुर्दशा की शुरुआत होती है इस वक्त आदमी को ऐसा नशा हो जाता है कि दुनिया बहुत अच्छी लगती है। उसको ऐसा लगता है कि इतना पीने से कैसा अच्छा लगता है। कैसा जोश आता है। सत्य का उनको दर्शन होता है। अब ऐसी परिस्थिति पैदा होती है जिसे वो खुद सोच भी नही सकता। फिर भी पेट मे गई हुई शराब आल्कोहल बनके दिमाग मे जाकर घूमती है। खुद का दिमाग अब शून्य होता हो ऐसा महसूस होता है। वही साथ मे बैठे हुए दोस्त जो लम्बे समय से शराब को पीते हैं वो लोग उसको ऐसा बोलते है कि डेढ बोतल बीयर मे क्या पिया एक बार पेशाब करने से ही निकल जाती है और खुशी चली आती है ऐसा बोल के वो लोग व्हिस्की जो असलियत मे शराब का एक पेग (भाग) उसके ग्लास मे डालकर पीने के लिए मजबूर करते है।

बस पीने के बाद वो आदमी की स्थिति देखते है। वो बेहोश सा हो जाता है। वासना का तांडव उसके दिमाग पर सवार होने लगता है। सही और गलत भूल जाता है। दिमाग उसके बस मे नही रहता और आल्कोहोल अपना हक्क जमा लेता है।

दिमाग के ज्ञान तन्तु मर जाने से दिमाग मे शून्यवकाश पैदा होता है। दिमाग मे खून के साथ आल्कोहिल मिश्रित हो जाने से दिमाग काम करना बन्द कर देता है। उसके बाद थोडा सा खाना खाके या खाये बिना ही सो जाता है।

दूसरे दिन सुबह मे उठता है तो उसको ताजगी का अनुभव होता है। वह अब ऐसा सोचने लगता है कि कब रात हो और पीने की शुरुआत करे अब वो बीयर को छोडकर शराब पीना चालू कर देता है। इस तरह से वह उसका आदी हो जाता है।

अब उसको समाज मे छिपे हुए अच्छे पागल आदमी बिन मागी हुई सलाह देते हैं कि भाई हर रोज शराब पीना है तो उसके साथ मे अण्डे खाने चाहिए तब नुकसान नही करती और शराब पीने के बाद हफ्ते मे कम से कम तीन बार मटन या चिकन खाना चाहिए। जो वह ऐसा नही करता तो उसको शराब पीने का कोई अधिकार नही है। क्योंकि मटन या चिकन शराब को खा जाते है। दाल भात खाने से जल्दी ऊपर चले जाएगे। क्या गरीब देश मे इतने भैसे मास या अण्डे खाने अच्छे हैं।

दूसरे आदमी उसको ऐसा बोलते है कि यदि तुमको विश्वास नही तो एक गिलास शराब के अन्दर मास के तीन टुकडे डाल कर देखो वह उसको खा जाएगा। इस बात की उस भाई पर ऐसी असर होती है कि शराब के

साथ मांस भी खाने लगता है और साथ में सिगरेट भी चालू कर देता है।

इस तरह से एक साथ तीन-तीन वस्तु जैसे के अंडे जो पेट में भयंकर दर्द पैदा करते हैं। रोगीष्ट प्राणीओ का मांस और सिगरेट जिसका निकोटीन जहर ये तीन-तीन जहर वो अपने पेट में डालता है। शुरु में उसको मांसाहारी खुराक जमता नहीं है लेकिन उसमें बनने वाला रसा को मसाले से भरपूर होता है वो मांसाकी दुर्गंध भूला देता है। यदि वो नशे की हालत में नहीं हो तब मांस का टूकड़ा मूंह के अंदर रखने की हिमत भी नहीं करेगा, क्योंकि जन्म के समय से जो शाकाहारी होता है वह ऐसी वस्तुओं का आदि नहीं होता।

अब वो आदमी तीन व्यसन का भोगी बनता है। शराब के साथ सिगरेट मांस और अंडे उसका नतीजा ये हुआ कि उसका स्वभाव तामसी हो जाता है।

अब यह आदमी समाज की दृष्टि से नीच हो जाता है। घर के सब लोग अक्सर उसको चेतावनी देते है लेकिन वह उनको सुनता नहीं है क्योंकि अब उसको घर के कंकाश से ज्यादा शराब का शांत नशा उसको अच्छा लगता है। क्या ज्यादा कंकाश ही किसी को शराब पीने के लिए मजबूर तो नहीं करता? अब वह जहां काम करता है वहां और उसके सगे संबंधी की तरफ से उसको समझाने के लिए बहुत कोशिश करते है कि भाई ये सब छोड़ दो नहीं तो अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठोगे। सब उसकी दोस्तों [illegible]

अब वो और संसार से विमुख हो जाता है। उसके अंदर नपुंसकता आ जाती है। वो अपनी बीवी के लिए नाकाबील बन जाता है। भर जवानी में बीवी का चरित्र शिथल करने में भी खुद जवाबदार ठहरता है।

शराब के ऐसे किस्से जो बिलकुल सच्चे होते हैं। हम लोग कितनी ही बार अखबारों में पढ़ते है। एक भाई की पत्नी शादी के दस साल बाद दूसरे के घर में रह रही है। ये बिलकुल सच्ची बात है। और ऐसे किस्से में हम देखे तो नव्वे प्रतिशत आदमी शराब का सेवन करते हुए मालूम होते हैं। हाल में युरोप के एक शराबी व्योपारी की बीवी खुद का अठारह वर्ष का पुत्र और सोलह साल की पुत्री के साथ अपने पति का घर त्याग कर दूसरे के साथ घर संसार शुरु कर दिया। देखा शराब का नशा। दूसरा किस्सा बम्बई का है। एक श्रीमंत व्योपारी की बीवी शादी के पांच साल बाद अपने व्यसनी पति को छोड़कर उसके कलाकार मित्र के साथ दूर जाकर घर बसा लिया। कारण शराब की आदत। शराब खुद ही तो व्यसन नहीं करती लेकिन संसार में भी आग लगा देती है। क्योंकि शराब का मूल स्वभाव ही विपरित है। इन लोगो के दोष दिखाकर मुझे किसी को नीचा नहीं दिखाना है।

सहज-स्वभाव का नाश करता है। थोड़े [illegible]

रोगो को दुनिया के कोई भी डॉक्टर या वैद्य मिटा नहीं सकता ।

अब इस भाई को शरीर मे तकलीफ ज्यादा होती हैं । उसकी पेट की बायी और भयकर पीडा होने लगती है । क्योंकि इस भाई की लीवर मे सूजन आ जाती है । उसको लीवर सिरोसीस का रोग लागू पड जाता है । उसको भूख लगती नही हैं । मुह मे से खून पडता है । आत मे चादे पड जाते है । इस रोग का इलाज इस दुनिया मे नही है। कोई भी मेडिकल सायन्स उसके लिए इलाज ढूढ नही पाई है ।

डॉक्टर उसको ऐसे ही लीवर टोनिक की गोलिया देते है, क्योंकि डॉक्टर खुद भी समझते हैं कि ये केस फेल हो चुका है । अब आराम करने का और मृत्यु की राह देखने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि सोफे-स्टीकेट समाज मे आज शराब और बीयर का व्यसन इतना बढ गया है कि नवयुवक उसको एक फैशन या अपनी प्रतिष्ठा खडी करने के लिए पार्टी मे पीने जाते है लेकिन ये ऐसे समय शराब आनद के लिए पीते हैं । फिर वो उस व्यसन का आदि हो हो जाता हैं । फिर वह मुक्त न हो पायेगा । इसलिए बियर या ड्रिन्क्स को हाथ लगाने से पहले सौ बार विचार कर लेना चाहिए । "यह दी गई दास्तान खुद मेरी है । दूसरा कोई नहा इस वक्त मे भाटीया हॉस्पिटल (आयल की) मे से ये मैसे लिखवा रहा हू । मेरा बचने का कोई चान्स नही है फिर भी जाते जाते मेरी आपको विनती है कि आप शराब से दूर रहोगे ऐसी मेरी सलाह आप सब मान्य रखोगे । क्योकि मैने दस वर्ष पहले एक ग्लास बीयर मे ही शुरु आत की थी । आज मे मौत के बहुत करीब आ गया हू, मेरी आपको मे विनती समझो तो विनती और चेतावनी समझो तो चेतावनी ।

ये घटना जिस व्यक्ति की जिदगी मे हो चुकी है उस व्यक्ति का 26 10 92 के रोज भाटिया हॉस्पिटल मे मौत हो गई ।

शराब के कारण –

(1) बी पी हायपरटेन्शन 'अटेक, अनीमीया आदि रोग उत्पन्न होता है ।

(2) खून मे लाल और सफेद कण का मात्रा कम होने से भारी रोग होने की सभावना हैं ।

जगत की सभी सभाओ ने मिलकर जीतने भी आदमी और अनेक सयामओ का विनाश नही किया होगा जितना शराब के व्यसन ने कीया हे ।

—मार्के ट्वईन

शराब सभी कु कर्म कराने वाला हैं और देह का नाश करता है । शराब पीने वाले के लिए कोई भी औषध असर नही कर सकता ।

—चरक सहिता

शराब की खाना खराबी और शराब बनाने । बेचने वालो की खुशहाली ये इतिहास प्रसिद्ध हकीकत है ।

—डोयर ल्योर्ड जीयोजे

□□

सुख की स्वाधीनता

० मुनि श्री नवीन चन्द्र विजयजी

जीवन स्थान, समय और व्यक्ति की योग्यता को पहचान सकेंगे तो जीवन में दूसरा कुछ भी पहचानने की आवश्यकता नहीं रहेगी। ऐसा काम हम न करें जिससे हमारा आनंद दूसरों की मुट्ठी में बंद रहे। हमारा सुख स्वाधीन होना चाहिए।

स्वतंत्रता और स्वाधीनता का मूल्य सभी समझते हैं। स्वाधीनता सबसे बड़ा सुख है और पराधीनता सबसे बड़ा दुःख। पिंजरे में बंद रहना कोई नहीं चाहता। जो कैद होता है वह रात–दिन मुक्ति के गीत गाता है।

सुख हमारी अनुभूति पर आधारित होता है। जो हमारे अनुकूल है वह सुख है और जो प्रतिकूल है वह दुःख। सुख-दुःख की यह छोटी सी व्याख्या है। अनुकूलता में आनन्द और प्रसन्नता। प्रतिकूलता में दुःख और वेदना। सुख और दुःख का मानदंड हमारी अनुकूलता-प्रतिकूलता है। जो शरीर और मन को न भाए वह दुःख है। ऐसे सुख और दुःख की आधारशीला हमारी मानसिकता है।

यह सुख और दुःख परिस्थितिजन्य है। इन परिस्थितियों को हम जिस नजर से देखते हैं यह हमारी समझ और ज्ञान पर निर्भर है। [illegible] परिस्थिति में। इस स्थिति में सकारात्मक और नकारात्मक विचार अहम् भूमिका निभाते हैं। दुःख के समय हमारा दृष्टिकोण यदि सकारात्मक है तो दुःख हमें दुःखी नहीं कर सकता। यदि सुख में भी हमारा दृष्टिकोण नकारात्मक है तो वह सुख भी हमें सुखी नहीं कर सकता।

व्यक्ति की सभी उठा-पटक, क्रिया-कलाप दौड़-धूप और पुरुषार्थ का अन्तिम लक्ष्य सुख है। सारा विश्व सुख के पीछे भाग रहा है। अनादि काल से भाग रहा है और जब तक इस विश्व में प्राणीमात्र का अस्तित्व रहेगा तब तक वह सुख के पीछे भागता रहेगा। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक सुख ही सुख चाहता है। वह अनन्त सुख चाहता है। वह मरता भी है तो सुख की आकांक्षा लेकर मरता है। फिर भी उसका सुख एक मृग-तृष्णा बना रहता है। न चाहते हुए भी दुःख उसके द्वार पर आकर बिन बुलाए मेहमान की तरह आ धमकता है।

ऐसे में एक प्रश्न उपस्थित होता है कि [illegible]

इन सभी प्रश्नो के उत्तर हमे सुख की स्वाधीनता मे मिल जाते ह। सच्चा और वास्तविक सुख वह होता है जो अपने अधीन होता है। हमारा सुख यदि किसी व्यक्ति या वस्तु पर निभर हे तो वह सच्चा सुख नही है। ऐसा सुख मनुष्य को सच्चा सुख नही दे सकता। पराश्रित सुख-सुख नही है। यदि आप कानो से सगीत सुनकर सुख का अनुभव करते हैं तो इसका अर्थ है कि आपका सुख स्वाधीन नही है वह आपके कान पर निर्भर करता हैं। आपका सुख कानो पर आश्रित है। अचानक यदि आपके कान खराब हो जाते हे या आप बहरे हो जाते हैं तो आप दु खी बन जाएगे, क्योकि आपका सुख कानो पर निर्भर था जो खराब हो गया। यदि आप कार मे बैठकर सुखका अनुभव करते हें और एक दिन वह कार अचानक खराब हो जाते हैं तो आपको बहुत दु ख होगा। क्योकि आपका सुख उस कार पर निभर था। स्वस्थ और निरोगी काया मे आप अपने आपको सुखी अनुभव करते है, पर जैसे ही आपका शरीर रोगी होता ह, निर्बल या बूढा होता हे तो आपको दु ख होता है क्योकि आपका सुख आपके शरीर पर आश्रित था। आपका अपना सम्पूर्ण सुख यदि इस तरह किसी न किसी पर आश्रित है तो वह वास्तविक सुख नही है। वह क्षणिक है और आपको कभी भी दु ख के सागर मे डूबा सकता है। यह सुख आपके जितना स्वाधीन रहेगा आप उतने ही दु ख से बचे रहेंगे।

जैन धर्म की समस्त साधना सुख की स्वाधीन करने की है। यह साधना पथ मनुष्य को स्वाधीन–मुक्त और स्वतत्र बनाता है। अपने सुख के लिए इन्द्रियो के भी गुलाम मत बनो। इन्द्रियो से मिलने वाला सुख पराश्रित है वह कभी न कभी आपको धोखा देकर दु खी कर सकता है। आपका सुख इन्द्रियो की मुट्ठी मे बद नही होना चाहिए।

उपभोग की मर्यादा मे श्रावक जीवन का सूत्रपात है। यह उपभोग की मर्यादा, अपरिग्रह और निर्ममत्व सुख को स्वाधीन करने के सर्वोत्तम उपाय है। मनुष्य अपने सुख का स्रोत स्वय है।

धर्म भावना मे लाती है स्फूर्ति,
उपासना मे आलबन की होती है पूर्ति।
अरिहत प्रभु की कराती है स्मृति,
वदू सदा ऐसी वीतराग की मूर्ति॥

श्री कल्पसूत्र महाशास्त्र - एक परिशीलन

पू. आ. श्री विजय भुवनभानुसूरिजी के शिष्य मुनि भुवन सुन्दर विजय जी म.

(सम्पादक :—जैनियों के पर्युषण महापर्व में श्री कल्पसूत्र शास्त्र का पाठन, वाचन, श्रवण और मनन जैन लोग बड़ी श्रद्धा और भक्ति से करते हैं। प्रस्तुत लेख में श्री कल्पसूत्र शास्त्र के विषय में मुनिश्री ने सुन्दर प्रकाश दिया है।)

जैन धर्म अनादि कालिन- शाश्वत धर्म है। जो जीतते हैं उसे 'जिन' कहते है और 'जिन' के मानने—पूजने वालों को जैन कहा जाता है। अर्थात् अपने राग-द्वेष-काम-क्रोधादि दुश्मनों पर जिसने संपूर्ण विजय पा लिया है उसे 'जिन' कहा जाता है और जो व्यक्ति अपने राग-द्वेष-काम-क्रोधादि आंतर-शत्रुओं पर विजय पाने के लिए अरिहंत के आदेशानुसार आराधना—साधना करते हैं उसे जैन कहा जाता हैं। इस हिसाब से जैन यह विशेष कोई कौम या समाज का शब्द नहीं हैं, किन्तु वे सभी जैन है जो अपनी कामी-क्रोधी-रागी-द्वेषी आत्मा पर विजय पाने के लिए अरिहंत के आदेशानुसार प्रयत्न शील है। ऐसी व्यक्ति की जो प्रवृत्ति है उसे जैन धर्म के नाम से पुकारा जाता है। यह बात अलग है कि आज जैन धर्म एक कौम या समाज विशेष का धर्म माना जा रहा है।

जैन धर्म का प्रवर्तन कराने वाले तीर्थंकर हैं। प्रत्येक काल चक्र में 24-24 तीर्थंकर होते हैं। जैसे इस अवसर्पिणी नाम के काल में ऋषभदेव से लेकर महावीर भगवान तक 24 तीर्थंकर हुए। अनादि कालिन इस विश्व में काल चक्र में अनन्त तीर्थंकर हो चुके हैं। भविष्य काल में आगे भी अनन्त आत्माएं [illegible] साधना द्वारा तीर्थंकर होंगी और वर्तमान में इसी विश्व के अन्य स्थलों पर 20 तीर्थंकर विद्यमान हैं ऐसी जैन धर्म की मान्यता है।

जिसका पुण्य विशेष होता है वह विशिष्ट पुण्यवान् आत्मा को आत्म साधना के बाद कर्मक्षय होने से केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, उस केवलज्ञानी आत्मा धर्मतीर्थ की स्थापना करती है उसे तीर्थंकर कहते हैं। ये तीर्थंकर ही अपने उपदेश द्वारा साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका बनाते हैं, उसे चतुर्विध संघ या जैन संघ के नाम से जाना जाता है। भगवान तीर्थंकर सर्वप्रथम देशना केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद देते हैं, तब जिनकी आत्मा में सम्पूर्ण श्रुतज्ञान का प्रकाश-बोध उत्पन्न हो जाता है, उन्हें 'गणधर' कहे जाते हैं। जैसे महावीर भगवान को 11 गणधर थे। तीर्थंकरों अर्थ बताते हैं, इस विशाल अर्थ का संक्षिप्त में सूत्रों द्वारा सूचित करने वाले गणधर होते हैं। यानी तीर्थंकरों अर्थ का प्रकाशन करते हैं उसी अर्थ का गणधर सूत्र बनाकर संक्षिप्त करते हैं। इन सूत्रों की सम्पूर्ण रचना को द्वादशांगी (सम्पूर्ण जैन श्रुत साहित्य) अथवा 14 पूर्व के नाम से जाना जाता है।

14 पूर्व के नाम इस प्रकार हैं - (1) उत्पाद पूर्व (2) अग्रायणीय पूर्व (3) [illegible]

प्रवाद पूर्व (4) अस्ति प्रवाद पूर्व (5) ज्ञान प्रवाद पूर्व (6) सत्य प्रवाद पूर्व (7) आत्म प्रवाद पूर्व (8) कर्म प्रवाद पूर्व (9) प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व (10) विद्या प्रवाद पूर्व (11) कल्याण पूर्व (12) प्राणावाय पूर्व (13) क्रिया विशाल पूर्व (14) लोक बिन्दु सार पूर्व।

यद्यपि इतना ज्ञान का समुद्र कही भी लिखा गया नही है किन्तु अद्भुत बुद्धि के निधान मुनियो इसे कठस्थ रखते हैं और गुरु-शिष्य की परम्परा मे यह ज्ञान आगे आगे बढता रहता है। 1 हाथी के कद (वजन) प्रमाण स्याही का पावडर पहला पूर्व को लिखने मे दुगुना यानी दो हाथी प्रमाण स्याही लगेगी। तीसरे पूर्व को लिखने मे 4 हाथी प्रमाण स्याही चाहिए। इस प्रकार दुगुनी-दुगुनी सख्या करने से 14 पूर्व को लिखने मे लगता है। फिर दूसरा पूर्व का लिखने के लिए कुल 14,383 हाथी प्रमाण स्याही चाहिए। 14 पूर्व मे कितना ज्ञान का सागर समाया हुआ है, उसे समझाने के लिए हाथी के प्रमाण का यह दृष्टात दिया है। आज 14 पूर्व के ज्ञानी यहा विद्यमान नही है।

जैन धर्म मे वर्तमान काल मे 45 आगम विद्यमान हैं। 45 आगम शास्त्र मे—11 अग, 12 उपाग, 10 पयन्ना, 6 छेद सूत्र, 4 मूल सूत्र, 1 अनुयोग द्वार, 1 नदी सूत्र। विद्यमान ये सभी आगम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान की मूल वाणी है। ये सूत्रवाणी भगवान श्री महावीर स्वामी की अर्धमागधी (प्राकृत) भाषा मे है। पश्चाद्वर्ती विद्वान् आचार्यादि-मुनियो ने इन के ऊपर वृत्ति-चूर्णि-भाष्य-टीका आदि साहित्य की रचना की है, उन्हें 'पचागी आगम' मे जाना जाता है। बिना इनके सहारे मूल आगमो का बोध करना असम्भव है। जैन धर्म का इतना विशाल साहित्य है कि इसमे मे बाइबल, कुरान या गीता की तरह एक मान्य ग्रन्थ बनाना या एक को ही मान्य ग्रन्थ के रूप मे जानना यह अति असभवित बात है।

पूर्व मे जो 45 आगमो का उल्लेख किया, इसमे 6 छेद-सूत्र के नाम इस प्रकार है–(1) निशीथ सूत्र (2) दशाश्रुतस्कध सूत्र (3) कल्पसूत्र (4) व्यवहार सूत्र (5) जितकल्प सूत्र और (6) महा निशीथ सूत्र।

इनमे जो दशाश्रुत स्कध नाम का सूत्र है उसको भगवान श्री महावीर स्वामी की शिष्य-प्रशिष्य परम्परा मे, भगवान महावीर स्वामी से सातवी परम्परा मे, भगवान महावीर स्वामी के बाद 300 वर्ष पर हुए 14 पूर्व के ज्ञानी श्री भद्रबाहुस्वामी महाराज ने नौवें प्रत्याख्यान प्रवाद नाम के पूर्व मे से सकलन किया है। इस दशाश्रुतस्कध मे कुल 10 विभाग-अध्ययन हैं। इसमे से आठवें अध्ययन का नाम है—'पज्जुसणाकप्पो'। इसे पर्युषणा कल्प भी कहते हैं। कालान्तर मे इसकी 'कल्पसूत्र' के नाम से प्रसिद्धि हुई। यानी इस कल्पसूत्र शास्त्र की 14 पूर्व मे से सकलना आज से करीब 2200 साल पूर्व हुई है।

भगवान महावीर स्वामी के पश्चात् 980 वर्ष हुए तब जो शास्त्रपाठ मुहजबान-कठस्थ चल रहे थे उन्हे भगवान महावीर स्वामी की 27वी शिष्य-प्रशिष्य परम्परा मे आये श्री देवर्धिगणि क्षमाश्रमण नाम के आचार्य ने गुजरात के वल्लभीपुर नाम के नगर मे सभी जैन मुनियो को इकट्ठा कर तीन वर्ष की

मेहनत के बाद जैन आगम ग्रंथों को सौ प्रथम बार ताडपत्र पर लिखवाये। ऐसा ही सद्-कार्य श्री स्कंदिल सूरी नाम के आचार्य ने मथुरा नगरी में किया था। ये दोनों घटनाएँ जैनियों में वल्लभी वांचना और माथुरी वांचना के नामसे प्रसिद्ध है। यानी जैनधर्म मे शास्त्रों को लिखने-लिखवाने की प्रवृत्ति आजसे करीब 1500 वर्ष पूर्व आरंभ हुई थी।

श्री कल्पसूत्र शास्त्र में कुल 1215 सूत्र है, जिस से उसका दूसरा नाम बारसा सूत्र भी प्रसिद्ध हुआ है। कल्प का अर्थ है आचार-मर्यादा। इस शास्त्र में मुख्यतया जैन साधु-साध्वी के विषय में बात है। इसके साथ में 24 तीर्थंकरों के चरित्र, भगवान श्री महावीर स्वामी की शिष्य-प्रशिष्यादि परम्परा में हुए आचार्यों का इतिहास, उस उस काल की परिस्थिति आदि का वर्णन है। श्री ऋषभदेव नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी का इसमें सविस्तार वर्णन है। महावीर भगवान के पूर्व के 26 भवों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

सूत्र के प्रारम्भ में कल्पसूत्र शास्त्र की अपार महिमा का वर्णन किया है और श्रद्धा व भक्ति से इसे सुनने और आराधनेवालों को तीन, पांच या सात भव में संसार से पार होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है ऐसा बताया गया है।

आनुषांगिक रूप से इस कल्पसूत्र शास्त्र में अनेकानेक विषयों का खजाना भरा पड़ा है जैसे (1) गणधरों का भगवान महावीर के साथ परामर्श, परलोक, पंचभूत, पुण्य, पाप, देवलोक, नरक, मोक्ष, इत्यादि विषयों सम्बन्धित वाद और भगवान के द्वारा उनका तात्विक समाधान (2) परस्पर विरुद्ध वेदवाक्यों का भगवान के द्वारा निराकरण (3) नागकेतु, मेघकुमार, चंडकौषिक सर्प आदि के अनेक दृष्टांतों (4) कैसा समुदाय नाश होता है? औषधी कैसी लेनी चाहिए? इत्यादि नीति शास्त्र की बातें (5) इस विश्व में हुई 10 प्रकार की अनहोनी घटनाओं का वर्णन (3) गर्भपात के पाप का भयकर फल (7) सगर्भा-वस्था में माता को ध्यान से रखने योग्य सलाह (8) स्वप्न के प्रकार व उनके फलों का वर्णन (9) तीर्थंकरों का मेरुपर्वत पर देवों द्वारा किया जाता जन्माभिषेक महोत्सव (10) हस्तरेखा शास्त्र (11) रत्नों की जातियों के नाम (2) राजा की आयुधशाला का वर्णन (13) तैल मालिश के प्रकार (14) सामुद्रिक लक्षण शास्त्र (15) पूर्वजन्म संबंधित बातें इत्यादि।

श्री कल्पसूत्र शास्त्र में पर्युषण पर्व के पांच कर्तव्य बताये हैं (1) अमारि-अहिंसा (2) साधर्मिक भक्ति (3) परस्पर क्षमापना (4) अट्ठम (तीन उपवास) का तप और (5) चैत्य परिपाटी (मंदिर दर्शन)

सभी तीर्थंकरों की माता तीर्थंकर जब कुक्षि में आते है तब उनके प्रभाव से 14 स्वप्न देखती है, यथा (1) हाथी (2) वृषभ–बैल (3) सिंह (4) लक्ष्मी (5) फूलों की माला (6) चंद्र (7) सूर्य (8) ध्वज (9) पूर्णकलश (कुंभ) (10) पद्मसरोवर (11) रत्नाकर (समुद्र) (12) भवन विमान (13) रत्नों का ढेर (14) अग्नि की ज्वाला। यहां विशेष यह है कि–ऋषभदेव भगवान की माता मरुदेवी ने स्वप्न में प्रथम वृषभ को देखा था और महावीर भगवान की माता त्रिशला रानी ने स्वप्न में प्रथम सिंह को देखा था।

श्री कल्पसूत्र शास्त्र मे अष्टागनिमित्त शास्त्र के नाम इस प्रकार वताये है, (1) अगविधा (2) स्वप्न विधा (3) स्वर विधा (4) भौम (भूमि) विधा (5) व्यजन विद्या (6) लक्षण विद्या (7) उत्पात विद्या और (8) अतरिक्ष विद्या ।

और 12 महिना के नाम (1) अभिनदन (2) सुप्रतिष्ठ (3) विजय (4) प्रितिवर्धन (5) श्रेयान् (6) शिशिर (7) शोभन (8) हैमवान (9) वसत (10) कुसम सभव (11) निदाघ (12) वनविरोधी ।

तथा 15 दिन के नाम–(1) पूर्वागसिद्ध (2) मनोरम (3) मनोहर (4) यशोभद्र (5) यशोधर (6) सर्वकाम वृद्ध (7) इन्द्र (8) मुर्द्धाभिषिक्त (9) शोभन (10) धनजय (11) अर्थसिद्ध (12) अभिजात (13) अत्याशन (14) शतजय (15) अग्निवेश्म ।

एव 15 रात्रि के नाम–(1) उतमा (2) सुनक्षत्रा (3) इलापत्या (4) यशोधरा (5) सौमनसी (6) श्रीसम्भुता (7) विजया (8) वैजयन्ती (9) जयन्ता (10) अपराजिता (11) इच्छा (12) समाहारा (13) तेजा (14) अभितेजा (15) देवानदा ।

कल्पसूत्र शास्त्र मे 30 मुहूर्त के नाम इस प्रकार वताये हैं–(1) रौद्र (2) श्रेयान (3) मित्र (4) वायु (5) सुप्रीत (6) अभिचद्र (7) महेन्द्र (8) वलवान (9) व्रह्मा (10) वहुसत्य (11) इशान (12) इष्ट (13) भावितात्मा (14) वैश्रवण (15) वारुण (16) आनद (17) विजय (18) विजय सेन (19) प्रजापति (20) उपशम (21) गान्धर्व (22) अग्निवेश्य (23) शतवृषनी (24) आतपवान (25) ऋणवान् (26) अर्थवान् (27) भौम (28) ऋषभ (29) सर्वार्थसिद्ध (30) राक्षस ।

श्री कल्पसूत्र शास्त्र सहित सभी आगम ग्रथो मे इन चार प्रकार के अनुयोग का वर्णन होता है–(1) द्रव्यानुयोगआत्मादि द्रव्य पदार्थो का विशद वर्णन (2) गणितानुयोग समय,काल का माप,ऊचाई के माप, द्रोणादि तोल-माप, अतर के माप, कालचक्र आदि की गिनती (3) चरण करणानुयोग साधु साध्वी एव श्रावक-श्राविकाओ के आचार-मर्यादा का का वर्णन (4) धर्मकथानु योग दृष्टात, कथा उदाहरण आदि विषय ।

श्री कल्पसूत्र शास्त्र के कुल श्लोक १२१५ प्राकृत (अर्धमागधी) भाषा मे है । भाषा सरल वर्णनात्मक व प्रवाही है । इस पवित्र शास्त्र को जैन लोग सोना या चादी के अक्षरो मे लिखवाते है और वीच वीच मे एतद् विषयक चित्रो भी रखते हैं कल्पसूत्र की टीका-विवेचन सस्कृत भाषा मे है और सस्कृत विवेचन का भाषातर हिन्दी, गुजराती, अग्रेजी आदि अनेक भाषाओ मे हुआ है ।

पूर्व के काल मे इस शास्त्र को सुनने का अधिकार सिर्फ साधु-साध्वी को ही था व पढने का अधिकार योग की तपश्चर्या विधि करने वाले मुनियो को ही था। पढने का अधिकार तो आज भी योग किये हुए सुयोग्य मुनियो को ही है, किन्तु सुनने का अधिकार स्त्री–पुरुष सभी को मिला हुआ है । आज से करीव 1500 वर्ष पूर्व आनन्दपुर नगर के राजा ध्रुवसेन के युवराज पुत्र की यकायक मृत्यु हो जाने से पुत्रमृत्यु के शोक और दु ख निवारण हेतु राजा को समाधि मिले इसलिए

विद्यमान आचार्य ने उसे कल्पसूत्र शास्त्र सुनाने की इजाजत दी तब से श्री संघ में जाहिर में सभी के लिए कल्पसूत्र शास्त्र सुनाने का प्रारम्भ हुआ।

कल्पसूत्र शास्त्र की महिमा शास्त्रों में अनेक प्रकार से गायी गयी है। जैसे अरिहंत से बड़े कोई देव नहीं है, मोक्ष से बढ़कर ऊँचा कोई पद नहीं है. शत्रुंजय से बड़ा कोई तीर्थ नहीं है, उसी प्रकार कल्पसूत्र से बड़ा कोई श्रुत-आगम नहीं है। ऐसे पवित्र धर्म-ग्रंथ का श्रवण, मनन, निदिध्यासन आदि करके भव्यात्मा स्व-पर कल्याण साधें यही शुभ कामना।

साधना बनाती है सदा समृद्ध,
वासना कर देती है, नर को वृद्ध।
कषायिक भाव बढ़ाता है युद्ध,
ज्ञान ही इन्सान को बनाता है प्रबुद्ध ॥

× × × ×

काला बाल बन गया धोला,
वही बात कहते है, काम करो भोला।
रंग से धोला को करे काला,
बूढ़े को करना है, काम धर्मी भी काला ॥

कलियुग की भविष्यवाणी

—गणि मणिप्रभासागर जी म

'प्रभो ! आज मैंने रात्रि के अन्तिम प्रहर मे अत्यन्त स्पष्ट आठ स्वप्न देखे हैं । मैं उनके भाव और अर्थ नही समझ सका हूँ ! आपके श्रीमुख मे उनका अर्थ जानकर तृप्त बनूंगा देव !'

'देवानुप्रिय ! तुम्हारे ये स्वप्न भविष्य-काल की कटुता के परिचायक हैं । आने वाले समय की कठोरता के प्रतीक हे । एक वाक्य मे इसका सीधा-सा अर्थ है—अनागत काल का व्यक्ति क्रमश नि सत्व होकर धर्म के राजमार्ग से पतित होगा और अधर्माभिमुख होकर गिरता चला जायेगा ।'

यह सवाद चल रहा था भगवान् महावीर और राजा पुण्यपाल के बीच ।

'प्रभो ऐसा परिणाम श्रवणकर मै बहुत ही आत्त हुआ हूँ । मै अपने आपको अत्यन्त पुण्यशाली मान रहा हू आपके चरणो का सस्पर्श पाकर ! आपकी सानिध्यता मे मुझे जीवन मिला-जीवन का रहस्य मिला ! प्रभो! अनुग्रह कर फरमाये कि मैंने जो आठ स्वप्न देखे है उनका विशद अर्थ क्या होगा ?

जिज्ञासा श्रवण कर परमात्मा ने कैवल्य के आलोक मे राजा के देखे स्वप्न देखे । भविष्य-जगत् को निहारा ! होठ हिले और भविष्य वाणी मे गू थी स्वर लहरी बहने लगी ! शब्दो का अनवरत प्रवाह नया जानने की उत्सुकता भी पैदा कर रहा था तो समाधान की तृप्ति भी प्रदान कर रहा था !

'देवानुप्रिय ! तुमने देखा है पहले स्वप्न मे हाथी को ! वह हाथी उत्तम गजशाला छोडकर जीर्ण शीर्ण शाला के प्रति मोहासक्त हो गया है । यह स्वप्न श्रावको के भविष्य का पहला पन्ना है । धीरे-धीरे श्रावक वर्ग अपनी मर्यादा त्याग देगा । हाथी जैसे श्रावक हैं और गजशाला जैसा चारित्र भाव है, जीर्णशाला जैसा गृह वास है । श्रावक वर्ग शनै शनै गृहवास के प्रति विरक्ति के स्थान पर आसक्ति की बेडियो मे फँसता जावेगा । ससार के कीचड मे धँसता जायेगा । सयम के प्रति अरूचि होगी । कचन और कामिनी ही केन्द्र बन जायेंगे । और इनके लिये जीवन की बाजी लगाकर दौडने के लिये तत्पर बनेगा ।

राजन् ! तुमने बन्दर की कुचेष्टाओ को को दूसरे स्वप्न से निहारा है । परिणाम बडा ही गभीर दिखता है । बन्दर नि सत्व का प्रतीक है । यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि बन्दर जैसे सत्वहीन पुरुष साधु अथवा श्रावक धर्म स्वीकार तो कर लेगे कर परन्तु उनके प्रति वफादार नही होगे । बन्दर की तरह कुचेष्टा करके सयम के तेज को आभाहीन कर देगें । साधु तो बनेगे पर सयम मे शिथिलता आयेगी । श्रावक तो हो जायेगे पर श्रावकत्व का क ख ग भी उन्हे पता नही

होगा। धर्म को अपने सदाचरण के द्वारा सुरक्षित नहीं करेंगे किन्तु विकृत विचार धारा और धर्म हीन आचरणों के द्वारा धर्म को बदनाम करेंगे।

ओह ! ऐसा करके वे दुर्गति का उपार्जन करके अपनी आत्मा को दुःखों की गर्त में धकेल देंगे।

देवानुप्रिय ! यों गल गले मत बनो ! धीरज से सुनों ! हांलाकि जो होने वाला है ! मैं उसे पूर्णता के साथ नहीं सुना सकता ! अमावस्य के अंधकार की एक झलक मात्र दिखा रहा हूँ प्रभो ! मैं द्रवित हो गया हूँ ! यह सुनकर कि लोग जान बूझकर रत्न को छोड़कर कांच को तिजोरी में रखेंगे।

राजन् ! अब तुम अपने तीसरे स्वप्न का परिणाम सुनों ! कल्पवृक्ष को कटीली झाड़ियों ने अपने कब्जे में कर लिया है। यह स्वप्न सुनने में ही कितना पीड़ाकारक लग रहा है। कल्पवृक्ष जैसा है—धर्म और कंटीली झाड़ियां है—वेशधारी-शिथिलाचारी साधु और धर्म हीन पर धार्मिक होने का ठप्पा लगाये श्रावक ! ऐसे वेशधारी साधु व श्रावक धर्म को अपने कब्जे में लेकर मनचाही व्याख्या करेंगे। आगमों के वचनों बेनाप तोड़-फोड़ करेंगे। अपना-अपना गुट बनाने व बढ़ाने में [illegible] से माया और कपट का हथियार अपनायेंगे। अपने यश और कीर्ति के लिये [illegible] करने में भी संकोच का अनुभव नहीं करेंगे। [illegible] धर्म [illegible] ? देवानुप्रिय ! तुमने चौथा [illegible] [illegible]

छोड़कर किसी खाबोचिया में बहुत दिनों का जमा गंदा पानी पी रहा है ! बड़ी दुःख-दायी बात है। जानकर भी अनजान बनना ! आँखे होने पर भी अन्धा होना ! हां ! आने वाला समय ऐसा ही होगा ! साधु भी ऐसे ही होंगे ! श्रावक भी ऐसे ही होंगे। यह तो तुमने मेरी देशना में सुना ही होगा कि साधु की क्या मर्यादा है ? साधु कभी भी अकेला नहीं रह सकता। समुदाय में रहना अनिवार्य है परन्तु साधु कौए की तरह शुद्ध समुदाय का त्याग करके स्वतंत्र/स्वच्छंद होकर एकान्त विहारी बनेगे। श्रावक भी ऐसे स्वच्छंद एकल विहारी निष्कासितों की सेवा/पूजा में धर्म समझेंगे। शुद्ध मर्यादा का लोप करेगे। अपनी वाह वाही के लिए तंत्र, मंत्र, यंत्र का प्रयोग करेगे। अनेक प्रकार की पाप क्रियाएँ करेंगे। समुदाय में अन्य श्रमणों के साथ रहने में परतन्त्रता का अनुभव करेंगे और इस कारण लड़ झगड़ कर, एक दूसरे की नदियाँ बनाकर स्वतंत्र विचरण में आनंद का तप, जप, क्रिया सब दिखावटी हो जायेगी।

देवानुप्रिय ! पांचवा स्वप्न 'पर का मैली लंका डहार' की कहावत को चरितार्थ करने वाला परिणाम प्रकट करता है। सिर में अब में कीड़े पड़े देखे। सिर तो पराक्रम का स्थान है। सोना हो चाहे [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible]

वे जिन शासन अथवा निज चेतना के रागी नही बल्कि अपना नाम, यश आदि के ही आराधक होंगे। और अपने नाम की सिद्धि के लिये वे कुछ भी करने के लिये तैयार रहेंगे। धर्म-अधर्म शब्दो और शास्त्रो मे ही दिखाई देंगे।

राजन्! कमल तो तालाब मे ही उत्पन्न होता है। मगर उकरडे (घृणित कचरा) मे उगते हुए कमल को छट्टे स्वप्न मे देखा। यह प्रतीक बडा गहरा है। इसका अर्थ यह है कि आने वाले समय मे उच्च कुल का व्यक्ति भी निम्न स्तर के कार्य करेगा। धन कमाने के लिये वह क्रिया की उत्कृष्टता या निकृष्टता पर कोई विचार नही करेगा। साध्य उसका केवल पैसा होगा! मगर इस साध्य सिद्धि मे साधन-शुद्धि का कुछ भी विचार नही करेगा। आहार, विहार, आचरण आदि के विषय मे कुछ भी चिंतन नही करेगा। कुलाचार, धर्माचार सब औपचारिक हो जायेंगे।

देवानुप्रिय! बीज वही बोये जाते हैं जहा उपज अच्छी हो सके। खारी, पथरीली, ऊसर भूमि मे बोये जाने पर बीज निष्फल हो जाते हैं। समझदार व्यक्ति बीज बोने से पहले भूमि की उत्कृष्टता निहारता है। मगर सातवें स्वप्न मे तुमने ऊसर भूमि मे बीज-वपन देखा है। यह स्वप्न, पाचवें आरे की दान-प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। धनवान लोग दान तो करेंगे मगर पात्र-परीक्षा मे निष्फल हो जायग। सुपात्र-दान ही दान है। कुपात्र-दान अनेक अनर्थो को जन्म देता है। लेकिन नाम के मोह मे उलझकर पात्र-कुपात्र का विचार नही करेगा।

राजन्! 'समय की बलिहारी' का भाव प्रकट करता हुआ तुमने आठवा और अन्तिम सपना देखा। सोने के कलश मैले हो गये। बहुत विचारणीय है यह स्वप्न और उसका फल! सोने के कलश का अर्थ है-आत्मार्थी साधु! वे भी मैले हो जायेंगे अर्थात् व्रतो मे अतिचार का सेवन करगे। सपूर्ण शुद्ध साधुत्व के दर्शन दुर्लभ होंगे। आलस्य, प्रमाद मे समय बीतेगा! विकथा की प्रबलता दिखेगी। राजकथा, देश कथा, स्त्रीकथा और भक्त (भोजन) कथा मे ही मगन दिखाई देंगे। दृढ सकल्प के अभाव मे भाव सयम की अनुपस्थिति होगी। स्वाध्याय और ध्यान पक्ष की कमजोरी के कारण सयम च्युत होंगे। जो साथ क्षमा का उपदेश देंगे वे ही शासन के टुकडे करेंगे। साधना घटेगी और आडबर बढेगा। आगम-अभ्यास गौण हो जायेंगी। पद-लिप्सा बढेगी। योग्यता गौण हो जायगी।

परमात्मा भगवान् महावीर फरमाते रहे।

सारी सभा सुनती रही!

पुण्यपाल राजा थोडा विचलित जरूर हुआ पर भावि भाव कभी अन्यथा नही होता, सोचकर सतोष धारण किया। श्रोता यह सोचकर पुलकित बने कि हम महावीर के युग मे है। उस युग नही-जिसकी पीडाकारी विवेचना अभी अभी सुन रहे थे।

□□

'रात्रि भोजन त्याग के विषय में अमरसेन जयसेन की कथा'

—मुनि श्री नन्दीयश जी म.सा.

वत्स देश में छारापुर नगर में अमरसेन राजा चंद्रजसा पटराणी के साथ सब तरह से सुखी था । पर एक भी सन्तान नहीं था, उसका बड़ा दुःख था । एक बार उलटी शिक्षा पाये हुए अश्व से राजा अकेले जंगल में पहुंचा । थके हुए राजा ने डोरी ढीली छोड़ी । तुरन्त घोड़ा रुक गया । राजा नीचे उतरा । उसने पानी पिया और घोड़े को पिलाया । सामने से नागकुमार की देवी पहुंची । वह राजा पर मोहित होकर विनती करती है, मेरे साथ रमो । मुझे निराश मत करो । यदि आप मेरी बात मानोगे तो सुन्दर सन्तान दूंगी । यदि नहीं माना तो परेशान करूंगी ।

राजा ने कहा, पटरानी से अनेक दुःख पाये हैं, और मेरा नियम है परस्त्री मां-बहन समान है. मैं मनुष्य तू देवी, कैसे संयोग हो ? राजा नहीं माना देवी ने राजा को [illegible] । इतने में नागकुमार ने सब देखा । और [illegible] होकर प्रसन्न हुआ । और सन्तान [illegible] को कहा, देव दर्शन निष्फल नहीं जाता । [illegible]

है । (वहम) होने के बाद चिड़ियों ने कहा, यदि आप समय पर न आए तो रात्रि भोजन का पाप लगे । नहीं वह पाप कैसे लूं ? चीड़ा ने मना कर दिया ।

राजा यह सुनकर आश्चर्य में पड़ा, जाके मुनि को पूछा, भोजन में क्या पाप ? मुनि ने कहा मैं मेरा आयुष्य पूर्ण हो जाये तो भी सब दोष बोल नहीं सकता हूं । लेकिन बड़े-बड़े दोष कहता हूं । जो आगे है पर दिया है । अमरसेन राजा ने सुनकर रात्रि भोजन त्याग का नियम लिया । और पूछा चिड़ियों को कैसे मालूम कि, रात्रि भोजन में पाप है. मुनि ने कहा ये कुंथुनाथ भगवान इस वन में पधारे, तब समवसरण में मैंने प्रश्न पूछा । भगवान ने उत्तर दिया । चिड़ियों ने सुनकर इसका नियम लिया (ये मरकर मेरे पुत्र और पुत्रवधू होंगे । राजा प्रसन्न हुआ । मुनि को राजा नमन करके वापस आकर मुनि के मुख से सुनी सब बात कही ।) सुनकर बहुत लोगों ने रात्रि भोजन का त्याग किया ।

[illegible]

एक दिन राजा के गोद मे बालक जयकुमार था। पिता ने सहज भाव से की बात कही। सुनकर पुत्र मूछित हुआ। राजा-रानी चिंतित हुए। उपचार से अच्छा हुआ। पिता को पूछने पर पुत्र ने कहा कि आपकी बात सुनकर पूर्वभव देखा। राजकुमार ने रात्रि भोजन का त्याग किया। सात वर्ष की उमर मे उसको पाठशाला भेजा। थोडे समय मे 72 कला सीख गया। यौवनवय प्राप्त हुई।

वत्सदेश मे कमलापुरी नगरी मे वलिभद्र राजा और गुणसुन्दरी पट्टराणी है। और जयसेना नाम की कन्या है। एक दिन चिडा-चिटी चिटचिडाया चिउ और चिडिया को वृक्ष पर देखकर जाति-स्मरण हुआ। रात्रि भोजन के त्याग से मैं राजपुत्री वनी हूँ। पूर्वभव का पति मिलेगा? सखिओ ने कही तू प्रतिज्ञा कर जरुर मिलेगा। चार प्रतिज्ञा की (1) जो पूर्वभव कहे (2) रूप अदृष्ट करे। (3) वडे घोडे पर चढकर मडप मे आये (4) कच्चे सूतर के हिंडोले मे झूले। राजकुमारी को आनन्द हुआ अब दूसरा कोई मेरे से शादी नही करेगा। स्वयवर किया। अनेक देश के राजकुवर आये। वत्सदेश के धारातुर से अमरसन और जयसेन भी आये। जयसेन खेलने को वन मे गया।

वन मे वृक्ष की कुज मे चर्म लपेट के वैठे हुए एक सन्यासी को देखा। उसका विचित्र रूप था। कुमार ने विनय से पूछा-आपकी ऐसी विचित्र आकृति क्यो? मुझे आश्चर्य होता है। प्रश्न सुनकर योगी ने फिर से चर्म लपेटा तो वह अदृश्य हो गया। फिर से कुमार को आश्चर्य हुआ अरे? यह योगी? कहा गये? फिर से योगी ने चर्म को अग से दूर रखा तो एकदम तेज दिखने लगा। और सुन्दर शरीर वन गया। तव कुमार ने योगी से कहा। महात्मन् आपने यह क्या किया? योगी ने वताया यह चर्म का प्रभाव है कि, ओटने क्रूरूप, अदृश्य हो हो जाते और वापस छोड देने से सहज रूप प्राप्त हो जाता है। योगी को नमन कर कुमार वापस लौटा।

अब फिर से अन्यथा जयसेनकुमार घूमने को वन मे गया।

वहा एक अग्नि का कुण्ड देखा। उसके उपर वृक्ष मे एक ततु से बाधा हुआ सीसा रखा था। कुमार ने सिद्ध योगी को पूछा, यह क्या शुरु किया गया है। योगी ने कुमार से कहा जो मनुष्य 108 वार विद्या का जाप करके साहस से इस सीके पर वैठे और सन्तु लूट जाये तो आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करता है। और सन्तु न तूटे तो सिद्ध कहा जाता है। यदि गभरा गया तो कुड मे गिरता है। मैंने सीका वनाया। सव सामग्री लगायी, मगर मत्र का पद भूल गया, इस-लिये कार्य सिद्ध नही होता है।

तब कुमार ने कहा तुम विद्या बोलो। मेरे पास पदानुसरिणी लब्धि है। जिससे मैं कोई भी पद सुनकर वाकी के पद जोड सकता हूँ। योगी विद्या बोला। कुमार ने तुरन्त विद्या पूर्ण की। योगी ने भी कुमार को चर्म दिया। और विद्या सिद्ध करने को कहा। कुमार ने कहा पहले तुम सिद्ध करो पीछे मे करूगा। योगी ने सिद्धि की और आकाश मे उड गया। फिर कुमार सीका पर वैठो। मगर सतू टूटा नही। इसीलिए ततुसिद्ध वना। चर्म लेकर वापस अपने स्थान पर पहुच गया।

रात को कुमार सोया। तब राजा अमरसेद जाग गये । और सियाल की आवाज सुना और उसकी भाषा समझ गया । एक मनुष्य को सियाल भक्ष्य बना रहा । इसलिए आक्रन्दन करता है । पुत्र जयसेन कुमार को अमरसेन राजा ने जगाया और कहा, 'बेटा, उपकार का काम करो । सियाल मनुष्य का भक्षण करेगा । उसको सियाल की आवाज की दिशा में खड्ग लेकर तड़प रहा जयसेन कुमार आगे बढ़ा । देखा एक आदमी तड़प रहा है । उसको पूछा तुम कौन हो ? वह बेचारा बोला मैं कुमार हूँ । एक योगी की सेवा करने से मुझे बहुत लक्ष्मी प्राप्त हुई । एक दिन वह योगी मेरे घर पर आया । मैंने खीर से उसकी भक्ति की । उसने खुश होकर कहा, मैं एक विद्या देता हूँ । सबको आश्चर्य होगा और तेरा मान बढ़ेगा । मिट्टी का एक घोड़ा बनाकर धूप में सुखाना । फिर अग्नि में पकाकर मंथित करने से वह घोड़ा चलने लगेगा । मैंने प्रयोग किया । तुरन्त घोड़ा चलने लगा । उससे जगत में मेरा नाम प्रसिद्ध हुआ । कितने दिनों के बाद में मंत्र भूल गया । योगी तो सिद्धाचल गया था । मैं उसके पीछे गया । फिर से मन्त्र पाठ किया और योगी को नमस्कार करके वापस यहां मैं आते-आते छः महिने बीत गये । कल ही मैं नगरी में आया । यहां पर राज्य कन्या की शादी हो रही है । बहुत से राजकुमार आये हुए हैं । मैंने सोचा घोड़ा को बनाकर मेरी कला दिखाऊँ । इसीलिये मैं माटी खोदने गये । माटी खोदते-खोदते तट गई मैं दब गया । कमर टूट गई । और बहुत ही वेदना हुई । अब मैं नहीं जी सकूँगा । क्योंकि मर्म प्रहार लगा । तुम दुःख दूर करने आये हो । धन्य हो तुमको । मैं तुझे अश्व विद्या देता हूँ । कुमार ने विद्या देकर प्राण छोड़े ।

दूसरे दिन सुबह मैं राजकुमारी पिता की आज्ञा से हाथों में वरमाला लेकर प्रातिहारिणी के साथ स्वयंवर मंडप में आ रही थी । सब राजकुमार उसका रूप देखकर सोये कि, ऐसी सुन्दर नारी जिनको मिलेगी वह धन्य-धन्य होगा । जिसने दान-पुण्य किया होगा वह इस कामिनी को प्राप्त करेगा । राजकुमारी तो आगे आई है । सखिओं ने राजकुमारी की प्रतिज्ञा घोषित की । यह सुनकर सब राजकुमार निस्तेज बन गये । एक दूसरों से कहने लगे यह तो कैसे बन सकता ? जब ऐसा ही था तो, सबको बुलाने से क्या ?

जयसेन कुमार तो यह प्रतिज्ञा सुनकर हर्षित हो गया । यह कला तो मुझे आती है जरूर चार प्रतिज्ञा में पूर्ण करूँगा । ऐसा सोचकर गुप्त उठकर कुमार ने उलटा चर्म ओढ लिया तुरन्त उनका रूप फिर गया । मिट्टी के घोड़े पर चढ़कर स्वयंवर मंडप में आया । सभाजन सब देखकर आश्चर्य चकित हो गये । टेढ़े-मेढ़े हाथ-पैर, न सिर का ठिकाना, वदरू आ रहा है । ऐसा रूप बनाकर मिट्टी के घोड़े पर बैठकर मंडप में घूम रहा है । लोग उसके पीछे आ रहे हैं । तुरन्त घोड़े पर से उतरकर मंत्र के सिंहासन पर शोभा पाने लगा । एक भी मंत्र कहा नहीं ।

कुंवर सौभाग्य ने पूछा, तेरा नाम क्या ? कुमार ने कहा मेरा नाम है । फिर सौभाग्य ने पूछा कैसे मनु के सिंहासन पर शोभा पाया । उसने कहा पूर्व से किसी और [illegible] से, यह बहुत सारा है ।

राजकुमारी यह सुनकर समझ गयी जरुर मेरा पूर्व जन्म का पति मिल गया। सखिओ से कहा, तब सखिओ ने कहा, इसके साथ शादी करने से कुल मे कलक लगेगा। यौवन नष्ट होगा, सब लोग हसेंगे।

वह वर तुझे योग्य नही ऐसा वचन सुनकर राजकुमारी ने कहा जो बोला हुआ पालन नही करें वह दोनो भव हार जाते। मैं तो मेरी प्रतिज्ञा पालूगी। ऐसा कहकर राजकुमारी ने धूव के गले मे वरमाला पहना दी। यह देखकर सब राजवी गुस्से मे आकर कहा, पकड लो, बाध लो बोलते हुए सामने आये। कोई तो कुमार को कहने लगे अरे, आयुष्य पूरे हुए बिना क्यो मरने को तैयार हुआ है? वरमाला दे दे, अकेला तू क्या करेगा?

तब कुमार ने कहा, कायर आदमी कितने भी हो इससे क्या? जैसे बहुत ही रुद्र हो मगर वायु के आगे क्या? यह कडक वचन वचन सुनकर सब मिलकर मारने गये। तब वह कुमार मरुर धतर देव हुआ था, वह आ पहुँचा। देव की शक्ति के आगे मानव की तो बात ही क्या? अनेक प्रकार के दैविक शस्त्रो से सबको जीत लिए और धूवज का नाम प्रसिद्ध हुआ।

राजकुमार का यशवाद होने से सबको आश्चर्य हुआ कि, अकेला आया था। तो सेना कैसे आयी। आती, जाती किसी ने भी नही देखी। तो क्या यह, तो कोई देव है, विद्याधर है, या योगीन्द्र?

अब अमरसेन राजा मन में सोच रहे कि, कितने देश के राजा मर गए। मगर इसका कोई मरा नही। तब उसी क्षण मे कुमार ने शरीर पर धारण किया चर्म उतारा तो जयसेन रूप प्रगट हुआ। अरे। बेटा यह विद्या तू कहा सीखा? इतना बडा युद्ध खेला तू तो साहसवीर है। कुमार ने पिताजी को नमस्कार किया। मेरा अविनय क्षमा करना। तब भेटकर पिता ने पूछा यह विद्या तुझे कहा मिली? कुमार ने सब बात सुनाई। पिताजी खुश हुए।

अब बलिभद्र राजा ने ठाठ से जयसेना की शादी जयसेनकुमार के साथ कर दी। और कन्यादान मे आधा राज्य भी दिया।

अब कुमार ने चर्म रत्न, मिट्टी का घोडा आदि लेकर प्रयाण किया। अविरत प्रयाण से धारा नगरी मे बडे ठाठ से प्रवेश कर माता पिता को नमस्कार किया।

अब पिता पुत्र पाच अनुव्रतो का पालन करते हुए नीति न्याय से राज्य पालन करते हैं। और कभी भी रात्रि भोजन नही करते। सात क्षेत्रो मे दान-पुण्य करते सुख मे रात-दिन पसार कर रहे हैं।

इस अवसर मे उधान मे गुणाकर सुरिजी म सा पधारे हैं। राजा। परिवार सहित वदन करने गये। विधिपूर्वक वदन किया। गुरु म ने धर्मलाभ आशीर्वाद दिया। सब विनयपूर्वक आगे बैठे। गुरु म ने धर्मोपदेश दिया। धर्मदेशना सुनकर अमरसेन राजा वैरागी बने और जयसेन कुमार को राज्य देकर ठाठमाठ से दीक्षा ग्रहण की। निरत्ति-चार पालन करके, अन्त मे अणसण करके मोक्ष मे गये।

जयसेन राजा भी पिता की तरह न्याय से राज्य पालन किया। राजा और जयसेना राणी कच्चे सेतूर की ततु की पालकी मे

बैठकर गांव में घूमे। राजा अदृश्य रूप करते थे मिट्टी के घोड़े पर घूमते थे सबको आश्चर्य होता था सब राजा उनकी आज्ञा मानते थे।

श्री कुंथुनाथ भगवान की कृपा से यह मिला। इसलिये रत्न की कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा बनवायी। दया, धर्म का पालन किया। भगवान की आज्ञा को मान्य किया है। भाव से गुरु को वंदन करता था। इस तरह गृहस्थ धर्म का पालन करके, अणसण स्वीकार के वैमानिक देव बना।

इस तरह अमरसेन और जयसेन की रात्रि भोजन का त्याग करके अपार सुख प्राप्त करा।

●●

तर्ज-आओ भाई तुम्हें......

—सुधीर पारख

आओ भाई तुम्हें दिखाये, गौरव जैन समाज का
अपना सा सबही को समझो, यह धर्म है इन्सान का
पशुओं की खातिर नेमी ने, राज सुखों को छोड़ा था
जा जंगल में ध्यान किया, राजुल से नाता तोड़ा था
ये सिद्धांत हमें बताते गौरव जैन समाज का

आओ भाई...............

अवधिज्ञान से पार्श्व प्रभू ने, कमठ योगी को हरा दिया
जलता नाग निकाल काष्ट, नवकार मंत्र से तार दिया
ये सिद्धांत हमें बताते गौरव जैन समाज का

देख इन्द्र की शंका वीरने, मेरु को कम्पाया था
वीर प्रभू के कानों में, ग्वाले ने कील लगाया था
ये सिद्धांत हमें बताते गौरव जैन समाज का

आओ भाई...............

जब हिन्दू सूर्य राणा प्रताप, मुगलों से युद्ध रचाया था
सौंप खजाना भामाशाह, भारत की शान बढ़ाया था
ये सिद्धांत हमें बताते गौरव जैन समाज का

विज्ञान और धर्म

—आचार्य वारिषेण सूरि महाराज

मन्दिर के बाजूवाला मकान मे चोरी हुई। चोर को पकडने को पुलिस का कुत्ता लाया गया। कुत्ता जमीन को सूघता हुआ चला जाता है। आश्चय हुआ, किसी को पूछा ये कसा महाराज ये विज्ञान की शोध है कुत्ता को सूघने से चोर का पाव हाथ जहाँ पडता है, लगता है वहा के परमाणु की जानकारी उनको हो जाती है

मुझे लगा जैनधर्म मे प्रभु वीर ने बगैर लैबोरेटरी कितना म न सशोधन करके दिखाया, पुरष के आ ा पर स्त्री, स्त्री के आसन पर पुरष बैठने स उनका विचार के परमाणु मे पाप के कृत्य विचार आता है। वैसा ही एक महत्व का परमाणु पुद्‌गलो का असर श्मशान, दवाखान कसाइखाने के पास से गुजरने वाले को अनुभ ोना है।

बामद के पास मे झोप ी मे सन्त आत्मा साधना करता था, क्या उनके मन मे हुआ कि एकाएक छुरा लेकर बहार निकले और बच्चो को, कुत्त को पकडो, काटो मारो का आवाज करने लगे। लोग घबरा गये क्या सत का दिमाग पागल बन गया ?

तलाश करने पर मालुम पडा गाय का दूध पीने के बाद विचार का परिवर्तन हुआ।

दूध तो रोज पीते थे आज के दूध मे विशेषना क्या थी—तो मालुम हुआ गाय ने जो घास खाया उस घास के खेत मे बूचडखाना कतलखाना था। वहा का काटो मारो पकडो का अशुद्ध परमाणु घास मे आया था। गायने खाया उनका दूध सन्त ने पीया असर सन्त को लगा वैसा ही है। टी वी का परमाणु आज घर घर मे गूजते है। "अण्डे खाओ ताकत बटाओ" "सन्डे या मन्डे रोज खाओ अन्डे" उनकी असर आपके भोजन मे व्यवहार मे नही आयेगी। थियेटर के पास जाने मे अशुद्ध परमाणु का असर होता है तो घर घर मे कला मन्दिर मे कितना पाप कुविचार बटेगे। जहा शराब मास, पान-पराग, व्यभिचार, बलात्कार का व्यवहार बिन मर्यादा असयम का दुराचार प्रचारित होता है वह भी परिवार के साथ बीबी बच्चो के साथ कितना भयमर पाप फैलाता है। क्या किसी ने सोचा।

डोगरे महाराज भोजन करने बैठे थे किसी यजमान के वहा, और बाहर से लडके ने आकर टी वी चालू कर दिया तो महा राज हाथ धोकर भोजन बन्द करके उठ गये।

यजमान प्रश्न करता है बाबा अभी भोजन बाकी है कुछ खाना बाकी है।

महाराज ने कहा मेरी थाली अशुद्ध हो गयी। अब खाना नही हो सकता है।

क्यों....... टी. वी. के परमाणु मेरी थाली में पड़ने से अशुद्ध हो गई....क्या आजकी महिलायें भोजन बनाने के वक्त भी टी.वी. का मोह छोड़ने की सोचेगी।

आज तो वैज्ञानिक संशोधन है कि टी वी. के सामने तोता को बिठाओं तो उनकी चोंच बुग बन जाता है। टी.वी. देखने वाली कुत्ती ने बच्चा को जन्म दिया तो वो अन्धी निकली।

टी. वी. के कारण अमेरिका में स्कूल के बालक भी कभी चोरी, बलात्कार, खून, का कार्य करते है।

एड्स जैसी भयंकर कष्टदायी बिमारी भी उनसे भारत मे बढ़ती जाती है। फिर शुद्ध परमाणु का वातावरण, मन्दिर मूर्ति त्याग तप दया दान पसद नही आता और देश में अशांति बढ़ाने वाले मोडर्न जमाने का दुर्व्यवहार बढ़ाया जाता है।

याद रखें टी वी. से दिमाग फ्रेश नही नेम होता है टाइम पास नही बल्कि नाश होता है। एक परसन्ट अच्छा हो तो भी 99% परसन्ट खराबी देश मे टी वी. करती है। बात इतना ही अच्छी है कि विभिन्न अच्छे संस्कार अच्छे साहित्य सत्सग से वातावरण शुद्ध होता है। "बिछा सके तो फूल बिछाना, शूल बिछाया मत करो। जमा सको अच्छे संस्कार जमाना, अन्धकार जमाना मत करो। स्वर्ग नरक और पुण्य, पाप मानना हमें मंजूर नहीं। यह भव मीठा तो परभव किसने देखा, इस लो खाना पीना मौज करने को मानव जन्म मिला है।

ऐसा सोचने वाले मोडर्न युग के लिये अमेरिका का प्रसिद्ध वैज्ञानिक [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] विश्वास [illegible] [illegible] नहीं आता।

हिप्नोटिसम के प्रयोग द्वारा केनन कोई भी व्यक्ति के मुख से अपनाया गया जन्म गति परिस्थिति का वर्णन व्यक्त कराता है।

एक व्यक्ति ने गत जन्म की तकलीफ कष्ट का वर्णन किया जिससे परमाधामि कृत नरक की वेदना का केवल वचनों का मिलान हो गया। क्यों नरक में जाना पड़ा तो उसके उमर में भयंकर बिन मर्यादा पाप स्थान का सेवन का ब्यान सुनाया।

दूसरे व्यक्ति न देवताई, वैभव, वहां का सुख सामग्री का वर्णन सुनाया। साथ में परोपकार दयावान का पुण्य कर्तव्य भी दिखाया। मानो या ना मानो सर्वज्ञ वचन सत्य है व सच्चा रहेगा।

जगदीशचंद्र बोस का वनस्पित में आत्मा शक्ति अनुभव का वर्णन ने वृक्ष को छह व्यक्ति के हाथ मे रहा हुआ कष्ट देने की क्रिया का लिखा हुआ पत्र से होता वृक्ष का कम्पन का वर्णन वृक्ष का अभयदान देने से सुख का अनुभव का ज्ञान का वर्णन पुण्य की बात विश्वास से माना जाता है। पानी मे जीव है उनका संशोधन विज्ञान यन्त्रो से करती है। प्रभु महावीर अइमुत्ता मुनि को क्यों पूर्व दिखाता है प्रायश्चित करवाता है। पश्चाताप से कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति तक यहां पाता है। महात्मा गांधी जी भी जैन धर्म का जीव विज्ञान का समझने से सभी लोग का पाणीका उपयोग विश्वास करना उनका भी नियम संयम मे विवेक रखते थे।

इसलिये जिनराज वचन पर विश्वास रखकर पीढ़ी से लेकर [illegible] [illegible] में कोई भी आत्मा को कष्ट न पहुँचाना।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्राप्त करें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

ज्ञान मार्ग के सोपान

—मुनिश्री रत्नसेन विजयश्री म० सा०

विवेकी बनो

यदि तीसरा नेत्र-विवेक चक्षु
अथवा ज्ञान चक्षु खुल जाय तो
विश्व के रगमच पर
होने वाली प्रत्येक घटना से
हम
सबक सीख सकते है
हमे अच्छी घटना को देख
उसमे से अच्छाई को
ग्रहण करना है और
बुरी घटना को देख
उसके बुरे परिणाम का विचार कर
उस बुराई से
सावधान रहना है ।
भूतकाल मे घटी घटनाओ का
केवल अधानुकरण
कभी नही करना चाहिए ।
कहा भी गया है कि
नकल मे भी अक्कल की
जरूरत है ।

विनयवान् बनो !

जेब ही यदि
फटी हुई है तो
उस जेब मे सिक्के नही रह सकते ।
बाल्टी ही यदि छिद्रवाली है तो
उसमें जल ठहर नही सकता ।
बस !
इसी प्रकार
अभिमानी व्यक्तियो के हृदय मे
ज्ञान टिक नही सकता ।
ज्ञान का फल तो
विनय-नम्रता है ।
जिस साधना से साध्य की प्राप्ति
न हो तो उस साधना का
अर्थ ही क्या है ?
यदि
ज्ञान-प्राप्ति के बाद
विनय के बजाय अभिमान आजाय
तो उस ज्ञान को सार्थक कैसे मान सकेंगे ?

पवित्र बनो !

सदैव होश में रहना, होश में जीना ।

भूल से भी

जीवन की ऊजली चादर पर

दाग न लग जाय, उसके लिए

सावधान रहना ।

अज्ञानता,

लापरवाही,

मित्रों की संगति से

व्यक्ति एसे कार्य कर बैठता हैं,

जिससे उसका जीवन

कलंकित हो जाता है ।

अत:

सदैव सावधान रहना ।

जीवन की पवित्रता को बनाए रखना ।

जीवन बहुमूल्य है ।

अपना जीवन

एक आदर्श रूप बनना चाहिए ।

पवित्र जीवन ही आदर्श जीवन है ।

कामांधता भयंकर !!

सुना है

कौआ रात्रि में नही देखता है

और

उल्लू दिन में नहीं देख पाता है ।

एक रात्रि में अंधा है तो,

दूसरा दिन में अंधा है ।

परन्तु आश्चर्य !

कामांध को तो न दिन में दीखता है

और न ही रात में दीखता है ।

कामांध को शर्म नहीं होती ।

कामान्ध व्यक्ति अपनी इज्जत नहीं देखता ।

कामान्ध व्यक्ति भयंकर भूल

कर बैठता है ।

काम-मुक्त न बन सको तो भी

कामान्ध तो भूल कर भी मत बनना ।

कामान्ध व्यक्ति

आँखें होने पर भी अन्धा होता है ।

ऐसे अंधत्व से सदा दूर रहना ।

वस्त्रों का सदुपयोग

मनुष्य को तन ढकने के लिए
वस्त्र की आवश्यकता रहती है,
क्योकि वह सामाजिक प्राणी है ।
वासनाओ के नियन्त्रण मे
वस्त्र का भी अमूल्य योगदान है ।
परन्तु हाँ,
वे वस्त्र ऐसे नही होने चाहिए
जो किसी को विकार ग्रस्त बना दे ।
नग्नता को ढकने के लिए
वस्त्र का उपयोग है,
न कि नग्नता के प्रदर्शन के लिए ।
वस्त्र
अपनी मर्यादा, वय एव
आर्थिक स्थिति के अनुरूप हो ।
व्यर्थ का दिखावा नही होना चाहिए ।
तन का रक्षण हो—
किन्तु प्रदर्शन नही
प्रदर्शन मे असुरक्षा है ।

शक्ति पर नियंत्रण जरूरी

आग जलाती भी है और
जीवन भी देती है ।
सवाल यही है कि वह
नियन्त्रित है या अनियन्त्रित ।
चूल्हे की आग नियन्त्रण मे है तो
रसोई पकाती है ।
गोदाम मे आग नियन्त्रण मे नही है तो
व्यक्ति को साफ कर देती है ।
तुझे प्राप्त शक्तियां भी
उस आग की भांति है ।
वे शक्तियाँ नियन्त्रित होगी तो
लाभ पहुँचाएगी,
अनियन्त्रित होगी तो
नुकसान पहुँचाएगी ।
शक्ति के नियन्त्रण मे लाभ है
अनियन्त्रण मे
भयकर खतरा है ।
अत जीवन मे मर्यादाओ का
निर्णय जरूरी है ।

आहार और वाणी में नियंत्रण जरूरी

ड्राइवर गाड़ी को कितना ही तेज
क्यों न चलाता हो
ब्रेक को अपने हाथ में रखता है ।
ब्रेक यदि कंट्रोल में है तो
गाड़ी सुरक्षित है ।
ब्रेक फैल हो गया है तो
गाड़ी असुरक्षित ही है ।
जीवन की गाड़ी कितनी ही तेज
क्यों न दौड़ रही हो–
उस पर नियन्त्रण
अत्यन्त ही जरूरी है ।
नियन्त्रण-रहित जीवन गाड़ी
कहीं भी दुर्घटना कर देगी ।
आहार-वाणी और जीवन व्यवहार सम्बन्धी
जो मर्यादाएँ बताई गई हैं,
उन मर्यादाओं के परिपालन में ही
जीवन का विकास एवं
उत्थान है ।

अश्लील साहित्य मत पढ़ो !

जीवन के वन मे भटक न जायं
इसके लिए
मार्ग दर्शक अनिवार्य है ।
सद्गुरु हमें जीवन की सही राह
बतलाते हैं ।
सद्गुरु न मिले तो
सद्गुरु के वचन अर्थात्
सत्साहित्य का आश्रय लेना ।
तुझे जीवन की सही दिशा मिल जाएगी ।
सत्साहित्य जीवन बनाते हैं,
अश्लील साहित्य
जीवन बिगाड़ते हैं ।
विष वृक्ष से भी
अश्लील साहित्य अधिक खतरनाक है ।
विषवृक्ष की छाया तो ठण्डी होती है,
अश्लील साहित्य की तो छाया भी खराब है,
उससे सदैव दूर रहना ।

वस्तु का सदुपयोग करो

ससार मे
स्वामित्व-नाम की कोई
चीज ही कहा है ।
व्यक्ति भले ही
महनत करके अथवा
अन्याय अनीति करके
भौतिक पदार्थों को
अपना वनाता हैं,
परन्तु
मृत्यु के साथ ही उसे
अपने स्वामित्व से
त्यागपत्र
दे देना पडता है ।
छोटी सी जिन्दगी मे
अल्पकालीन जो स्वामित्व
मिला है, उसमे
उन वस्तुओं का पूर्ण सदुपयोग
कर लेना चाहिये–इसी मे
वुद्धिमत्ता रही हुई है ।

मन साफ रखो !

कपडे पर दाग न लग जाय
उसके लिए तू कितनी सावधानी रखता है ।
क्योंकि
दाग वाले कपडो मे तुझे
अपना व्यक्तित्व पर्सनलिटी
खराव होती नजर आती है,
परन्तु
कभी तुमने अपने मन की चादर को
देखा है ?
वह कितनी मलीन है ?
उस पर कितने दाग लगे ?
उन दागो को धोने के लिए
तूने कभी प्रयास किया है ।
याद रखना
उजले कपडो से व्यक्ति
महान नही वनता है ।
महान तो
मन की पवित्रता और सत्कर्मो से
वनता है ।

—0—

भाई हो तो ऐसा हो

—मुनि श्री रत्नसेन विजयजी म०

विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का समय था। मंडलिकपुर (मांडल) के श्रेष्ठी आश-राज के चार पुत्र थे—'लुणिग मल्लदेव, वस्तुपाल और तेजपाल' वे चारों भाई बुद्धिमान थे किन्तु अभी लक्ष्मीदेवी उनसे रूठी हुई थी।

एक बार लुणिग आबु पर्वत की यात्रा के लिए गया। वहां उसने विमलशाह मन्त्री के द्वारा निर्मित 'विमलवसहि' मन्दिर के दर्शन किये। देवाधिदेव आदिनाथ प्रभु के दर्शन कर लुणिग का हृदय प्रसन्नता से भर आया। उसने मन्दिर की नयनाभिरम्य कलाकृति के भी साक्षात दर्शन किए।

मन्दिर की इस भव्यता को देख लुणिग ने मनोमन संकल्प किया कि यदि किस्मत ने साथ दे दिया तो मैं भी इनके समान जिनेश्वर भगवंत का श्रेष्ठ मन्दिर बंधाऊंगा अथवा कम से कम एक, छोटी-मोटी जिन प्रतिमा भराकर उसकी प्रतिष्ठा कराऊंगा।'

समय का प्रवाह आगे बढ़ने लगा। लुणिग अपने स्वप्न को साकार स्वरूप को जीवन में देखना चाहता था, परन्तु भाग्य ने उसे थोड़ा भी साथ नहीं दिया। भर जवानी में ही वह मृत्यु के किनारे पर आ गिरा।

परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि लुणिग के आरोग्योपचार की भी विकट समस्या थी। फिर भी वस्तुपाल आदि के हृदय में अपने ज्येष्ठ बन्धु के प्रति जो अपार स्नेह था, उसके फलस्वरूप वे जी जान से अपने भाई को बचाने के लिए प्रयत्नशील थे।

वस्तुपाल आदि अपने भाई को बचाने के लिए ज्यों ज्यों प्रयत्न करते त्यों त्यों उनके प्रयत्न निष्फल ही जाते। आरोग्य में सुधार होना तो दूर रहा, दिन प्रति दिन बिमारी बढ़ती ही गई। 'रोग बढ़ता ही गया-ज्यों ज्यों दवा की' की उक्ति के अनुसार वस्तुपाल आदि के सारे द्रव्योपचार निष्फल गए।

जब सारे द्रव्योपचार निष्फल सिद्ध होने लगे तब अवसर के ज्ञाता वस्तुपाल आदि ने अपने भाई के आत्म हित के लिए भावोपचार प्रारंभ किए। नमस्कार महामंत्र की धुन, अरिहंतादि की शरणागति के मंगल पाठ से सारा वातावरण गूंज उठा।

नवकार के ध्यान में एकाग्र बना लुणिग क्षण भर के लिए अपनी वेदना को भी भूल गया और इसी समय उसके मुख पर प्रसन्नता छा गई। परन्तु थोड़ी ही देर में वह प्रसन्नता गायब हो गई और लुणिग के मुख पर कुछ उदासीनता छा गई।

वस्तुपाल और तेजपाल अपने भाई के एकदम निकट ही बैठे हुए थे। [illegible] भाई

के उदास चेहरे को देख वस्तुपाल बोल उठा, 'बन्धुवर्य ! महान पुण्योदय से हमे वीतराग शासन मिला हैं अत वीतराग शासन के पुजारी को तो मृत्यु का प्रसग भी महोत्सव रूप ही होता है। अत इस वेला मे तेरे मुख पर प्रसन्नता के वजाय उदासीनता क्यो ?

हे वधुवर्य तेरे आत्म श्रेयार्थ मैं एक लाख नवकार मन्त्र का जाप करूँगा। इस वात को सुनते ही लुणिग का उत्साह बढ गया। 'बसुवर्य' क्या अभी भी तेरे दिल मे कुछ कहने की इच्छा है, जो हो सो कह दे--तेरी हर भावना को हम साकार रूप देने का प्रयत्न करेगे।

वस्तुपाल के इन शब्दो ने मल्हम पट्टी का काम किया। लुणिग का स्वास्थ्य बराबर नही था। कुछ बोलने की उसमे हिम्मत नही थी। फिर भी साहस वटोर कर वह कुछ कहने के लिए तैयार हुआ 'भाई । मेरी इच्छा ।'

भाई ! तू घवरा मत। तेरी जो इच्छा है। वह कह दे। हम जी जान की बाजी लगाकर भी तेरी भावना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न करेगे। जो हो सो कह दे।'

वस्तुपाल के इन शब्दो को सुनकर लुणिग का हृदय उत्साह से भर आया।

उसने अत्यन्त ही हिम्मत कर कहा, 'भाई ! आबू तीथ की यात्रा कर मैंने भी सकल्प किया था कि भाग्य ने साथ दिया तो मैं भी एक ऐसा जिन मन्दिर बनाऊँगा अथवा उस मन्दिर मे प्रभु जी की एक प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराऊँगा।

'भाई ! तू हताश मत बन। आज भले ही हिम्मत साथ नही दे रहा है, परन्तु रात के बाद दिन के नियमानुसार यदि भाग्य ने साथ दे दिया तो तेरी भावना को मूर्त-स्वरूप देने का मैं आज ही सकल्प करता हूँ। जी जान से मैं तेरी भावना को साकार करने का प्रयत्न करूँगा।'

अपने छोटे भाई के मुख से इस सकल्प को सुनकर लुणिग का हृदय गद्गद् हो गया। उसे अपना सकल्प साकार होते नजर आया और कुछ ही चद क्षणो मे नमस्कार महामत्र का स्मरण व श्रवण करते हुए उसने इस दुनिया मे से सदा सदा के लिए चिर विदाई ले ली। उसके प्राण पखेरू परलोक के लिए प्रयाण कर गए और उसका मृत देह वही पडा रह गया।

इस बात को वर्षो के वर्ष बीत गए। और एक दिन निर्धन कहलाने वाले वस्तुपाल और तेजपाल के जीवन मे अमूलचूल परिवर्तन आने लगा।

एक बार शत्रुजय तीर्थ की यात्रा के लिए जाते समय जब वे दोनो भाई अवशिष्ट धन को जमीन मे गाडने के लिए गए तब उसी भूमि मे से सोने का कुभ निकल पडा।

उस समय तेजपाल की पत्नी अनुपमा देवी ने कहा, 'धन को भूमि मे मत गाडो बल्कि उसे तो पर्वत के शिखर पर जगत के सामने रखो फिर उस धन को कोई लूट नही सकेगा।'

बस, अनुपमादेवी की इस अमूल्य प्रेरणा को प्राप्त कर वस्तुपाल-तेजपाल ने अर्बुद-गिरि पर नूतन-भव्य जिनालय बनाने का सकल्प किया।

शिल्प, सस्कृति और सौदर्य के त्रिवेणी सगम का शुभारम्भ हुआ। शोभनराज शिल्पी

के मार्ग दर्शन के अनुसार 500 शिल्पियों ने अपनी सर्जन यात्रा प्रारम्भ कर दी।

वस्तुपाल तेजपाल की उदारता में कोई कमी नहीं थी। परन्तु आबू पर्वत पर प्रचड ठंडी का जो प्रकृति का प्रकोप था, उसके बीच कार्य करना अत्यन्त ही कठिन था।

एक बार अनुपमा देवी जब नूतन मंदिर के नव निर्माण के कार्य की प्रगति को देखने लिए आबू पर्वत पर उपस्थित हुई, तब उसने देखा कि कार्य अत्यन्त ही धीमी गति से हो रहा है और इसी गति से कार्य चलता रहा तो शायद वे अपने जीवन के अन्त समय तक भी प्रभु प्रतिष्ठा महोत्सव के दर्शन नहीं कर पाएंगें।

तत्काल अनुपमा देवी ने शिल्पियों की वास्तविक समस्या को जानने का प्रयास किया और दूसरे ही दिन से उनकी समस्याओं का समाधान हो गया। प्रत्येक शिल्पी के पास ठंडी से बचने के लिए सिगड़ी की व्यवस्था कर दी गई और कार्य में वेग लाने के लिए शिल्पियों के लिए भोजन व्यवस्था भी हो गई।

बस, दूसरे ही दिन से कार्य में वेग आने लगा। शिल्पी लोग भी जी जान से काम करने लगे।

बराबर तीन वर्ष के सतत् परिश्रम के फलस्वरूप देलवाड़ा की पवित्र धरती पर नवीन देवालय का निर्माण हो पाया। इस मन्दिर के निर्माण में वस्तुपाल तेजपाल ने 53 लाख सुवर्ण मुद्राओं का व्यय किया और एक शुभ दिन वि. सं. 1287 फाल्गुण कृष्णा 3 के मंगल प्रभात में पू. आ. विजय सेन सूरीश्वर जी म. आदि सैंकड़ों श्रमण भगवंतों के सानिध्य में अत्यन्त ही भव्याति भव्य महोत्सव पूर्वक श्री नेमीनाथ प्रभु की पावन प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इस प्रतिष्ठा के महान प्रसंग पर वस्तुपाल तेजपाल अपने ज्येष्ठ बन्धु को दिए वचन को भूल नही गए....उन्होंने इस मन्दिर का नामकरण लुणिग वसहि रखा। जो आज भी 'भाई हो तो ऐसा हो' की पवित्र याद दिला रहा है।

कितना त्याग सका परनिन्दा, कितना अपना अन्तर देखा। कितना सुख पाया है अब तक, अपने पुण्य-पाप का लेखा? लोभ-मोह-मद कितना छोड़ा, नाना काम क्रोध से मोड़ा? विषय-वासनाओं से हटकर, कितना प्रेम प्रभु से जोड़ा?

"जैन दर्शन में अष्ट योग दृष्टि"

–साध्वी श्री देवेन्द्र श्री जी म०
"राजवाला"

मित्रा तारा वला दीप्राम्थिरा कान्ता प्रभा परा।
नामानि योगदृष्टिना लक्षण च निवोधत ॥
(योगदृष्टि समुच्चय)

दृष्टि दो प्रकार की होती है - 1 ओघ-दृष्टि और 2 योगदृष्टि। भवाभिनदी जीवो को 'ओघदृष्टि" होती है।

"योगदृष्टि" सम्यक्त्वो देशविरति और सवविरति महात्माओ को होती है।

जिस दृष्टि से श्रेष्ठतया श्रद्धा के साथ ज्ञान की प्राप्ति होती है, उसे "योगदृष्टि" कहते है। इस दृष्टि मे खराव प्रवृत्तिया सहजता से छूटती चली जाती ह और श्रष्ठ प्रवृत्तिया स्वत ही जीवन मे आ जाती हैं।

आठ दृष्टि के ये नाम हैं -मित्रा, तारा, वला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता प्रभा और परा।

- आठ दृष्टियो मे गुणस्थानक -

1 मित्रादृष्टि मे प्रथम गुणस्थानक होता है। दुर्भवी मिथ्यात्वी को यह दृष्टि नही होती ह। यथा प्रवृत्तिकरण वाले अर्थात् मिथ्यात्व के मन्द परिणाम वाले को यह दृष्टि होती है।

2 तारादृष्टि मे मिथ्यात्व तो है, मगर मित्रादृष्टि से मन्द है।

3 वलादृष्टि मे मिथ्यात्व तो है, किन्तु दृढता नही है।

4 दीप्रादृष्टि मे ग्रन्थी का भेद तो नही किया, परन्तु यह सत्सगी और सदाचारी है।

5–6 स्थिरा और कान्तादृष्टि मे ग्रन्थी भेद के वाद सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। इनमे चौथा, पाचवाँ और छट्ठा गुण-स्थानक होता है।

7- प्रभादृष्टि मे सातवा और आठवा गुण स्थानक होता है।

8 परादृष्टि मे आठ से लेकर चौदह गुणस्थानक होता है।

ज्ञान एक प्रकाश है, अत आठ दृष्टि मे पृथक्-पृथक् प्रकाश की उपमाए दी गई ह।

एक-एक दृष्टि के विकास के साथ-साथ एक-एक चित्त के दोष का नाश होता है और एक-एक गुण की प्राप्ति के साथ-साथ योगाग की सिद्धि भी होती है।

आठ दृष्टि का विवरण इस प्रकार है, और प्रत्येक दृष्टि मे चार विन्दुओ पर प्रकाश है –1 प्रकाश की उपमाए, 2 दोषनाश 3 गुण की प्राप्ति और 4 योगाग की सिद्धि।

1 मित्रादृष्टि

1 **प्रकाश की उपमा** –इस दृष्टि मे मनुष्य का तत्त्ववोध "घास की अग्नि" के समान ही होता है। आत्मा का वीर्य अल्प होता है, अत

उसकी स्मृति-शक्ति भी अल्प होती है, और ज्ञान मिलता जरूर है मगर. मिथ्यात्व (अज्ञान) से आच्छादित होता है ।

2. **दोषनाशः—"खेदनाश"**:—धर्मक्रिया में थकावट लगना अर्थात् मन की अस्थिरता । मन दृढ़ नहीं रहेगा तो सुन्दर आराधना कैसे होगी ? अतः व्यक्ति क्रिया कर नहीं सकता है । इस मित्रादृष्टि के खुलते ही खेद का नाश हो जाता है ।

3. **योगांग की प्राप्तिः**—मित्रा दृष्टि में पांच यम की प्राप्ति होती है । अहिंसा, असत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ।

4. **गुण की प्राप्तिः**—"अद्वेष गुण"—प्रथम दृष्टि पाने वाला व्यक्ति जैसे धर्म कार्य में थकता नहीं है वैसे ही जो व्यक्ति धर्म-आराधना नहीं करता है उनके ऊपर वह द्वेष भी नहीं करता है अर्थात् उनकी निन्दा भी नहीं करता । उसके हृदय में करुणा का बीज अंकुरित हो जाता है । यहाँ 'अद्वेष' नाम के गुण की प्राप्ति होती है ।

2. तारादृष्टि

1 **प्रकाश की उपमा** :—तारादृष्टि में मनुष्य का तत्त्वबोध 'कंडे की आग' के समान है, मित्रा दृष्टि से इसका तत्त्वबोध कुछ विशेष तो होता है, किन्तु क्षणिक होता है ।

2. **दोषनाश** :—इस दृष्टि में उद्वेग 'दोष' दूर होता है । तारादृष्टि वाला जीव धर्मक्रिया करते समय उद्विग्नता नहीं मगर शान्ति की अनुभूति करता है ।

3 **योगांग की प्राप्तिः**—इसमें पांच नियम की प्राप्ति होती है:-शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ।

4. **गुण की प्राप्तिः**—तारादृष्टि के खुलते ही जीव को जब "तत्त्वजिज्ञासा" नामक गुण की प्राप्ति होती है तब वैराग्यमयी तथा संसार की असारता से भरी कथा सुनने की रुचि उसमें उत्पन्न होती है ।

तारादृष्टि वाला साधक शौचादि नियमों का पालन करता है, आत्महित की आराधना में उद्विग्न नहीं होता हैं । वह तत्त्व का जिज्ञासु होता है ।

वैसे तो इसकी वृत्तियाँ शुभ होती है, मगर कभी-कभी अज्ञानता वश वह भूलकर बैठता है ।

3. बला-दृष्टि

1. **प्रकाश की उपमा** :—बलादृष्टि वाले जीव का तत्त्व प्रकाश "लकड़ी की आग" के समान होता है । प्रथम की दो दृष्टि से कुछ विशिष्ट तत्त्वबोध इसमें होता है । आत्मवीर्य कुछ विशेष होता है । धर्मक्रिया में विशेष प्रीति होती है और आंशिक आराधना करना भी है ।

2. **दोषनाश** :—इसमें "क्षेप" नामक दोष का नाश हो जाता है. अब क्रिया करते समय मन इधर उधर दौड़ता नहीं है । मन की चंचलता इस दृष्टि वाले जीव में नहीं होती है ।

3. **योगांग की प्राप्तिः** [illegible] योग साधना में प्राप्त होता है । पद्मासन, [illegible], सिद्धासन, [illegible] [illegible] । बलादृष्टि में 'सुखासन' की सिद्धि प्राप्त होती है ।

4. **गुण प्राप्ति** —बलादृष्टि [illegible] [illegible]

'तत्त्व सुश्रूषा' नाम के गुण को पाता है। जैसे जवानी में पति-पत्नी गीत-संगीत के श्रवण मे मदहोश से हो जाते है, उन गीतो की पंक्तियो मे वे खो-सेजाते हैं वैसे ही साधक भी तत्त्व के श्रवण मे एकाग्र हो जाता है–मग्न हो जाता है ।

इस योग की साधना मे साधक को विशिष्ट सिद्धि होती है, अत सुखासन की सिद्धि को प्राप्त करता है । इनके मन की स्थिरता विशेष होती है और सासारिक पदार्थो पर की आसक्ति भी अल्प हो जाती है ।

नूतन दम्पति जैसे नृत्य गीत-संगीत मे अनूठी प्रसन्नता पाते है वैसे ही यह शान्त-प्रशान्त साधक शास्त्र-श्रवण मे अद्भुत आनद की अनुभूति करता है ।

इस साधक की वृत्तियाँ शान्त व मन स्थिर होता है। समताशील होने से आत्म-विशुद्धि की वृद्धि होती जाती है ।

4 दीप्रा-दृष्टि

1 प्रकाश की उपमा –दीप्रादृष्टि मे तत्त्वबोध "दीपक के प्रकाश' के समान विशिष्ट होता है। वीर्योल्लास की तीव्रता होती है और तत्त्वबोध की स्थिति भी अधिक होती है ।

2 दोष परिहार –इसमे उत्थान नामक दोष का नाश होता है, अर्थात् मन-वचन-काया की चचलता इस दृष्टि के साधक को नही होती है ।

3 योगाग –"प्राणायाम" की सिद्धि । प्राणायाम के तीन अग है–पूरक, रेचक व कुम्भक । इस दृष्टि मे भाव प्राणायाम की भी सिद्धि होती है। पूरक –अन्तर्भाव को पूरता है । रेचक –बाह्य भाव को निकालता है । कुम्भक को रोकता है ।

4 गुण प्राप्ति –दीप्रादृष्टि वाले महात्मा को तत्त्व का श्रवण मीठे जल के समान लगता है, वह तत्त्व को सुनता ही रहता है ।

यह साधक प्राणायाम सिद्ध करता है। तत्त्व का श्रवण भी करता है, किन्तु सूक्ष्म तत्त्वबोध नही है। क्योकि उसने अभी ग्रन्थी का भेद किया नही है। धर्म के लिए धड अर्पण करने की क्षमता रखता है । यह दृष्टि पाकर के आत्मा शरीर के लिए धर्म का त्याग नही करता है ।

5. स्थिरा-दृष्टि

1 प्रकाश की उपमा —स्थिरादृष्टि सम्यक्दृष्टि जीवो को होती है। इस साधक का तत्त्वज्ञान "रत्नकी प्रभा" के समान है। जैसे रत्न के प्रकाश का नाश नही होता है, वैसे ही इस दृष्टि वाले का तत्त्वज्ञान स्थिर (नित्य) रहता है नाश नही होता है ।

2 दोषनाश –"भ्रान्तिदोष" का नाश होता है । रस्सी मे साँप की भ्रमणा के समान यह दोष है । इस दोष का नाश हो जाने से वह तत्त्व को तत्त्व ही मानेगा । अतत्त्व को अतत्त्व ही समझेगा ।

3 योगाग –प्रत्याहार की प्राप्ति होती है, अर्थात् इन्द्रियो को अपने-अपने विषयो मे से खीच लेना ही प्रत्याहार योगाग है। यहा साधक इन्द्रियो के ऊपर विजय प्राप्त करता है ।

4 गुण प्राप्ति –"सूक्ष्मबोध" नामक गुण की प्राप्ति होती है। सरलबुद्धि उत्पन्न

होता है । दर्शन मोहनीय के नाश से समकित की प्राप्ति होती है, तथा मिथ्यात्व-अज्ञानता का नाश होता है । दर्शन मोहनीय के नाश से समकित उत्पन्न होता है अतः मन निर्मल होता है ।

चैत्यवंदनादि धर्म कियाएँ यह बिना अतिचार के करता है और भ्रांति रहित होता है ।

सम्यक् दृष्टि जीव को नदी की रेती में घर-घर खेलते बालकों की किड़ा के समान संसार की प्रवृत्तियां लगती हैं । विषय सुखों को मृगजाल के समान मानता है ।

जब साधक मिथ्यात्व के घनघोर अंधकार से मुक्ति पाकर सम्यक्त्व रत्न के प्रकाश को पाता है तब श्रुत ज्ञान से वह फोन, फेन, फ्रिज, फ्लेट, फर्नीचर को सपने के समान मानता है ।

स्थिरादृष्टि वाला जीव क्षुद्रादि आठ दोष से रहित होता है और पाप का तीव्र पश्चाताप करता है ।

6. कान्ता दृष्टि

1 प्रकाश की उपमा:-"आसमान में के तारों" के समान इस कान्तादृष्टि वाले का तत्त्वज्ञान स्थिर होता है ।

2. दोषनाश:-इस दृष्टि में "अन्यमुद् दोष" का नाश होता है, अतः साधक जिस समय जो भी क्रिया करता है उसी में वह [illegible] रहता है ।

3. योगांग सिद्धि:-इस दृष्टि में "धारणा" योगांग की सिद्धि होती है, अतः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहती है ।

4 गुणप्राप्तिः-कान्तादृष्टि वाला 'तत्त्व मीमांसा' नाम के गुण को प्राप्त करता है । जो सम्यक् ज्ञान स्वरूप होने से वह गुण आत्मा के लिए हितकारी होता है ।

पत्नी जैसे अपने पति के ऊपर आसक्त होती है वैसे ही इस साधक का चित्त अरिहंत परमात्मा द्वारा प्रणीत धर्म के ऊपर आसक्त होता है । संसार का उदासी होता है । भव भ्रमण से भयभीत होता है ।

7. प्रभा-दृष्टि

1. प्रकाश की उपमा:-साधक का तत्त्व-ज्ञान इस दृष्टि में "सूरज के प्रकाश" के समान तेजस्वी होता है और वह प्रथम सुख का अनूठा अनुभव करता है ।

2. दोषनाश:-"रुग्दोष का नाश अर्थात् इस दृष्टि में पीड़ा का नाश होता है ।

3. योगांग:-"ध्यान" की सिद्धि को साधक पाता है । चिन्ता-भावना रहित स्थिर अध्यवसाय 'ध्यान' है ।

4. गुणप्राप्तिः-इस दृष्टि में योगी को "तत्त्व प्रतिपत्ति" नाम के गुण की प्राप्ति होती है ।

यह साधक बाह्य-अभ्यंतर रोग रहित, [illegible], मन से समाधि और [illegible] में मस्त रहता है । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करता है ।

8. परा-दृष्टि

1 प्रकाश की उपमा:-इसमें चांद के प्रकाश के समान [illegible] [illegible] होता है ।

शतः शतः वदन

—आचार्य श्री विजय भुवन भानुसूरी जी महाराज सा को

□ श्री भगवानदास पल्लीवाल

मनुष्य कर्म से महान बनता है। मनुष्य जन्म लेता है एव मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जीवन उन्ही का सार्थक है, जो जन्म लेने के बाद स्व आत्मा का कल्याण तो करता ही है लेकिन पर आत्मा को भी उत्थान के मार्ग की ओर अग्रसर करता है। ऐसे ही एक महान सन्त आचार्य देव श्री विजय भुवन भानु सूरिजी महाराज साहब का दिनाक 19 4 93 को दोपहर 1 35 बजे समाधिपूर्वक 83 वर्ष की आयु मे हृदय गति रुक जाने से पालडी (अहमदाबाद) मे स्वर्गवास हो गया।

आचार्य श्री का जन्म विक्रम सवत् 1967 चैत्र कृष्णा 6 के शुभ दिन अहमदाबाद के श्री चिमनभाई एव माता श्रीमती भूरी बहन के द्वितीय पुत्र के रूप मे हुआ। जन्म नाम कान्तीभाई। बाल्यावस्था से ही आप कुशाग्र बुद्धि के थे। पढने-लिखने मे बहुत होशियार। फलस्वरूप आपने इग्लैंड की बैंकिंग परीक्षा उच्च श्रेणी मे पास की। सासारिक जीवन मे रहकर आपका मन इन सासारिक बन्धनो मे मुक्त होना चाहता था, सयम मार्ग को अपनाना चाहता था। 23 वर्ष की आयु होते होते तो आपने दृढ निश्चय से सयम मार्ग को अपना कर पोष शुक्ला 12 सवत् 1991 मे परम पूज्य आचार्य प्रेम सूरिजी महाराज साहब के पास दीक्षा ग्रहण की तथा कान्ती भाई से भानुविजय जी बन गये।

दीक्षा के बाद अपना सारा ध्यान जैन आगमो के अध्ययन, भारतीय दर्शन एव तत्वज्ञान के अध्ययन मनन एव चिन्तन मे लगाया। कुशाग्र बुद्धि होने से बहुत ही कम समय मे आप इन विषयो के पूर्ण विद्वान बन गये। प्रवचन कला मे भी आपने विशेष दक्षता प्राप्त की। त्याग एव वैराग्य आपके हर प्रवचन के मुख्य विषय होते थे। इसोका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आपने 400 से अधिक साधु-साध्वियो को दीक्षा दी। जैन धार्मिक शिक्षण शिविरो के माध्यम से आपने हजारो व्यक्तियो का जीवन परिवर्तन कर दिया। तप की आपके जीवन मे अत्यधिक महत्ता थी। शात स्वभावी, गम्भीर चिंतक, मधुर एव मितभाषी गुणो से आप ओतप्रोत थे। लेखन कार्य मे आपकी बेजोड मिसाल थी। दर्जनो पुस्तको के आप लेखक थे। जैन दर्शन के आप प्रकाड विद्वान थे।

महावीर जी तीर्थ को वापिस प्राप्त करने के लिए पू आचार्य भगवत का जो योगदान एव आशीर्वाद इस समिति को प्राप्त था वह अकथनीय है।

आपके निधन पर श्री जै श्वे तपागच्छ सघ एव श्री महावीरजी तीर्थ रक्षा समिति द्वारा सार्वजनिक सभाओ का आयोजन कर आपने प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित किए गये।

ऐसे महान आचार्य भगवन्त को शत शत वन्दन, शत शत नमन।

सांसारिक भ्रमण नष्ट करना है तो

दान-शील-तप-भाव रूपी धर्म को अपनाओ

—श्री मनोहरमल लूनावत

जैन तीर्थङ्कर देव चार गति रूप सांसारिक भ्रमण का नाश करने के लिए जगत को दान-शील-तप और भाव रूपी चार प्रकार के धर्म क्रियायें बतलाते है। अतः हमें इन चारों के बारे में विवेचन कर उनको जीवन में अपनाना है ताकि इनका ज्ञान प्राप्त कर हम मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकें।

1. दान—यह सही है कि धर्म का आरम्भ दान से होता है। सारा संसार आज दान से चल रहा है। सूर्य प्रकाश का दान करता है, चन्द्रमा शीतलता का दान करता है, आकाश और पृथ्वी जल का दान करते हैं। यही नहीं हमें वायु भी दान के रूप में ही मिल रही है। दान देने से सुख सौभाग्य एवं मोक्ष मिलता है। दान देने से पुण्य बढ़ता है और पापों का नाश होता है। दान देने से मानव उदार और लोकप्रिय भी बनता है। तीर्थङ्कर परमात्मा भी दीक्षा लेने से पूर्व एक दिन एक करोड़ आठ लाख सोनैया [illegible] 360 दिन [illegible]

जीवन मिला है और मानव जीवन में ही हमें दान देने का अवसर मिलता है। अतः दान देने में सदैव उदार एवं अग्रणी होना चाहिए। दान में भी सुपात्रदान की बड़ी महिमा है। सुपात्र दान के पात्र साधु साध्वी है। अतः उन्हें संयम पालन के लिए निर्दोष आहार पानी, वस्त्र, पात्र, औषधियां आदि का शुद्ध भाव से दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त मूक प्राणियों को अभयदान दो, गरीबों को अन्न और वस्त्र दान दो, अशिक्षितों को सम्यग ज्ञान का दान दो। जीवदया हेतु पशु पक्षी आदि को उनके खाने योग्य वस्तु का दान देकर उनकी भूख प्यास मिटानी चाहिए। इससे आपको दीर्घ आयु और उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होगा। हमें दानवीर जगडू शाह, पेथड़शाह, भामाशाह आदि महापुरुषों का अनुकरण कर दान देने में सदैव [illegible] रहना चाहिए। दान अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार देना चाहिए।

2 शील—दान के पश्चात् दूसरा स्थान [illegible]

वस्त्र नही पहनना चाहिए । अश्लील साहित्य नही पढना चाहिए । यदि आप पुरुष हैं तो सुदर्शन सेठ जैसा और स्त्री हो तो सीता माता जैसा शील पालिए ।

3 तप–दान और शील के बाद 'तप' को तीसरा धर्म बतलाया गया है । तप की अनन्त महिमा है । चार-चार हत्या करने वाला दृढ प्रहारी चोर भी तप के प्रभाव से मुक्ति का अधिकारी हो गया था । निकाचित कर्मो का नाश करने मे यदि कोई सहायक एव समर्थ हैं तो यह तप ही है । तप से चचल मन काबू मे आता है और इन्द्रिया शान्त होती है । अनादिकाल से जीव मे लगी हुई आहार सज्ञायें तप से ही टूटती ह । तप तन-मन और आत्मा की परम औषधि है और तप से ही महान पुण्य की प्राप्ति होती हे । तप करने वालो के लिए मोक्ष दूर नही है । हमारे तीर्थङ्करो ने भी चारित्र लेकर घोर तप किए थे । अत प्रत्येक मानव को कुछ न कुछ तप अवश्य करना चाहिए । इसकी शुरुआत नवकारसी से भी की जा सकती है ।

4 भाव–उपरोक्त चारो मे अन्तिम भाव धर्म है । दान-शील-तप का प्राण भाव धर्म ही है । दान देते हुए, शील पालते हुए और तप करते हुए भी यदि हमारे भाव शुद्ध नही रहे तो सब व्यर्थ हो जाते हैं । सब कुछ हमारे मन के भावो पर निर्भर है । कहा भी गया है कि आत्मा के एक परिणाम मे बन्ध है और दूसरे परिणाम मे मोक्ष । अर्थात अशुद्ध भाव मे ससार और शुद्ध भाव मे मोक्ष है । मरुदेवी माता ने शुद्ध भाव से ही तो केवल ज्ञान और मोक्ष प्राप्त किया था । भरत चक्रवर्ती ने शुद्ध भाव से ही काच के महल मे केवल ज्ञान प्राप्त किया था । शुद्ध भावना भाते भाते ही इलाईची कुमार केवली बन गए थे । शुद्ध भाव से ही भवो का नाश होता है अत हमे हमेशा अपने भावो को शुद्ध रखना चाहिए ।

अत अन्त मे यही निवेदन है कि दान के पीछे धन की ममता हटाने का भाव रखो । शील के पीछे विषय-वासना घटाने का भाव रखो और तप के पीछे आहार लोलुपता पर अकुश रखो । यह सच है कि शुभ क्रिया के पालन विना उत्तम भाव प्रगट नही हो सकते । इसलिए भावो को उत्तरोत्तर शुद्ध रखते हुए दान शील तप आदि की क्रियाओ को करते रहना चाहिए । दान-शील तप और भाव धर्म को अपनाने से ही मोक्ष मार्ग की ओर हम अग्रसर हो सकेंगे ।

मौन ही जीवन की मस्ती है, मौन ही स्वशोध की प्रयोगशाला ह और मौन ही मुक्ति की मजिल है ।

जैन श्वेताम्बर तीर्थ श्री महावीर जी

—श्री राजेन्द्र कुमार चतर, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट
अध्यक्ष, श्री जैन श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक) श्री महावीरजी
तीर्थ रक्षा समिति (रजि.) जयपुर

जयपुर से आगरा सड़क मार्ग से महुआ होकर 165 कि. मीटर की दूरी पर एवं इसी सड़क मार्ग पर सिकन्दरा होकर 145 कि. मीटर की दूरी पर यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थित है। यह राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में दिल्ली-बम्बई बड़ी रेल लाइन पर श्री महावीर जी रेल्वे स्टेशन से मात्र 4 कि. मीटर की दूरी पर है जहां पर सवारी का हर समय साधन उपलब्ध है। इसी रेल्वे स्टेशन पर ग्राम पटोंदा में भी श्वेताम्बर जैन मन्दिर है। महावीर जी में श्री जैन श्वेताम्बर पल्लीवाल धर्मशाला में ठहरने का अच्छा साधन है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र जैन श्वेताम्बर पल्लीवालों की आबादी से घिरा हुआ है।

महावीर जी तीर्थ श्वेताम्बर तीर्थ है। जयपुर के दिगम्बर समाज ने कब्जा कर रखा है। कब्जे को हटाने के लिए श्री जैन श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक) श्री महावीर जी तीर्थ रक्षा समिति (रजि.) [illegible] है। श्वेताम्बरों की ओर से [illegible] 15 व्य-क्तियों के बयान हो चुके हैं। दिगम्बर समाज [illegible] हैं—

1 [illegible]

2 The worship of Religious Places (Special Provision) Act 1990 के अन्तर्गत जिसमें किसी धार्मिक स्थल की स्थिति वही रहेगी जो 15 अगस्त सन् 1947 को थी।

उपर्युक्त में से दिगम्बर महावीरजी कमेटी की प्रथम दरख्वास्त माननीय न्यायाधीश एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज क्रम संख्या 2 जयपुर ने अपने विस्तृत फैसले के द्वारा दि. 14.12.92 को खारिज कर दी। उक्त न्यायिक फैसले के मुख्य अंश प्रेषित हैं—

"....दस्तावेज 1 से 13 सरकारी रिकार्ड्स हैं एवं संख्या 14 से 54 दस्तावेज 85°; फोन हो गये व्यक्तियों की गवाहियों के हैं। संख्या 55 से 56 दस्तावेज मूर्तियों के चित्र की फोटो स्टेट प्रतियां हैं तथा 57 से 62 [illegible] हैं।

[illegible]

की कोशिश की जा रही हैं। अव्वल तो पक्ष कारान को कोई दस्तावेज अपने वाद-पत्र अथवा प्रतिवाद पत्र के साथ ही पेश किये जाने चाहिए। तथापि वाद विन्दू बनने के पूर्व भी पेश कर सकना होता है। लेकिन इसमे वाद विन्दू 10 3 76 को बना दिये गये थे। उसके बाद वादी के कुल 18 गवाहान के बयान हो चुके ह। वाद विन्दू बनने के 15 वप बाद उक्त दरख्वास्त पेश की गई है और देरी से पेश करने का प्रार्थी (प्रतिवादी) ने कोई ठोस कारण अकित नही किया है। इसलिए मेरी राय मे प्रार्थी (प्रतिवादी) प्रकरण को बहुत और लम्बा करने के आशय से पेश की हुई प्रतीत होती है। इसके अलावा प्रार्थी ने उक्त दस्तावेज की कोई प्रमाणित प्रतिलिपिया भी पेश नही की है। जिसके अभाव मे यह असभव होगा कि उक्त दस्तावेज क्या है एव वाद मे क्या रिलेवेन्सी है एव शक से परे हैं या नही। इनकी सत्यता नही देखी जा सकती तब तक कोई दस्तावेज को रिकार्डर्स पर लिया जाना न्यायोचित प्रतीत नही होता है। हस्ब कायदा प्रार्थी इनकी नकलें कोर्ट से आदेश लेकर भी पेश कर सकता था। लेकिन इस बाबत प्रार्थी ने कोई तकलीफ नही उठाई हे। अप्रार्थी (वादी) के करीबन 18 गवाहान के बयान भी हो चुके है तथा प्रतिवादी (प्रार्थी) की शाहादत मे पत्रावली अकित होने वाली है।

उक्त दस्तावेज रिकार्डस् पर लेने से मेरी राय मे कम से कम 10 वर्षो तक और निणय होने वाला नही है। जबकि मानवीय उच्चतम न्यायालय का निणय दिनाक 10 9 85 मे स्पष्ट निर्देश है कि उक्त प्रकरण को एक वर्ष के अन्दर निणित किया जावे। तथापि उक्त निर्देश प्राप्त होने के उपरान्त भी कम से कम छ वर्ष अधिक हो गये हैं। मेरी राय मे उक्त दस्तावेज उक्त प्रकरण से असगत एव अगाध ही प्रतीत होते ह। दरख्वास्त देरी से पेश करने का प्रार्थी (प्रतिवादी) ने कोई ठोस कारण भी नही बतलाया है। न इनकी प्रमाणित प्रतिलिपिया पेश की ह। न इनका पूर्णरुपेण दरख्वास्त मे हवाला दिया है। ऐसी सूरत मे प्रार्थी की उक्त दरख्वास्त महज प्रकरण को देरी करने के इरादे से पेश की प्रतीत होती है। जो वेग है तथा असम्भावी होने से काबिले खारिज होने से खारिज की जाती है।

S/d
अपर जिला एव सेशन न्यायाधीश
न्यायालय न 2 जयपुर प्रथम

आदेश आज दिनाक 14 12 92 को मेरे द्वारा लिखा गया एव हस्ताक्षरित कर सरे इजलाम मे सुनाया गया।"

इसके लिए दिगम्बर कमेटी ने राजस्थान हाईकोर्ट मे निगरानी याचिका पेश की है।

द्वितीय दरख्वास्त के बारे में विभिन्न वरिष्ट एडवोकेटस् की राय ली गई जिनके अनुसार यह Act इस केस पर लागू नही होता क्योंकि केस सन् 1947 से बहुत धीमी गति से चल रहा है तथा मूलनायक आज भी वही हैं जो पहले थे। यानि इसमें कोई तबदीली नहीं की गई है।

"केस सन् 1947 से पहले का चल रहा है एव श्वेताम्बर समाज का आधिपत्य था इसके लिए निम्न सरकारी आदेश प्रेषित है—

Jaipur the 19th April 1949
No 519–20

The Govt of Jaipur are pleased to direct the Managing Committee of Shree Mahaverji Temple should be

allowed to use New Rath in possession on the 21st April 1943 and this will be without pregudice to the rights of the Swetambers and pending the settlement & dispute in civil court. The rest of the ceremonies will be in accordance with the practice there to followed.

Sd/-

G. S. Purohit

For Chief secretary to Govt. of Jaipur

19.4.43 Copy to:-

Swetamber Members, Jaipur

यह केस हर कानूनी पहलुओं से श्वेताम्बर समाज के हक में है। तथा आशा करते हैं कि शीघ्र ही न्यायिक फैसला श्वेताम्बर समाज के हक में होगा।

सम्पूर्ण श्वेताम्बर समाज को एक जुट होकर अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए सजग होना पड़ेगा। कम से कम साल में एक बार हर श्वेताम्बर समाज का व्यक्ति इस तीर्थ के दर्शन वंदन के लिए अवश्य जावें। समस्त आचार्य भगवतों, मुनिराजों, साध्वी-गण से पुरजोर विनती है कि इस तीर्थ को पुनः प्राप्त करने के लिये अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

इसी शुभ कामना के साथ।

□

आत्मिक बल कुछ कम नहीं,
कार्मिक बल भी कुछ कम नहीं।
साधक ! कर्मों का सामना कर,
कर्मों के सामने तू कभी नम नहीं ॥

फूल तो बहुत खिलते हैं, सुगंध देता है कोई-कोई।
पुत्र तो बहुत जनते हैं, पुरुषार्थ करता है कोई-कोई ॥

कायोत्सर्ग

—श्री राजमल सिंघी

कायोत्सर्ग क्या है ?

प्रतिक्रमण के छ आवश्यको में से एक आवश्यक "कायोत्सर्ग" है एव छ आभ्यतर तपो मे से एक तप "कायोत्सर्ग' शुभ-ध्याने, है। "कायोत्सर्ग ' शब्द दो शब्दो 'काया" एव उत्सर्ग" की सन्धि से बना है। काया का अर्थ है "देह ' और उत्सर्ग का अर्थ है "त्याग"। इस प्रकार कायोत्सर्ग का अर्थ हुआ "देह का त्याग।' यहा "देह के त्याग" का अर्थ मर जाना नही है, किन्तु इसका अर्थ है, शरीर द्वारा कोई कार्य नही करना एव शरीर के ममत्व का त्याग करना। अत कायोत्सर्ग करते समय स्थिरता आनी चाहिए, जिसके लिए शरीर को एक स्थान पर स्थिर किया जाता है, वाणी को मौन से स्थिर किया जाता है और मन को शुभ ध्यान में स्थिर किया जाता है।

कायोत्सर्ग क्यों किया जाता है ?

(1) तस्स उत्तरी सूत्र मे कायोत्सर्ग करने का कारण बताते हुए कहा गया है कि तस्स उत्तरी करणेण (अर्थात् पाप की विशेष आलोचना एव निन्दा करने के लिए, पायच्छित करणेण (पाप का प्रायश्चित करने के लिए), विसोही करणेण (विशेष रूप से चित्त की शुद्धि करने के लिए) विसल्ली करणेण (चित्त को शल्य रहित करने के लिए), पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए (पाप कर्मो का सर्वथा नाश करने के लिए) ठामि काउसग्ग (मैं कायोत्सर्ग करता हूँ)। यहा शल्य का अर्थ हम विशेष रूप से समझ लें। शल्य तीन प्रकार के होते हैं–मिथ्यात्व शल्य, माया शल्य और निदान शल्य। ये तीन शल्य हमारे मन मे एक प्रकार के बडे बडे काटे होते है जो हमको पीडा पहुँचाते हैं। मिथ्यात्व शल्य के कारण हम सत्य वस्तु को मिथ्या समझते है और मिथ्या वस्तु को सत्य समझते हैं। माया शल्य के कारण हम कपट करके लोगो को ठगते हैं जिसमे हम पाप के भागीदार बनते है। निदान शल्य के कारण हम इच्छा रखते हैं कि धर्म करने से हमको सासारिक सुख मिले। ऐसी चित्त की प्रवृति से दूर रहने के लिए भी हम कायोत्सर्ग करते है।

प्रतिक्रमण की क्रिया मे क्षमा माँगने के लिये हम मिच्छामि दुक्कड बोलते हैं, जिससे हमारी सामान्य शुद्धि होती है, किन्तु कायोत्सर्ग करने से हमारी विशेष शुद्धि होती है, और इसीलिए कायोत्सर्ग किया जाता है।

(2) अरिहत चेइआइ सूत्र मे भी बताया गया है कि कायोत्सर्ग क्यो किया जाता है। अरिहत चेइयाइ करेमि काउसग्ग (अरिहत भगवतो की प्रतिमाओ के आलबन-श्रद्धा के लिए मैं कायोत्सर्ग करता हूँ), वदन वत्तियाए (वदन करने के लिए) पूअणवत्तियाए (उनकी

पूजा, सेवा एवं आज्ञा मानने के लिए), सक्कार वत्तियाए (उनका सत्कार करने के लिए), बोहिलाभ वत्तियाए (बुद्धि की निर्मलता बढ़ाने के लिए) निरुवसग्ग वत्तियाए (मोक्ष की प्राप्ति के लिए), सद्धाए (श्रद्धा की वृद्धि के लिए) मेहाए (ज्ञान प्राप्त करने के लिए), धिइए (चित्त की स्वस्थता बढ़ाने के लिए), धारणाए (मनुष्य जन्म के ध्येय को याद करने के लिए), अणुप्पेहाए (बार बार चिंतन करने के लिए), वड्ढमाणिए (चिंतन की स्थिति बढ़ाने के लिए), ठामि काउस्सग्गं (मैं काउस्सग्ग करता हूँ)।

(3) **वेयावच्चगराणं सूत्र** में भी कायोत्सर्ग करने के हेतु बतलाए गए हैं। वेयावच्चगराणं (संघ एवं शासन की विशेष प्रकार की सेवा करने वाले सम्यग्दृष्टि वाले शासन देवों का स्मरण करने के लिए), संतिगराणं (उपद्रवों, उपसर्गों, रोग आदि को शांत करने वाले देवों का स्मरण करने के लिए), सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं (जो मोक्ष की कामना करते हैं, ऐसे सम्यग्दृष्टि वालों को समाधि, समर्पण व एकाग्रता प्रदान करने वाले देवों के स्मरण करने के लिए), करेमि काउस्सग्गं (मैं काउस्सग्ग करता हूँ)। ऐसा करने से धर्म करने में अनुकूलता प्राप्त होती है।

(4) **कुसुमिण दुसुमिण सुत्र** में कायोत्सर्ग [illegible]

(5) **अतिचार आलोचना सुत्र** द्वारा विविध आचारों में लगे हुये अतिचारों का प्रतिक्रमण किया जाता है (प्रायश्चित किया जाता है और क्षमा मांगी जाती है)। इन अतिचारों का विचार करने के लिये भी काउसग्ग किया जाता है।

(6) **दंसणंमि नाणंमि अ सूत्र**--के द्वारा ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप और वीर्य के अतिचारों का विचार करने के लिये काउसग्ग किया जाता है। इस काउसग्ग में यह सूत्र मन में बोला जाता है।

(7) राइ प्रतिक्रमण में यह निर्णय लेने के लिए कि मैं कैसा तप करूं, काउसग्ग किया जाता है। उसमें सोचा जाता है कि भगवान महावीर ने 6 माह का तप किया। क्या मैं भी यह तप कर सकूंगा। यदि शक्ति और ऐसे परिणाम हों तो ऐसा तप करने का निर्णय लेना चाहिये और यदि यह न हो सके तो क्रमश: पांच माह, चार माह, तीन माह, दो माह, एक माह, 29 दिन से लगाकर 17 दिन और उसके बाद 32 भक्त (16 दिन) से 2 भक्त (एक दिन) का उपवास करने के बारे में सोचना, और यह भी न हो सके तो आयंबिल, नीवी, एकासणा, बियासणा, अवड्ढ, पुरिमड्ढ, साढपोरसी करने के बारे में सोचा जाता है, और यह भी न हो सके [illegible]

[illegible]

कायोत्सर्ग के समय मे प्रवृत्ति कैसी हो ?

(1) प्राणो का नाश होने जैसी स्थिति भी यदि आ जावे तो अडोल रहना (2) सभी जीवो को अपने समान समझना (3) मन, वचन, काया को वश मे रखते हुए अशुभ प्रवृत्ति से दूर रहना। (4) सरदी, गरमी, वायु इत्यादि से दुखी नही होना। (5) राग-द्वेष नही रखना। (6) क्रोध, मान, माया, लोभ नही करना (7) आत्म-भाव मे रमण करना (8) अपने शरीर पर ममत्व नही रखना (9) शत्रु, मित्र, सुवर्ण-पत्थर, निन्दा-स्तुति मे भी समभाव रखना (10) सभी का कल्याण करने की भावना (11) सभी जीवो पर करुणा रखना (12) ससार के सुखो की लालसा नही रखना।

मन को वश मे कैसे किया जाय ?

कायोत्सर्ग मे वाणी और काया को वश मे रखने मे तो कोई विशेष कठिनाई नही होती, किन्तु सबसे बडा प्रश्न जो हमारे सामने है, वह यह है कि मन को कैसे वश मे किया जाए। मन तो ससार के विविध विषयो की ओर दौडा करता है, किन्तु ज्ञानियो ने कहा है कि मन को वश मे करने के लिए धार्मिक शास्त्रो के श्रवण एव पठन द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जावे। ज्ञान रूपी लगाम से मन वश मे रह सकता है और सन्मार्ग मे जा सकता है। सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने पर मन उन्मार्ग मे नही जावेगा और राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी मन का मैल धुल कर हम मन पर काबू पा सकेंगे। तीर्थंकर भगवतो ने कायोत्सर्ग ध्यान मे ही नौ तत्वो का सोलह भावनाओ इत्यादि का चिंतन कर केवलज्ञान प्राप्त किया और वे मोक्ष के शाश्वत सुख के भोक्ता बने।

हम क्या करें ?

कायोत्सर्ग मे हम अधिकतर लोगस्स सूत्र का चिंतन करते है एव नवकार मत्र गिनते हैं, किन्तु यह एक औपचारिकता (formality) तक ही सीमित नही रहनी चाहिए, अपितु हमको कायोत्सर्ग के समय इन सूत्रो मे स्व-पच जाना चाहिए। लोगस्स का उच्चारण करते समय सभी तीर्थङ्करो का जीवन हमारे सम्मुख चित्रवत आ जाना चाहिए उनके पाचो कल्याणको का हमको दिग्दर्शन होना चाहिए और किस प्रकार वे अपने जीवन का विकास कर चौदवें गुण स्थानक तक पहुँच गए, यह हमारे ध्यान मे आना चाहिए। हमारी भावना होनी चाहिए कि हम भी उनका अनुसरण करें एव उनके उपदेशो का पालन करें। इसी प्रकार नवकार मत्र का मनन करते समय पच परमेष्ठियो के गुणो एव उनकी धार्मिक आराधनाओ की ओर हमारा ध्यान जाना चाहिए और यही भावना रखनी चाहिए कि हम भी उनके जैसे त्यागी एव तपस्वी बनें। तभी हमारा कायोत्सर्ग करना फलीभूत हो सकेगा।

सही रूप से कायोत्सर्ग करने के लिए हमको हमारे जीवन की प्रत्येक क्रिया धममय बनानी पडेगी। हमको मन वचन काया से सभी कार्य धार्मिक दृष्टि से करने पडेंगे। इसके लिए हमको हेमचन्द्राचार्य द्वारा बताए गए 35 गुणो को अपनाना पडेगा, श्रावक के 21 गुणो को प्राप्त करना पडेगा, 18 पापो से दूर रहना पडेगा, 16 भावनाओ का चिंतन एव अनुपालन करना पडेगा, श्रावक के 12 व्रतो का पालन करना पडेगा, अभक्ष्य वस्तुओ के भक्षण एव रात्रि भोजन से दूर रहना पडेगा। ऐसा करने से ही हमारा मानसिक वातावरण ऐसा हो सकेगा कि हमारा चित्त

धार्मिक भावनाओं से ओत प्रोत हो जावेगा और हमारा मन डांवाडोल न होकर, सांसारिक वृत्तियों से दूर रहते हुए, कायोत्सर्ग करते समय हमारा ध्यान स्थिर रह सकेगा।

हमको यह स्पष्ट रूप से समझने की आवश्यकता है कि केवल मात्र जाप, दर्शन, पूजा, व्याख्यान सुनने, प्रतिक्रमण के सूत्रों का अर्थ समझे बिना प्रतिक्रमण करने से हमारा बेड़ा पार नहीं हो सकेगा। हमारी आत्मा पर जो कर्मों का आवरण है वह तो उपरोक्त क्रियाओं के साथ ही, परमात्मा की आज्ञाओं (उपदेशों) का पूर्ण रूप से पालन करने से ही हट सकेगा। हेमचन्द्राचार्य ने तो यहां तक कह दिया कि "हे वीतराग, तेरी सेवा की अपेक्षा तेरी आज्ञा का पालन श्रेष्ठ सेवा है। आज्ञा के पालन किए बिना, सेवा का फल नहीं मिल सकेगा। एक विचारक ने तो यहां तक कह दिया कि "साचा छे वीतराग, ने साची छे एनी वाणी, आधार छे प्रभु आज्ञा, नै बाकी सब धूल धाणी"।

परम पूज्य परमात्मा हमको सम्यग्-कायोत्सर्ग करने की शक्ति प्रदान करे, यही मनोकामना।

भादवा सुदी 5 सं. 2049 से द्वि. भादवा सुदी 4 सं. 2050 तक

श्री सुमतिनाथ जिनालय में अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री भेंटकर्त्ताओ की शुभ नामावली

1. [illegible] — 1) श्री [illegible]
   2) श्री [illegible] जी जैन
   3) [illegible]
2. [illegible] पूजा — श्रीमती [illegible]
3. [illegible] पूजा — श्री [illegible] परिवार
4. [illegible] पूजा — [illegible]
5. [illegible] पूजा — श्री [illegible]
6. [illegible] पूजा — श्री [illegible]
7. [illegible] — श्री [illegible]
8. [illegible] पूजा — श्रीमती [illegible]

साधना "नवकार" महामन्त्र की

— श्रीमती स्मिता एस मेहता, जयपुर

नवकार की साधना यानि सर्व समर्पण भाव की पात्रता के विकास की लक्ष्यपूर्वक साधना।

नवकार की साधना यानि पापो के मूल रूप दुर्भाव से सम्पूर्ण क्षय की भावना।

नवकार की साधना यानि अरिहत परमात्मा की आज्ञानुसार पवित्र एव अप्रमत्र जीवन जीने की साधना।

नवकार की साधना अर्थात् परम पद की साधना सातवा पद है "सव्वपावप्पणासणो"। सभी पापो के मूल क्षय की ओर नवकार के साधक का लक्ष्य होना चाहिए। पाप के मूल का क्षय जितनी मात्रा मे होगा सर्व मगल रूप आत्मभाव का विकास क्रमश उतनी ही मात्रा मे होगा नवकार गारटी देता है सभी पापो का क्षय कर अशुभ कर्मो का विनाश कर सर्व मगलो मे उत्कृष्ट मगल प्रदान करने का। नवकार को अपनी चिन्ताओ का सारा भार सौंप देने पर ही उसकी अचिन्य अपूर्व शक्ति का अनुभव किया जा सकता है।

अह भाव के त्याग से आती है नम्रता

जबकि दीनता तो जीव के परिणामो को तोडने वाली है। जिस प्रकार माता की गोद मे बालक निश्चित रहता है उसी प्रकार नवकार माता की गोद मे साधक निश्चित रहता है। नवकार का शरण इसलिए अनिवार्य है कि हम केवल स्वय के प्रयत्नो द्वारा महामोह के गठबन्धनो मे टूट सकने मे समर्थ नही है।

शरणागत का रक्षण नवकार का वचन है

सामान्य भूमिका मे रहे मानव के पास कोई महान वस्तु प्रस्तुत का जाये तब स्वय की सामान्यता के कारण उसे वह सामान्य लगती है और उसके विशिष्ट प्रकार के लाभ से वह सर्वथा वचित रह जाता है। नवकार को पहचानने/जानने के विषय मे कुछ ऐसी स्थिति अपनी भी है, ऐसा अपनी वाणी विचार और आचार से प्रतीत हो रहा है अन्यथा क्या नवकार जैसे महामत्र के शुभ योग के बाद जीवन प्रवाह वैर और ईर्ष्या की गदी गलियो का बहाना सम्भव है?

जिसे नवकार पर प्रीत हो क्या वह स्वप्रशसा मे लीन हो सकता है? नवकार का रागी क्या परनिन्दा मे रागी बन सकता है। जिसने हृदय मे नवकार की स्थापना की हो तो वह प्रभु स्मरण मे निमग्न रहेगा प्रभु आज्ञा को शिरोधार्य कर मैत्री प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भाव के शिखर पर विचरण करते हुए दानशील तप और भाव की आरधना मे रत रहेगा।

नवकार भक्ति की यह महिमा है कि इसके साथ प्रीत बाधना अर्थात् जीव मात्र

के साथ प्रीत बांधना, जिसमें न तो एक तरफी राग है और न ही एक तरफी द्वेष। उसमें होता है जीवों के प्रति सहज भाव। इस भाव में शक्ति है, भवचक्र को तोड़ने की। नवकार को भाव पूर्वक नमस्कार करने से परमेष्ठियों की कृपा से साधक मिथ्यात्वादी के साथ सम्बन्ध क्रमशः ढीले होते हैं एवं इनके अन्त से जीव शिवपद वासी बनता है। "नमो" यह नम्रता का प्रतीक है।

"नमो" यह राग-द्वेष और मोह को जीतने का मन्त्र है।

"नमो" यह देव-गुरु और धर्म की भक्ति का मन्त्र है।

"नमो" यह ज्ञान-दर्शन और चारित्र का मंत्र है।

"नमो" यह मन-प्राण और इन्द्रियों को वश में रखने का मंत्र है।

"नमो" यह दुष्कृतगर्हा, सुकृतानुमोदना और शरण गमन का मंत्र है।

"नमो" यह संसारोच्छेदक, कर्म का घातक और पाप का प्रतिपक्षी है।

नवकार स्वयं एक उत्कृष्ठ अनुष्ठान है क्योंकि वह अतिशय विनम्रता एवं अपूर्व श्रद्धा का संगम होता है नवकार महामंत्र का अविचल श्रद्धा और एकाग्रता के साथ जप तप करने वाला नर से नारायण, जीव से शिव, भक्त से भगवान तथा आत्मा से परमात्मा बन जाता है।

☐

धूनि न रमाई, रमाया केवल केश,
मूँड़ि न बदली, बदला केवल वेश।
ऐसे भगवान से क्या होगा कल्याण,
मन मुड़ाया, न मुड़ाया राग-द्वेष ॥

राग-द्वेष दूर करे, जो मोह को मार।
नवकार मन्त्र को जपे, [illegible] ॥

"तीन उत्तम विचार रत्न"

—श्री सुरेश मेहता, जयपुर

मानव को जीवन मे सुखी होना हो तो, तीन दुर्गणो का हमेशा त्याग करना चाहिए।

(1) अपेक्षा (2) आवेश (3) उतावलापन।

अपेक्षा भौतिक पदार्थो की नही रखनी चाहिए आवेश (क्रोध) कभी नही करना चाहिए। उतावलापन कभी नही होना चाहिए।

अगर उपरोक्त तीनो कथनो की ओर ध्यान रखते हुए जीवन मे अपनाया तो जीवन के सभी दु ख अवश्य ही दूर होगे।

(1) अपेक्षा नहीं रखनी

कभी किसी मे कोई भी अपेक्षा नही रखनी कि यह कार्य ऐसे ही होना चाहिए, उसको ये काय करना ही होगा, साफ, कपडो की प्रेस खराब न हो, सब्जी ऐसी ही आनी चाहिए। ऐसी सभी प्रकार की अपेक्षाएँ ही जीवन के दु खो का मूल है ये ही सुखद अपेक्षाएँ जीवन को नीचे गिराती है। अत अपेक्षाओ को हटाने हेतु लक्ष्य बनाकर अभी से इन्हे हटाने का प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दीजिए।

(2) आवेश मे नहीं आना

आवेश (क्रोध) अत्यन्त भयकर है आवेश मे आने से व्यक्ति कई ऐसे प्रकार के कटु वचनो को बोल डालता है जिसके कारण दूसरे व्यक्ति के दिल को भयकर आघात पहुचता है। जिस व्यक्ति से अथाह प्रेम है लगाव है और वह उस व्यक्ति को महामूल्यवान व्यक्ति मानता है, ऐसे व्यक्ति पर ही क्रोध आता है। तब ऐसे मूल्यवान व्यक्ति को दुत्कार देता है तिरस्कृत कर देता है। आवेश मे आने से दिमाग के सभी सेल जैसे खत्म हो गए होते है ऐसा लगता है। आवेश के कारण वैर के जीवन ले लेने तक की सम्बन्धो मे परिणति हो जाती है तीर से छूटे हुए तीर के समान वाणी के बाण भी छूटने के बाद वापिस फिरते नही। इसलिए व्यक्ति को खूब ही काबू रखना चाहिए। आवेश से जो नुकसान होता है वह आवेश नही करने से हुए नुकसान से कम ही होगा।

(3) उतावलापन (बेसब्री)

तीसरा दुर्गण है बेसब्री, यह व्यक्ति को मन से ऊँचा नीचा कर देता है। कोई भी कार्य को वेसब्री से करने की क्या जल्दी है भवितव्यता का निर्माण होना है वो प्रमाणिकता मे होने ही वाला है इसमे ज्यादा हाय तोबा से क्या लाभ। कोई भी कार्य करने मे अमुक समय तो लगने वाला है। आज बीज रोपने पर आज ही फल लग जाये ऐसा होने वाला नही यह कटु सत्य है।

अगर जीवन मे "अपेक्षा", आवेश" और "उतावलापन" तीनो को दूर कर दिया जाय तो अपूर्व शाति और समृद्धि प्राप्त होगी। □

नवकार—महामंत्र

—श्रीमति लीलावती एम. मेहता

(1)

रे ! चिर प्रवासी अन्य की आशा करे तू क्यों सदा ?
नवकार तेरे पास है वह धार ले तू सर्वदा ।।
अन्य सब आशा निराशा में बदल जब जायेगी ।
तब भी भला नवकार से ही शांति निश्चय आयेगी ।।

(2)

रे चिर प्रवासी । ईष्ट बल हरता समस्त अनिष्ट को ।
ईष्ट फल को प्राप्त करने साथ रखना ईष्ट को ।।
परमेष्ठि से बढ़ ईष्ट जग में और कोई है नहीं ।
यह बात मानस में सदा रखना भला सुखदाय ही ।।

(3)

रे ! चिर प्रवासी मंत्र में अधिराज श्री नवकार है ।
नवकार जिसने पा लिया उसकी नैया पार है ।।
नवकार से बढ़ कोई नहीं है जगत में यह सार है ।
नवकार को ले साथ पहुँचे अनंत जन भवपार है ।।

(4)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सेठ-ननणा मनीहारा

—श्री महेन्द्र कुमार कोचर

महाराजा श्रेणिक के समय की बात है। उनकी नगरी मे एक ननणा मनीहारा नामक एक सेठ रहा करता था। उसके व्यापार मे लाखो की धन-दौलत लगी हुई थी करोडो की चल-अचल सम्पत्ति थी। भरा हुआ परिवार था,बेटे-बेटी पोते-नाती आदि, कहने का तात्पर्य है सेठ के किसी प्रकार की कमी नही थी। इसके साथ सेठ जैन धर्म का पक्का श्रावक था। रोजाना नवकारसी, उपवास आदि तपस्या की भी बहुत लगन थी। सेठ ने धर्म स्थानो पर कुए, बावडिया भी खुदवाई। साधर्मी की भी सेवा करता था।

एक समय की बात है सेठ बहुत बीमार हो गया और सेठ के बचने की कोई उम्मीद नही थी। सेठ इतना समझदार था कि मरणोपरात उसका मन एक बावडी मे ही लगा रहा। सेठ बावडी पर बडी लगन मे काफी पैसा खर्च करने पर भी पूरी बावडी को नही देख सका। इसी बीच सेठ का इन्तकाल हो गया।

सेठ मरने के पश्चात् उसी बावडी मे उसका जीव मेढक बना। इसलिए ज्ञानिओ ने कहा है कि आदमी को मरते वक्त ऊँचे व अच्छे भाव रखने चाहिए।

काल-चक्र का पहिया निरन्तर चलता रहा। मेढक भी पानी मे कभी-कभी सीढियाँ चढकर बाहर भी आ जाता था। यह उसकी दैनिक (रोजाना) दिन-चर्या थी।

एक दिन की बात है कि वह बावडी के बाहर आकर एक चट्टान पर बैठ गया। बावडी भी बगीचे मे बनी हुई थी। उसने वहाँ से देखा कि एक जैन महा सन्त एक पेड के नीचे ध्यानावस्था मे खडे थे। उस मुनि को देख कर उसको केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। वह उनके दर्शन कर वापस बावडी मे आ गया। दूसरे दिन से ही उसने अन्न-जल त्याग दिया और तपस्या करने लग गया। आज उसको तीसरा दिन था। वह बावडी से बाहर निकल आया। महा-मुनि को वही ध्यानावस्था मे देखकर उनके पास आया और उनसे वदना की। वह वापस जाने को मुडा ही था कि राजा श्रेणिक घोडे पर बैठ-मुनि के पास आ रहा था तो वह मेढक घोडे के पाँव के नीचे आकर मर गया। मरते ही आकाश मे बडा विकराल उजाला हुआ।

यह देखकर श्रेणिक घबरा गया और मुनि को वन्दन कर बैठ गया। बाद मे मुनि से पूछा कि आचार्य भगवन ये उजाला किसका है। मुनि तो अवधिज्ञानी व केवल ज्ञानी थे। पूरी बात मुनि ने श्रेणिक को बतलाई।

श्रेणिक को बडा दुःख हुआ। मुनि से कहा है भगवन ये तो बडा अनर्थ हुआ। बाद मे मुनि ने फरमाया—हे—श्रेणिक होनी-अनहोनी को कौन टाल सकता है। हे श्रेणिक अब इस मेढक का जीव देवलोक मे जावेगा वहाँ अपना आयुष्य पूर्ण कर जैन दीक्षा प्राप्त कर मोक्ष मे जावेगा।

और अन्त मे राजा श्रेणिक अपने महलो मे वापस चला गया। ●

"ज्ञान-गंगा"

—श्री दर्शन छजलानी

1. मनुष्य ने अपने ज्ञान के द्वारा हर चीज का नापना चाहा, पर खेद है कि अपने आप को नापने में बहुत असफल रहा।
2. निन्दा सुनकर क्रोध न करने वाले शायद कहीं, मिल जायेंगे, लेकिन प्रशंसा सुनकर प्रसन्न न होने वाले विरले ही मिलेंगे।
3. बड़े कोई जन्म से पैदा नहीं होते, लेकिन जिनमें बड़प्पन पनपता है वे ही बड़े बन जाते हैं।
4. वृक्ष के नीचे चाहे राजा आए चाहे रंक, उसकी छाया की शीतलता में किंचित् भी फर्क नहीं पड़ता इसी का नाम बड़प्पन है।
5. जो न सुनने में मजा है वह सुनने में नहीं, जो सुनने में मजा है वह कहने में नहीं और जो कहने में मजा है वह वाद-विवाद में नहीं।
6. बालक स्नेह चाहता है, युवा बराबरी चाहता है और वृद्ध विनय चाहता है। अतः बालक को स्नेह से जीतो, युवा को मैत्री से जीतो और वृद्ध को विनय से जीतो।
7. पथ दिखलाना दीपक का काम है, लेकिन पथ पर चलना मनुष्य का काम है। यथार्थता दिखाना शास्त्र (सद्गुरु) का काम है, लेकिन अमल में लाना व्यक्ति का काम है।
8. हीरा, पन्ना, और मोतियों का मूल्य उनके वर्ण और आकृति से होता है, लेकिन मनुष्य का मूल्य केवल वर्ण और आकृति से नहीं किन्तु व्यवहार से होता है।
9. वृक्ष की तरह मनुष्य भी अपना कुछ त्याग कर जीवन का नवीनीकरण (कायाकल्प) कर सकता है।
10. आचारों से विचार ज्यादा मूल्यवान है, क्योंकि विचारों से आचार बनते हैं, न कि आचारों से विचार।
11. कपड़े में यदि सलवट पड़ती है तो पानी में भिगोकर सुखाने से निकल जाती है, परन्तु मन की सलवट तो क्षमा देने और लेने से ही निकल सकती है।
12. मन पवित्र हो तो वाणी अवश्य सहज पवित्र बन जाती है। लेकिन वाणी पवित्र होने से मन पवित्र हो ही ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि मन वाणी का दास नहीं है, किन्तु वाणी मन की दासी है।
13. ज्ञानी पहले सोचते हैं, पीछे करते हैं। मूर्ख पहले करते हैं, पीछे सोचते हैं। सोचना तो दोनों को ही पड़ता है, सिर्फ पहले पीछे का भेद है।
14. [illegible]
15. [illegible]

[illegible]

जिन पूजन भक्त मेंढ़क

—श्री विनीत साण्ड

राजगृह नगर मे एक सेठ सागरमल था। उसकी पत्नी का नाम कनकलता था। दोनों मे प्रबल प्रेम था। सेठ भार्याचारी अधिक थे, वे जो सोचते वह कहते नही और जो कहते वह करते नही। उनके जीवन मे यह उक्ति–मन मे हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन से करिये कभी चरितार्थ नही हुई।

एक दिन अचानक सेठजी का निधन हो गया। सेठानी खूब रोई। सेठ अपने कर्मानुसार मर कर मेंढक हुआ। वह अपने घर "जसवन्त महल" की बावडी मे जन्मा। एक दिन सेठानी को पानी भरते देख उसे अपने पूर्व भव की याद आ गई, फलत फुदकता-उचकता सेठानी के पीछे-पीछे उनके कक्ष तक जा पहुँचा। सेठानी ने मेंढक पर जीव दया प्रदर्शित करते हुए समीप ही कही भगा दिया, परन्तु वह फिर आ गया। जब भी सेठानी निकलती वह उसके पीछे-पीछे चलता रहता उन्हे गौर से देखता रहता।

एक दिन सेठानी मुनि मोहित के दर्शनार्थ गई, तो मेढक भी उनके पीछे पीछे वहाँ जा पहुँचा। वन्दना के बाद, अवसर पाकर जिज्ञासावश सेठानी ने मुनिराज को बतलाया कि यह मेढक कई दिनो से मेरे साथ-साथ चलता है। मैं जहाँ जाती हू वहाँ यह भी जाता है। कभी-कभी लगातार मुझे देखता रहता है मुनिराज साधारण नही थे अवधिज्ञानी थे। अत सेठानी की बात पर गभीरता प्रकट करते हुए बोले–"यह मेढक कुछ समय पहले तेरा पति था, मरण के बाद मेढक हुआ है। जातिस्मरणवश यह तुम्हे पहिचानता है, पहले यह तुमसे राग करता था, अब अनुराग करता है। मुनिराज की बातें सुनकर सेठानी को बोध हुआ। वह मेढक को साथ घर ले आई। उसे अच्छा स्थान व अच्छा आसन दिया। उस दिन से सदा उसकी सुव्यवस्था व सहायता करती रहती।

कुछ समय बाद राजगृह के समीप विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के समवसरण के आने का समाचार चारो दिशाओ मे फैला। नर, नारी प्रजा-राजा सभी पूजन सामग्री ले-लेकर उस तरफ जा रहे थे। सेठानी कनकलता को जब यह समाचार विदित हुआ तो वह अपने पुत्र रोहित को लेकर श्रद्धासहित वहाँ के लिए चल पडी। मेढक कुछ समझा नही, क्योकि वह बावडी मे टहलने गया था। मगर जब उसकी दृष्टि आकाश मार्ग से जाते हुए देवताओ पर पडी तो वह विचार करने लगा, समवसरण का आभास, उसकी समझ मे आ गया। उसने एक सुन्दर कमल पाखुरी अपने मुह मे दबाई और भगवान महावीर की पूजा करने विपुलाचल की ओर चल पडा। अपने छोटे से कोमल

शरीर के अनुपात से वह काफी शीघ्रता से समवसरण की ओर बढ़ता चला जा रहा था। मार्ग में भीड़ अधिक थी। मानवों के साथ उनकी सवारियां भी भीड़ का कारण थी। मेंढक चलता जा रहा था कि तभी एक हाथी ने धोखे से अपना पैर उस पर रख दिया। उसका प्राणान्त हो गया।

चूंकि मरण से पूर्व मेंढक को जिनेन्द्र पूजा की तीव्र अभिलाषा थी। अतः वह मृत्यु के बाद अपनी भक्ति भावना के कारण शीघ्र ही स्वर्ग में देव बन गया। साधारण देव नहीं वरन् बड़ी-बड़ी ऋद्धियों का धारक देव। अवधिज्ञान के बल से पूर्व वृत्त जानकर वह शीघ्र ही विमान में बैठकर पुनः महावीर की पूजा के लिए उड़ चला। वहां पहुँच कर वीर प्रभु की पूजा का लाभ लिया। □

इन्द्रियों के सुख को तुम, पीर मत समझो।
आंसुओं की धार को तुम, नीर मत समझो॥
तुम पाना चाहते हो, जिस सच्चे सुख को,
वह सुख संयम में है, कहीं दूर मत समझो॥

जीवन रूपी घड़ियाल के कांटे तेजी से दौड़ते जा रहे हैं,
आयुष्य रूपी डोरी के बंधन से प्राण भी तोड़ते जा रहे हैं,
लाखों बार तो मरते आये हैं इस दुनिया में,
मगर प्यार नहीं पाये हैं,
जो अपने गुणों की सुवास छोड़ते जा रहे हैं।

'श्रद्धा-सुमन' शत्रुन्जय महातीर्थ

रचयिता–श्री धनश्यमल नागोरी
एम ए बी एड साहित्यरत्न

कलिकाल मे भव समद्र मे डूबते का सहारा पावन तीर्थराज शत्रुंजय के नाम से कौन अपरिचित हैं ? जहाँ प्रतिवर्ष लाखो तीर्थ यात्री जाकर परमात्मा आदिनाथ के चरणो मे श्रद्धा के सुमन चढाकर, पवित्र भावो के मोती बिखेरते हैं, उस तीर्थराज भूमि को कैसे भूला जा सकता है ? तो आइये, हम भी उन्हे श्रद्धा सुमन चढायें।

शत्रुन्जय गिरी महातीर्थ तुम्हें, श्रद्धा के सुमन चढाते हैं।
सिद्धाचल सिद्ध गिरि तुम्हे, शत् शत वन्दन करते है ॥
जहाँ आदिनाथ विराजित हैं,
प्रभु शांतिनाथ जहाँ शोभित हैं,
प्रभु आदिनाथ, पुण्डरिक स्वामी,
जहाँ नही किसी की कोई स्वामी,
हम तेरे गुणो की माला के मणके नित दिल मे जपते हैं ॥ १ ॥

जहाँ रायण रुख सदा विकसित,
जहाँ की रज का कण-कण विलसित,
जहाँ बहता पवन मन्द हर्षित,
लख यात्रीगण होते पुलकित,
उस सुरा-धाम पुण्य भूमि का, हम नित्य-प्रति ध्यान लगाते हैं ॥ २ ॥

जहाँ अनन्ता सिद्ध बुद्ध,
महिमा गाते आबाल वृद्ध,
नही थकती गुणगाती जिह्वा,
होता सुन सुन पुलकित मनवा,
'धन' सिद्ध धाम पावन भू को लख जन मन मे अति हर्षाते हैं ॥ 3 ॥

'मंगल-गीत'

'जय सुमतिनाथ'

जयपुर के प्राचीनतम जिनालयों में सर्वोपरि, अनूठा और अपने ढंग का जिनालय, जहाँ दादा सुमतिनाथ विराजकर, सुमति के कुसुमों की सुवास दे रहे हैं, आइये, उस अनाथों के नाथ का मंगल गीत गाकर अपने-आपको धन्य करें।

जय सुमतिनाथ भगवान, तुमको वंदन सौ सौ बार ।
तुमको वन्दन शत-शत बार, तुमको वन्दन बार हजार ।।

भव-भव भटकत भूल्यो साहिब,
छोड्यो तेरो साथ,
पुण्योदय से आज मिलियो,
फिर से तेरो नाथ ।
अब तो करदो प्रभु निहाल ।। तुमको वन्दन ।।

तुम निरखत मम नैना हरखत,
पावे मोद अपार,
अशरण शरण, अकारण बन्धु,
मेटो दुःख अपार,
अब तो तारो तारणहार ।। तुमको वन्दन ।।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।। तुमको वन्दन ।।

जय बोलो महावीर की.... ..

—श्री राकेश छजलानी

(1)

पलट के रख दी जिसने सब रेखायें तकदीर की
जय बोलो महावीर की

वीर के गुण अलापने वालो वीर का पथ अपनाओ
हिंसा चोरी झूठ कपट छल स्वार्थ दूर भगाओ
ऊँच नीच और राग द्वेष की दीवारों को ढाओ
आपस के मतभेद भुलाकर सबको गले लगाओ
पहले इतना करलो तब बोलो जय महावीर की

(2)

हो कोई स्थानकवासी या होवे श्वेताम्बर
इससे हमको क्या लेना कोई हो दिगम्बर
आपस के झगडे की खाई अब तो मिलकर पाटो
एक पेड की शाखा है मत एक दूजे को काटो
जोडो अब भी जोडो बिखरी कडिया जजीर की

(3)

जैन धर्म के ठेकेदारों सभलो अब भी त्यागो
झूठी मान प्रतिष्ठा के चक्कर को अब तो त्यागो
वक्त को देखो बात को समझो तजो आपसी झगडा
इन झगडो के कारण से ही जैन धर्म है पिछडा
पहले यह सब रोको फिर बोलो जय महावीर की

—0—

मुझसा कोई पुण्यशाली नहीं

लेखक–श्री आशीष कुमार जैन

विश्व के समस्त जीवधारियों में श्रेष्ठ जन्म एवं जीवन मानव का है। मानव भव में ही आत्मा अनन्तानंत काल से सुदृढ़ बनी जन्म-मरण की सुदीर्घ श्रृंखला को तोड़ने हेतु मोक्ष मार्ग में अवरोधक तत्त्व राग द्वेष काम क्रोध आदि विकृतियों के समूल विच्छेद का भव्य पुरुषार्थ करने में समर्थ हो सकता है।

जिसकी प्राप्ति हेतु सुर सुरपति भी सदैव लालायित रहते हैं ऐसे मनुष्य जन्म की प्राप्ति सहज नहीं है। अनादिकाल से निगोद में रहने के बाद जब एक आत्मा सिद्ध बनी हमें वहां से आजादी मिली। पृथ्वीकायादि पांचों सूक्ष्म स्थावर में कई कालचक्र बिताकर हम बादर पृथ्वीकायादि योनि में असंख्य काल रहे। वहां से त्रसकाय, बेइन्द्रियादि से होकर पंचेन्द्रिय में पहुंचे। नरक तिर्यञ्च व देवगति में परिभ्रमण करते करते अनायास पुण्योदय से हमें नरभव मिला। पश्चात् [illegible] सद्गुणों के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

[illegible]

ही एक मात्र अवलम्बन है। नवतत्त्वों का वर्णन, सूक्ष्म जीवों को अभयदान, जल अग्नि वायु वनस्पति में जीवसत्ता की समझ, सर्वथा अहिंसामय चारित्र केवल जिनमार्ग में ही है।

आश्रव संवर का विवेक, समिति गुप्ति का उपदेश, प्रायश्चित का विशद विवेचन, कर्म सिद्धान्त कर्म की 158 प्रकृति, स्थिति, बंध उदय उदीरणा, संक्रमण, अपवर्तन, निकाचना, पाप न करने पर भी उसके त्याग की प्रतिज्ञा के अभाव में कर्मबन्ध जिनेश्वर देव के अतिरिक्त किसने कहा है। चौदह गुणस्थान, नयवाद मात्र जैनधर्म की विशेषता है। नमस्कार मन्त्र जिसमें व्यक्ति पूजा नहीं अपितु गुणपूजा महत्त्वपूर्ण है। इसी कारण यह सर्वमन्त्रों में शिरोमणि है और स्पष्ट करता है कि जैनमत में कहीं कूपमण्डूक वृत्ति नहीं वरन् विश्वव्यापी उदारता का ऊंचा आदर्श है।

श्रद्धा जीवन निर्माण के लिए प्रमुख है। [illegible]

वीतराग देव के गुणो पर आसक्त होकर उनकी शरणागति स्वीकार करने वाला जीव अगाध और भीषण भवसमुद्र को सहजता से पार कर लेता है। अरिहन्त परमात्मा के नाम मात्र मे अपूर्व प्रभाव रहा हुआ हैं जिसे भक्ति पूरित निर्मल प्रज्ञा से समझा जा सकता है। भयकर दु खो से उत्पीडित, व्यथाओ से व्यथित, श्रमो से सनन्त मनुष्य जिन्हे अपना ही जीवन भाररूप प्रतीत होने लगता है वीतराग देव की शरण मे निर्भय एव निश्चिन्त बनते हैं। विशुद्ध भाव से परमात्मा को समर्पित व्यक्ति का परोक्ष एव अपरोक्ष रहा क्षुद्र दुर्जन समुदाय तनिक भी अहित नही कर सकता यह प्रत्यक्ष अनुभव एव शास्त्रसिद्ध तथ्य है।

श्रावकरत्न देद वणिक धीर एव वीर पुरुष थे। वह समय ऐसा था जब दरिद्रादेवी उन पर पूर्ण प्रसन्न थी। नादुरी नगर मे निरन्तर पराभव के कारण उन पर कर्जा बहुत बढ चुका था किन्तु वह कभी नाहिम्मत नहीं हुए। भाग्य पर विश्वास कर उन्होने यह नगरी छोड दी और घूमते-घूमते जगल मे आ पहुँचे। यहा पर दिव्य आभाशाली उस समय के महान् रसायनविद् योगी नागार्जुन के दर्शन हुए।

सिद्धपुरुषो का समागम पुण्योदय से होता है। महापुरुषो का कृपापात्र बनने के लिए तीन गुण आवश्यक हैं निस्पृहता, सेवा एव सहनशीलता। देद वणिक दरिद्र अवश्य था किन्तु उसकी मनोवृत्ति सायमित थी। अपने दु ख का रुदन किए बिना वह एकाग्रचित्त से योगी की सेवा करते रहे। देद की सत्त्वशीलता, उत्कृष्ट सेवा एव निष्काम वृत्ति से प्रसन्न होकर योगी ने उन्हे स्वर्णसिद्धि प्रदान की। प्रारब्ध और पुरुषार्थ से उनके जीवन मे सुख का सूर्य उदित हुआ। योगी का आशीर्वाद लेकर वह घर आ पहुँचे।

पुण्यानुबधी पुण्य का उदय हो तब उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं। मैं सभी का कर्जा दूर कर जिनमन्दिर बनवाऊगा धर्मशालाए, दीनयाचको का दु ख दूर करूँगा। देशकाल का विचार किए बिना देद ने अपनी भावनाओ को शीघ्रता से मूर्तरूप देना शुरू कर दिया। जीवन मे पुण्योदय और पापोदय साथ-साथ चलते हैं। देद की दरिद्रता दूर हो चुकी थी पर अचानक आई धनाढ्यता उनके लिए महान् विपत्ति का कारण बन गई। देद का वैभव तुच्छ मानसिकता वाले लोगो के लिए तडपन का कारण बन गया। कुछ ईर्ष्यालु व्यक्तियो ने जाकर राजा से कह दिया 'महाराजा आपके नगर मे देद वणिक को गुप्त निधान मिला लगता है।' राजा के मन मे वह खजाना प्राप्त करने की तीव्र लालसा पैदा हो गई।

राजा ने देद को राजमहल मे बुलाकर पूछा 'देद लोग कहते हैं तुम्हे गुप्त निधान मिला है, क्या यह सच है?' चतुर देद ने तत्क्षण सारी परिस्थिति को समझ स्वस्थता से उत्तर दिया 'महाराजा मेरी विनती है आप सुनी हुई बातो पर विश्वास न करें। मेरा भाग्य इतना प्रबल कहाँ कि मुझे निधान मिले? इसलिए हे स्वामिन! लोगो ने व्यर्थ ही आपके कान भरे हैं।'

राजा ने कहा 'देद मैं वणिको का चरित्र भलीभाँति जानता हू। तू कपट मत कर, जो बात सच हो कह दे।' देद ने पुन कहा 'राजन्! मुझे तो कोई खजाना नही मिला परन्तु आप खजाने के बहाने मेरी सम्पत्ति लेना चाहते हो। आप राजा है, मालिक हैं चाहे जो कर

सकते हैं।' राजा ने अत्यन्त क्रोधित होकर देदाशाह को कारागार में डालकर उसके घर को लूटने के लिए राजपुरुष भेज दिए। राजा की ओर से आई विपत्ति को समझ कर देद की चतुर पत्नी विमल श्री सारभूत सम्पत्ति की गठरी बांध पहले ही घर छोड़ चुकी थी।

कारावास में बन्द देद सोचता है कि राजा इतना अधिक क्रुद्ध हुआ है कि मेरी सारी सम्पत्ति लेकर मुझे परिवार सहित नष्ट कर देगा। उसके मन में चिन्ता होती है किन्तु वह परमात्मा के प्रति अपूर्व श्रद्धावन्त था। कष्ट और संकट प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आते हैं किन्तु जिनके पास श्रद्धा और प्रज्ञा होती है वह कष्टों के पहाड़ नीचे दबकर भी सुरक्षित रहते हैं। देद ने स्तंभन पार्श्वनाथ भगवन्त की शरण स्वीकार करली। उसका चित्त प्रफुल्लित हो गया, चिन्ता के बादल बिखर गए। विशुद्ध भाव से वह प्रभु की प्रार्थना करने लगा—"हे प्रभो! संसार के विपदग्रस्त जीवों को आपका एक मात्र आश्रय है। आपकी भावपूर्ण स्तवना करने वाला इहलोक परलोक में भोगसुख और मोक्षसुख प्राप्त करता है। प्रभु आपकी कृपा से प्राप्त यह ऋद्धि क्या मुझे तबाह कर देगी? मैंने तो राजा को स्वर्णसिद्धि का रहस्य नहीं बताने का साहस आपकी ही कृपा से लिया है।"

माता की गोद में बालक जिस प्रकार निर्भय रहता है, देद श्रावक भी परमात्मा की शरण में निश्चिन्त हो गया था। [illegible]

उसे पुकार कर अपने पास बुला रहा है। देद ने कहा "मैं बेड़ियों में जकड़ा हूं हिलना भी मेरे लिए मुश्किल है।" अश्वारोही ने देद को कहा "तू खड़ा तो हो।" सुभट के शब्दों से उत्साहित देद ने ज्योंही प्रयत्न किया पापड़ की तरह लोहे की बेड़ियां टूट गई। वह घोड़े पर बैठ गया। हवा से बातें करता अश्व कुछ ही पलों में वहां पहुंच गया जहां उसकी पत्नी विमल श्री छिपकर रह रही थी। देद ने विमल श्री को देखा परन्तु वह अश्वारोही तब तक अदृश्य हो चुका था। कृतज्ञ देद ने रोमांचित तन मन से पार्श्वनाथ प्रभु की स्तवना की और अन्य नगर को प्रयाण कर गया। इस प्रकार परमात्मा की कृपा से उसकी समस्त विपत्ति दूर हो गई। यदि हमने परमात्मा की आज्ञा जीवन में उतारी हो, आस्थाभरा समर्पण यदि प्रभु चरणों में हो तो प्रतिपल चमत्कार हो सकते हैं।

हमें हमारे पुण्यातिरेक का तनिक भी अहसास नहीं कि हमें जिनेश्वर देव का शासन मिला है। हमारा सारा श्रम अर्थ-अर्थ में व्यर्थ हुआ जा रहा है। वीतराग देव की उपेक्षा कर हम अन्यों के दीवाने बने हैं परन्तु इनकी आशा अन्ततः निराश करने वाली है। जगत में जो भी प्राप्तव्य है वीतराग देव की कृपा से प्राप्त हो जाता है किन्तु हमारी आराधना का ध्येय एकमात्र मोक्ष होना चाहिए। [illegible] स्वतः मिल जाते हैं।

सांसारिक सभी पदार्थ क्षणिक, नाशवान [illegible]

आत्म कल्याण केवल जिनाज्ञा पालन से सम्भव है। श्री अरिहन्त परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, वास्तववादी एव यथार्थवादी हैं। उनका वचन त्रिकालबाधित है। जिनेश्वर प्रणीत धर्म ही सर्वोत्तम एव मगलकारी है। 'मुझमा कोई पुण्यशाली नही' हमे यह सोचकर रोमाच होना चाहिए क्योंकि हमे जन्म-मरण के बन्धनो से मुक्ति की राह दिखाने वाला जिनधर्म, सद्गुरु योग एव सर्व अनुकूलताएँ मिली हैं। परमात्मा के प्रति एकनिष्ठ श्रावक को नित्य यही मनोरथ करना चाहिए कि –

जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भूव चक्रवर्त्यपि।
स्याचेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिनधर्माधिवासित ॥

जैन धर्म से वन्चित होकर मैं चक्रवर्ती भी न होऊ, किन्तु जैन धर्म को प्राप्त करके मुझे दरिद्र होना भी स्वीकार है।

अत हम समस्त जीव परमात्मा तत्त्व का सेवन तथा जिनधर्म की आराधना मे शाश्वत सुख उपलब्ध कर पाएँ यही शुभेच्छा। ❀

श्री जैन श्वे तपागच्छ संघ, जयपुर

आयम्बिल शाला परिसर जीर्णोद्धार मे सहयोगकर्त्ता

फोटो	भेंटकर्त्ता
श्रीमती प्रताप कँवर चौरडिया	श्री महेन्द्रकुमार जी चौरडिया
श्रीमती पन्नूदेवी कटारिया	श्री पारसमल जी कटारिया
श्रीमती अनोप कँवर मेहता	श्री हजारी चद जी मेहता
श्री जितेन्द्र कुमार नागोरी	श्री घनरुप मल जी नागौरी
	० श्री एटलाटिक ऐजेन्सीज
	० सुश्री सरोज जी कोचर
	० श्री नथमलजी रिखबचद जी शाह
	० श्री कमला कुमारी धर्म पत्नी पूनमचद जी एव श्री पुष्पकुमार जी बूरड

० इनकी राशि तो प्राप्त हो गई है परन्तु फोटो अभी तक प्राप्त नही हुई है।

"पुकार"

रचयिता–श्रीमती शान्तिदेवी लोढ़ा

हे अशरण शरण दीन बन्धो ! मैं कब से तुम्हे पुकार रही ।
सुनलो मेरी विनती भगवन ! नयनो से आँसू धार बही ।।
तुम ही दीनो के रक्षक हो, तुम सबके भाग्य विधाता हो ।
मुझ अबला पर भी दया करो, हे स्वामी ! तुम ही त्राता हो ।।
ससार भरा है स्वार्थ से, कोई न किसी का मीत यहाँ ।
पापो पर जो पर्दा डाले, है आज उसी की जीत यहाँ ।।
मुझमे न शक्ति, मुझमे न भक्ति, मुझमे न तनिक भी ज्ञान प्रभो !
तेरे चरणो मे आज गिरी, रखलो मेरी अब आन प्रभो !
तुम ही मुझको ठुकरा दोगे, तो और कहाँ मैं जाऊँगी ?
तुम सा रक्षक, तुम सा स्वामी, मैं और कहाँ पर पाऊँगी ?
मन मेरा आज रुदन करता, तुमसे न छिपा अन्तर्यामी ।
है कौन और जो समझ सके, मेरे उर की पीड़ा स्वामी ।।
ससार असार, नहीं इसमे मिलता है कुछ भी सार प्रभो !
मिथ्या रिश्ते, मिथ्या नाते, मिथ्या है यह ससार प्रभो !
निज कर्मो के हो वशीभूत, हम भवसागर मे भटक रहे ।
दुष्कर्मो का बोझा लादे, हम बीच भँवर मे अटक रहे ।।
आशाएँ भस्मीभूत हुई, यह तन मानो निर्जीव पडा ।
इस जीवन रूपी कलिका को, क्यो आज निराशा ने जकडा ।।
कर बद्ध याचना करती हूँ, दे दो इतना वरदान मुझे ।
तव चरणो मे मन लगा रहे, दे दो प्रभु भक्तिदान मुझे ।।

योग दे रहे है। यदि सरकार ने दूरदर्शिता से सोचे बिना पब्लिक ट्रस्टो पर कब्जा करने का प्रयत्न किया तो जनता की सेवा-भावना को भारी आघात पहुचेगा और सरकार के लिए इन पब्लिक ट्रस्टो को सम्भालना कठिन ही नही असम्भव हो जायेगा। पब्लिक ट्रस्टो पर कब्जा करने का स्पष्ट अर्थ है, देश मे रही-सही सेवा-भावना को कैद करना। सरकारी कब्जे के इस कदम से नई सस्थाओ की स्थापना की प्रवृत्ति का अन्त होने के साथ ही उल्लेखनीय जन-सेवा कर रही सस्थाओ का दम अन्दर ही अन्दर घुट जायेगा।

यदि हम भूलते नही है तो हमे स्मरण होना चाहिए कि देश की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत करने के बहाने, केन्द्रीय सरकार ने जनता के कडे विरोध के बावजूद देश मे गोल्ड कट्रोल एक्ट लागू किया, लेकिन सरकारी क्षेत्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार एव अव्यवस्था के कारण गोल्ड कट्रोल एक्ट बुरी तरह असफल होकर देश को उल्टा रसातल की ओर ले जाने लगा। लगभग बीस वर्षो के कटु अनुभव के पश्चात् केन्द्रीय सरकार को गोल्ड कट्रोल एक्ट रद्द करने के लिए मजबूर होना पडा।

यदि राज्य सरकार ने हठधर्मी पूर्वक ट्रस्टो पर कब्जा किया तो निश्चय ही इसके परिणाम गोल्ड एक्ट से भी अधिक देश के लिए घातक होगे। एक ओर जब केन्द्रीय सरकार व्यापार के क्षेत्र मे उदारीकरण की नीति पर चल रही है तब राज्य सरकार द्वारा जन-सेवा के क्षेत्र पर कब्जा करना एक राष्ट्रीय अपराध होगा।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही जहा सरकार को जुए और शराब खोरी पर तत्काल नियत्रण करना चाहिए था वहा सरकार स्वय जुआ (लाटरियो) चलाने के साथ ही शराब की बिक्री कर रही है। इससे अधिक देश का क्या दुर्भाग्य हो सकता है ?

समय की माग और परिस्थितियो का प्रबल तकाजा है कि राज्य सरकार पब्लिक ट्रस्टो पर कब्जा करने के मनसूबे को तत्काल त्याग कर दूरदर्शिता का परिचय दें।

मोह रूपी मदिरा का पान कर रहे है,
टूटी हुई वीणा से सगीत का तान कर रहे हैं।

× × × ×

भोग मे बधन हैं, वियोग मे क्रन्दन है।
आत्मा मे झाको तो, आनन्द का नन्दन है॥

नीले-काले बहुरंगीय रंग का भारतीय डाक विभाग द्वारा डाक-टिकट जारी किया गया। उसी दिन भारतीय राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने राष्ट्रपति भवन में इस विशेष यादगार डाक टिकट व प्रथम दिवस लिफाफे को जारी किया। भूतपूर्व केन्द्रीय संचार मंत्री श्री शंकर दयाल जी शर्मा ने महावीर की 2500वीं जयन्ती पर प्रकाशित डाक टिकटों का एलबम राष्ट्रपति जी को भेंट किया। इस अवसर पर स्वर्गीय राष्ट्रपति जी ने कहा कि भगवान महावीर के उपदेशों की आज भी राष्ट्र को जरूरत है।

इस डाक-टिकट पर पावापुरी (बिहार) जैन मन्दिर का चित्र है। जहां भगवान महावीर का के दिन वैशाली जनपद के मुख्य नगर कुण्डल ग्राम में भगवान महावीर का जन्म हुआ था। भगवान महावीर क्षत्रिय राजा सिद्धार्थ के पुत्र थे। आपकी माता का नाम त्रिशला देवी था। एक सम्पन्न राजकुल में सांसारिक वैभव के मध्य जन्म ग्रहण करने के उपरान्त भी बालक महावीर का मन भौतिकता के प्रति नितान्त विरक्त रहा। 30 वर्ष की अवस्था में ही संन्यास धारण कर 12 वर्ष तक कठोर तपस्या कर जंगलों में भटकते हुए अपने कर्मों का क्षय किया। 42 वर्ष की अवस्था में केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् जनता को अपने उपदेशामृत से प्लावित करते हुए लोगों को सही राह दिखाते हुए तत्कालीन कुरीतियों का घोर विरोध
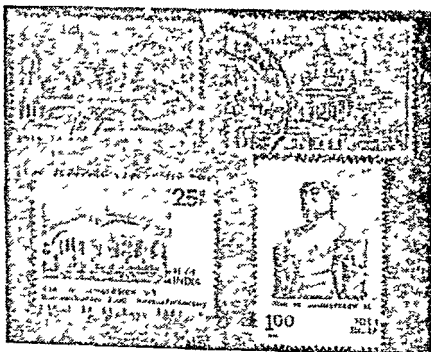
निर्वाण हुआ था। इस डाक टिकट का डिजाइन श्री विनय सरकार ने बनाया था व इन टिकटों की संख्या तीस लाख थी। इस अवसर पर प्रकाशित प्रथम दिवस आवरण (लिफाफे) पर राजस्थान के रणकपुर जैन मंदिर का चित्र दर्शाया है।

ईसा से 599 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी करते हुए विहार करते रहे। महावीर के अहिंसावादी उपदेशों ने प्राणि मात्र को अमानुषिक अत्याचारों से सान्त्वना ही नहीं वरन् उनके लिये विकास का नया मार्ग भी प्रशस्त किया।

24 अगस्त, 1991 को भारतीय डाक विभाग ने 1 रुपए कीमत का जैन मुनि मिश्रीमल जी महाराज सा का डाक टिकट भूरे रंग का जारी किया। इस डाक-टिकट पर बायें तरफ मुनि

दिवंगत मुनि श्री महाराज सा. का व दायें तरफ उनके जैसलमेर (राजस्थान) में स्थित समाधी स्थल का चित्र है।

पश्चिमी जर्मनी ने 1979 में भगवान महावीर पर एक 0.35 मार्क का बहुरंगी डाक टिकट जारी किया। जिसमें 15वीं/16वी शताब्दी के एक भारतीय सूक्ष्म चित्र की अनुकृति के रूप में है।

भगवान महावीर 24वें एवं अन्तिम तीर्थंकर लेकिन अन्तिम दो तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ और महावीर अधिक प्रसिद्ध थे। 22वें तीर्थंकर नेमीनाथजी को महाभारत के समय में लोग जानते थे। वे भगवान कृष्ण के नजदीक रिश्तेदार थे व वे हमेशा युद्ध का विरोध करते थे। वे 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ [illegible] हुए। भारतवर्ष में इनके काफी मन्दिर हैं।

भगवान महावीर के पिता सिद्धार्थ कुण्डनपुर के राजा थे व माता त्रिशला वैशाली के राजा चेटक की बहन थी। सिद्धार्थ के दो पुत्र थे, नन्दीवर्धन व महावीर। ईसा पूर्व अन्तिम वर्षों में भगवान महावीर पावापुरी [illegible] में मोक्ष गए और उनके स्थान की [illegible] में [illegible], [illegible] कार्तिक वदी [illegible] के दिन [illegible] 72 वर्ष की आयु में मोक्ष की प्राप्ति हुई। देवों ने आकर निर्वाण की पूजा की और उनके गुणों की स्तुति की।

9 फरवरी 1981 को डाक टिकट विभाग ने 1 रुपये कीमत का गोम्मटेश्वर (बाहुबली जी) का डाक टिकट नीले भूरे रंग का जारी किया। इसमें गोम्मटेश्वर (बाहुबली जी की आदम कद 50 फुट ऊँची मूर्ति को दर्शाया गया है) चित्र नं. 41।

इन्ही बाहुबली जी की मूर्ति को हसन शहर (कर्नाटक) में 15 अगस्त 1973 जास पेक्स डाक टिकट प्रदर्शनी पर विशेष लिफाफे जारी किये गए जिन पर डाक विभाग की तरफ से बाहुबली जी की आदम कद मूर्ति को दर्शाते हुए गोल काले रंग की विशेष डाक मोहर लगाई गई।

14 जून 1975 को कर्नाटक राज्य की डाक टिकट प्रदर्शनी (कान पिक्स) पर बेंगलोर शहर से विशेष लिफाफों पर मोहर लगाई थी। इस मोहर मे गोमटेश्वर (बाहुबली) के चित्र को दिखाया गया है।

जयपुर फिलेटली क्लब द्वारा आयोजित राजस्थान डाक टिकट प्रदर्शनी जय पेक्स-82 पर दो विशेष आवरण (लिफाफे) जैन संस्कृति पर जारी किये गये। प्रथम आवरण (लिफाफे) पर देलवाड़ा जैन मन्दिर (माउन्ट आबू) व द्वितीय रणकपुर जैन मन्दिर को दर्शाया गया है।

श्री जैन श्वे तपागच्छ संघ, जयपुर की महासमिति

(कार्यकाल सन् 1991 से 1993)

क्र म	नाम व पता	पद	फोन कार्यालय	फोन निवास
1	श्री हीराभाई चौधरी 6-टी, विला चाणक्यपुरी तीज होटल के पीछे बनीपार्क	अध्यक्ष	61440	73611
2	श्री हीराचन्द वैद जोरावर भवन, परतानियो का रास्ता	उपाध्यक्ष	—	565617
3	श्री मोतीलाल भडकतिया 2335, एम एस बी का रास्ता	संघ मन्त्री	—	560605
4	श्री दानसिंह कर्णावट एफ-3, विजय पथ, तिलक नगर	अर्थ मन्त्री	565695	48532
5	श्री नरेन्द्रकुमार कोचर 4350, नथमलजी का चौक	मदिर मन्त्री	—	564750
6	श्री सुरेश मेहता 322, गोपालजी का रास्ता	उपाश्रय मन्त्री	60417	563655 561792
7	श्री राकेश मोहनोत 4459, के जी बी का रास्ता	आयम्बिलशाला भोजनशाला मन्त्री	—	561038
8	श्री जीतमल शाह शाह बिल्डिंग, चौडा रास्ता	भण्डाराध्यक्ष	—	564476

क स	नाम व पता	पद	फोन कार्यालय	फोन निवास
18	श्री चिन्तामणि ढड्ढा ढड्ढा हाऊस, ऊँचा कुआ हल्दियो का रास्ता	सदस्य	—	565119
19	श्री नरेन्द्रकुमार लूनावत 2135, लूनावत हाउस मार्केट, घीवालो का रास्ता	,,	561446	5618`2
20	श्री मदनराज सिंघी, एडवोकेट डी-140, वनीपार्क	,,	—	62845
21	डॉ भागचन्द छाजेड पांच भाइयो की कोठी, आदर्श नगर	,,	—	43570
22	श्री रतनचन्द सिंघी बेरी का वास, के जी बी रास्ता	,,	560918	561175
23	श्री श्रीचन्द डागा मनीरामजी की कोठी रामगज बाजार	,,	561365	565549
24	श्री सुरेन्द्रकुमार जैन ओसवाल सोप 175, चाँदपोल बाजार	,,	64657	42689
25	श्री ज्ञानचन्द्र भण्डारी मारुजी का चौक एस एम बी का रास्ता	,,		

शासन प्रभावना के अनेक कार्यों के साथ-साथ स्व-पर कल्याण के अनेक कार्य सम्पादित किए। आपका भी कुछ माह पूर्व ही काल धर्म हुआ है।

आचार्य श्रीमद् विजय अरुणप्रभसूरीश्वरजी म सा

पालीताणाजी की पचतीर्थी करने के बाद प्रसिद्ध तीर्थ कनिकुण्ड की ओर विहार करते हुए मार्ग मे ही आपका काल धर्म हुआ। आप श्रावस्ती तीर्थोद्धारक स्वर्गीय आचार्य भद्रंकरसूरीश्वरजी म सा के प्रमुख शिष्य थे। आप प्रभु भक्ति मे सदैव लीन रहते थे। आपके हाथो से शासन प्रभावना के अनेक कार्य हुए हैं।

आचार्य श्रीमद् विजय दर्शन सागर सूरीश्वर जी म सा

दिनाक 5-9-93 को पू आचार्य श्री के बम्बई मे काल धर्म को प्राप्त हो जाने की समाचार पत्रो मे जानकारी मिलने पर सोमवार दि 6 9-93 को पू उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागर जी म सा की निश्रा म आयोजित सभा मे गुणानुवाद कर आपकी आत्मशाति के लिए नवकार महामत्र का जाप किया गया।

87 वर्षीय आचार्य श्री ने अपने जीवनकाल मे शासन प्रभावना के अनेक कार्य किए थे। सम्वत् 2021 मे आपका जयपुर मे भी चातुर्मास हुआ था।

बाल मुनि श्री धर्मयश सागरजी महाराज

मुनिराज श्री नित्यवर्धन सागरजी म सा के साथ आपने जयपुर म चातुर्मास किया था। आपने दस वर्ष की अल्प आयु मे पूज्य पन्यास श्री महायश सागरजी म सा के शिष्य के रूप मे दीक्षा ग्रहण की थी। जयपुर चातुर्मास काल मे आपका मैं धर्म भावना जागृत करने हेतु शिविर का सचालन करते हुए पारितोषिक वितरण हेतु फण्ड बनाने की प्रेरणा दी थी जिससे अभी भी धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने वालो को प्रोत्साहन देने हेतु पारितोषिक वितरण किए जाते है। 22 वर्ष की अल्प आयु म आप दि० 29 4-93 को कच्छ क्षेत्र के एक ग्राम मे काल धर्म को प्राप्त हुए।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ जयपुर एव सम्पादक मण्डल आप सभी गुरु भगवन्तो के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि एव श्रद्धा सुमन समर्पित करता है।

तपागच्छ सघ के कतिपय महानुभावो का भी पिछले समय मे निधन हुआ है —

श्रीमान् गुमान चन्दजी कोचर
श्रीमान् कपूरचद जी कोचर
श्रीमान् नानचद जी वैद
श्रीमान् रामसिह जी कोचर
श्रीमान् लक्ष्मणजी मारू
श्रीमान् गणेशलाल जी मेहता
श्रीमान गजेन्द्रसिह जी लोढा
श्रीमान् धर्मचद जी महता
श्रीमान् आगाक जी डागा सुपुत्र
श्री श्रीचन्द जी डागा
श्रीमान् जितेन्द्रकुमार जी नागोरी सुपौत्र
धनरूपमल जी नागोरी
श्रीमती धीमीबाई चतर
(श्री राजेन्द्रकुमार जी चतर, C A की मातुश्री)

उपरोक्त सभी स्वर्गीय आत्माओ की शान्ति के लिए जिन शासन देव स प्रार्थना है तथा सम्बन्धित परिवारों के प्रति सम्वेदना व्यक्त करते हैं।

सम्पादक मण्डल

श्वेताम्बर समाज के सभी बन्धुओं से चातुर्मास के इस पुनीत पर्व पर विनम्र प्रार्थना है कि इस पावन प्रसंग एवं सर्व हितकर सुकार्य में तन मन-धन से अपना अपूर्व योगदान करें।

आइए, आप और हम मिलकर समाज के इस महायज्ञ को सम्पन्न करने का सार्थक प्रयास करें। इसके लिये राज्य स्तर पर **'श्वेताम्बर जैन सेवा परिषद्'** का गठन किया गया है, सम्पूर्ण राजस्थान एवं राज्य से बाहर (श्वेताम्बर जैन) प्रवासी राजस्थानियों से इसका सदस्य बनने का विनम्र आग्रह है।

इस भव्य आयोजन के लिये प्रविष्टियां सादर आमन्त्रित हैं, 'परिचय-सम्मेलन' से एक माह पूर्व तक, विवाह योग्य युवक-युवतियों के अभिभावक फार्म भर कर भेजें एवं अपना रजिस्ट्रेशन करवा लेवें। 'परिचय-सम्मेलन' के समय बाहर से पधारे मेहमानों के लिये भोजन एवं आवास की व्यवस्था परिषद द्वारा की जायेगी।

निवेदक

संस्था	अध्यक्ष	मंत्री
श्री जैन श्वे खरतरगच्छ संघ, जयपुर	ज्ञानेश्वर गोलेछा	उत्तमचन्द वडेर
श्री जैन श्वे तपागच्छ संघ, ,,	हीरा भाई चौधरी	मोतीलाल भडकतिया
श्री जैन श्वे० तेरापंथ सभा ,,	रतनलाल बैद	ओमप्रकाश जैन
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर	सिरहमल नवलखा	उमरावमल चोरड़िया
श्री श्रीमाल सभा जयपुर	दुलीचन्द टाक	महरचन्द धाधिया
श्री जैन श्वेताम्बर संघ, (जवाहर नगर) जयपुर	उमरावचन्द सचेती	चैनराज कोठारी
श्री एस एम जैन सभा (आदर्श नगर) जयपुर	राजेश जैन	सुनील कुमार जैन
श्री मुनिलाल जैन श्वे सभा (आदर्श नगर) जयपुर	त्रिलोकचन्द जैन	नेमकुमार जैन

अन्य विवरण के लिये कृपया सम्पर्क करें।

राजेन्द्रकुमार श्रीमाल
62, गंगवाल पार्क
मोती डूंगरी रोड,
जयपुर - 302004
फोन 49832

श्वेताम्बर जैन सेवा परिषद
2345, एम एस बी का रास्ता
जौहरी बाजार, जयपुर-302003
फोन 565248
(प्रातः 10 से 6 शाम)

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मन्दिर, कोबा

एक परिचय

—मुनि श्री प्रेमसागरजी म. सा.

जिनशासन की प्रतिनिधि संस्थाओं में एक यशस्वी नाम है : **श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा का।** गुजरात के महानगर अहमदाबाद व राजधानी गांधीनगर के मध्य राजमार्ग पर कोबा ग्राम के समीप एक विशाल भूखण्ड पर अवस्थित तथा परम श्रद्धेय, युगद्रष्टा, आचार्य प्रवर श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. के कुशल मार्गदर्शन में कार्यरत यह संस्थान अपनी विरल सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवन्त रखने के लिए साहित्य, शिक्षण व साधना रूपी त्रिवेणी संगम की दिशा में दृढ़ निष्ठा के साथ प्रवृत्त है।

यहाँ के परिसर में महावीरालय, आराधना भवन, स्वाध्याय मंदिर, मुमुक्षु कुटीर, भोजनशाला के अतिरिक्त स्थित है एक सुविशाल इमारत, जो समाज के प्रमुख क्षेत्र की गरिमा और अनेक गतिविधियों का केन्द्र है, जिसका परिचय इस प्रकार है।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मन्दिर

[illegible]

[illegible]

अभिवृद्धि करना, सुयोग्य जैन-धर्म प्रचारकों का निर्माण करना, वैश्विक धरातल पर जिनशासन की यशोगाथाओं को दिग्-दिगन्त तक पहुँचाना तथा आध्यात्मिक क्षितिज को विस्तृत करने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करना इत्यादि इस ज्ञानमन्दिर की योजनाएँ हैं।

8100 से अधिक वर्गफुट के क्षेत्रफल में फैला, अत्यन्त आधुनिक ढंग से बनाया गया, दो विशाल व मजबूत भूगर्भों से युक्त तल व दो मंजिल के अनेक खण्डों में विविध विभागों में विभक्त यह अनूठा ज्ञानमन्दिर विशाल पैमाने पर विकसित व सर्वधित हो रहा है। कम्प्यूटर-संशोधन इत्यादि आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न यह ज्ञानमन्दिर जैन परम्परा के इतिहास में एक उपलब्धि सिद्ध होगा।

प्रस्तुत ज्ञानमन्दिर के मुख्य विभागों की संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है :

(1) आर्य सुधर्मास्वामी श्रुतागार :

[illegible]

(2) श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण हस्तप्रत भाण्डागार

[illegible]

से भी अधिक हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों का अद्भुत संग्रह है। इसके अतिरिक्त एक हजार से अधिक प्राचीन व अमूल्य ताडपत्रीय ग्रन्थ यहाँ की विरल विशेषता है। अनेक हस्तलिखित ग्रन्थ तो सुवर्ण-रजत से आलेखित व सैंकडो सचित्र हैं, जो कि अन्यत्र दुर्लभ व बेशकीमती हैं। इन समस्त ग्रन्थों को यहा सुरक्षित व सुव्यवस्थित किया जा रहा है। इनके सदर्भों व स्रोतो की वर्गीकृत सूची के लिए भी कम्प्यूटर काम मे लगे हुए हैं।

(3) श्री आर्यरक्षितसूरि शोधसागर

जैन परम्परा के अनुरूप जैन साहित्य के सन्दर्भ मे गीतार्थ निश्रित शोध-खोज/अध्ययन सशोधन हेतु यथासम्भव सामग्री व सुविधाओं को उपलब्ध करा कर उसे प्रोत्साहित करना व सरल/सफल बनाना इस कार्यक्रम का प्रमुख ध्येय है। सकल जैन सघ के अथ-व्यय एव सद्भावना भरे परिश्रम को सार्थक बनाने के लिए आज पर्याप्त सदर्भो व साधन-सामग्रियो के अभाव म अवरुद्ध बनती या टूट पडती शोध खोज/ अध्ययन सशोधन की प्रक्रिया को जीवन्त बनाते हुए उन प्रतिभाओं को विकास के समस्त अवसर प्रदान कर ऐसे पूजनीय साधु-साध्वी भगवतो या गृहस्था को सहायक बनना हमारी परम अभिलाषा है ताकि वे सकल जैन सघ के योग-क्षेम हेतु देश-काल के अनुरूप सुयोग्य मार्ग दर्शन प्रदान कर सकें और छिन्न भिन्न होती हमारी गरीमामयी परम्पराओं को ठोस आधार मिले।

प्रस्तुत विभाग के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम आरम्भ किये गये हैं

(1) समग्र उपलब्ध जैन साहित्य की विस्तृत सूची तैयार करना। (2) समग्र हस्तलिखित जैन साहित्य का विस्तृत सूची पत्र बनाना। (3) समग्र मुद्रित जैन साहित्य का कोष तैयार करना। (4) प्राचीन अर्वाचीन जैन विद्वानों (श्रमण व गृहस्थ-दोनो) की परम्परा व उनके व्यक्तित्व-कृतित्व से सम्बन्धित जानकारी का सग्रहित करना। (5) अप्रकाशित जैन साहित्य का सूची-पत्र बनाना। (6) अप्रकाशित व अशुद्ध प्रकाशित जैन साहित्य को सशुद्ध बनाकर प्रकाशित करना। (7) अध्ययन-अध्यापन की सुविधाएँ देना। (8) अन्यत्र विचरण कर रहे पूजनीय साधु-साध्वी भगवतो व स्व-पर कल्याणक गीतार्थ-निश्रित योग्य मुमुक्षु गृहस्थो के अध्ययन सशोधन हेतु सग्रहित सूचनाओं-सन्दर्भों एव पुस्तकों की मूल अथवा प्रतिलिपि उपलब्ध कराना।

(4) सम्राट सम्प्रति सग्रहालय

पुरातत्त्व अध्येताओं और जिज्ञासु दर्शकों के लिए प्राचीन-अर्वाचीन छोटे-बडे चित्र, धातु प्रस्तर-काष्ट की प्रतिमाएँ तथा नाना प्रकार की कला-कृतिया इस भव्य सग्रहालय की अखूट समृद्धि है, जो भारतवर्ष के भव्य भूतकाल की याद दिलाती है, अपने पूर्वजो द्वारा उपलब्ध किए गए आध्यात्मिक उत्कर्ष, सास्कृतिक गौरव एव कला की श्रेष्ठता व इतिहास की झाँकिया प्रदर्शित कर दर्शकों मे स्वय के प्रति गौरव को जगाने वाले इस सग्रहालय का विशिष्ट आकर्षण है। श्रुतखण्ड जहा जैन श्रुत की श्रवण परम्परा से लगाकर लेखन-मुद्रण तक की परम्परा को दर्शाता अद्वितीय सग्रह प्रदर्शित होगा।

(5) महावीर दर्शन (कलादीर्घा)

भगवान महावीर व उनकी अविछिन्न परम्परा मे हुए तेजस्वीपुञ्ज श्रमण व श्रावकों के बोधदायक प्रसगो को रोशनी व सम्भवत आवाज से सयुक्त कर प्रभावशाली ढग से मूर्तिमत किया जायगा।

परिकल्पना के शिल्पी

तत्कालीन गच्छनायक, आचार्य भगवन्त श्रीमत् कैलाससागरसूरीश्वरजी म सा के असीम आशीर्वाद

[शेष पृष्ठ 87 पर

इस यात्रा की सफलता हेतु श्री पदमचन्दजी छाजेड, पुष्पकुमार जी बूरड, श्री मीठालालजी कुहाड, श्री तरसेम कुमार जी पारख, श्री रतन चन्दजी सिंघी एव माणकचन्दजी चौरडिया एव एक सद्गृहस्थ का मण्डल परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है। घाट मन्दिर, जैन श्वेताम्वर मुलतान मन्दिर सघ, जैन श्वेताम्वर तपागच्छ सघ ने भी साधर्मी सेवा-भक्ति का लाभ लिया। मण्डल परिवार ने यात्रा की पूर्णाहुति पर आमेर मे गोठ एव सघपतियो का बहुमान किया।

मण्डल की चिरकालित उत्कट अभिलाषा गत वर्ष पूर्ण हुई जव दीवाली के दूसरे दिन (भाईदूज) को यात्रियो से न्यूनतम राशि एव श्रीमान कपिलभाई शाह के आर्थिक सहयोग से श्री चिमनभाई मेहता के सयोजकत्व मे एक यात्री वस श्री शत्रुन्जय तीर्थ (पालीताणा) की यात्रार्थ की गई। एक सप्ताह के यात्रा प्रवास मे 28 तीर्थों की यात्रा का लाभ मिला। जयपुर से मुछाला महावीर, राता महावीर, नव नाकोडा, मादडी, राणकपुर, वामणवाड, अम्वाजी, कुम्भारियाजी, तारगाजी, शखेश्वर, पालीताणा, भीलडी, सेरिसा, पानसर धोलका, बीजापुर आगलोड महुडी, हस्तगिरी, कदम्वगिरी, वल्लभीपुर, उदयपुर, केसरियाजी आदि प्रमुख है। इस यात्रा के दौरान कई तीर्थयात्रियो ने साधर्मी सेवा भक्ति का भी लाभ लिया।

इसी प्रकार दूसरी यात्रा वस होली पर अशोक पी जैन एव राजेन्द्र दोषी के सयोजकत्व मे त्रिदिवसीय यात्रा प्रवास के अन्तर्गत जयपुर से जाखोडा (सुमेरपुर), उम्मेदपुर, जालोर, माडोली, नाकोडा, कापरडा, जोधपुर, आदि प्रमुख है। इस यात्रा प्रवास के दौरान भी कई तीर्थ यात्रियो ने भी साधर्मी सेवा भक्ति का लाभ लिया। इस यात्रा प्रवास मे जोधपुर जैन श्वेताम्वर ट्रस्ट की ओर से पूर्ण सहयोग रहा। मण्डल परिवार इन दोनो यात्राओ मे साधर्मी भक्ति का लाभ लेने वालो का एव जोधपुर जैन समाज का हार्दिक आभार व्यक्त करता है। इस यात्रा मे साधर्मी भक्ति का लाभ लेने वालो का वहुमान जोधपुर मे किया गया। श्री श्वेताम्वर जैन युवा महासघ द्वारा आयोजित रक्तदान एव सास्कृतिक सध्या का आयोजन हुआ उसमे मण्डल परिवार का पूर्ण सहयोग रहा।

प्रत्येक दो वर्ष के उपरान्त मण्डल की कार्यकारिणी का चुनाव होता है। चनाव अधिकारी श्री मोतीलालजी भडकतिया ने दिनाक 2-5-93 को सम्पन्न निर्विरोध चुनाव मे निम्न पदाधिकारियो को निर्वाचित घोषित किया —

1	अध्यक्ष	धनपतसिंह छजलानी
2	उपाध्यक्ष	नरेश मेहता
3	महामत्री	राकेश कुमार छजलानी
4	मत्री	सुरेश वका
5	कोषाध्यक्ष	मोहन मेहता
6	सास्कृतिक मत्री	सुधीर पारख
7	सूचना एव प्रसारण मत्री	भूमरमल सचेती
8	शिक्षण मत्री	आशीष जैन
9	सगठन मत्री	अजय पल्लीवाल

कार्यकारिणी सदस्य -

1 सजीव साड
2 प्रकाश डोषी
3 दर्शन छजलानी
4 पकज लालानी
5 लक्ष्मणजी मारू (अव स्वर्गवासी)

परम पूज्य धरणेन्द्र सागर जी म० सा० ठाणा 2 का नगर प्रवेश हुआ तब से ही मण्डल परिवार तन मन से संघ द्वारा संचालित तप, ध्यान, शिविर इत्यादि प्रवृतियों से संलग्न है एवं साध्वी श्री देवेन्द्र श्री जी ठाणा–2 का भी मण्डल परियार पर वरद हस्त रहते हुए जिन-पूजा सामाजिक इत्यादि के व्रत नियम आदि मण्डल के सदस्यों ने आपकी प्रेरणा से लिये हैं। ☐

(शेष पृष्ठ 84 का)

व युगद्रष्टा, आचार्य प्रवर श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वर जी म. सा. के अथक-अनवरत परिश्रम, कुशल मार्गदर्शन एवं सफल सान्निध्य के फलस्वरूप कदम-दर-कदम प्रगति के पथ पर गतिशील व अनेक उपलब्धियों को आत्मसात करता यह ज्ञानमन्दिर गच्छनायकश्री के प्रशिष्यरत्न युगद्रष्टा, आचार्य देव श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब के अथक-अनवरत परिश्रम कुशल मार्गदर्शन एवं सफल सान्निध्य के फलस्वरूप कदम-दर-कदम प्रगति के पथ पर गतिशील व अनेक उपलब्धियों को आत्मसात करता यह संस्थान अपने आप में एक जीवन्त ऐतिहासिक स्मारक है। ☐

वो ! क्या करेगा प्यार वो भगवान को,
वो ! क्या करेगा प्यार वो ईमान को,
जो जन्म लेकर गोद में इन्सान के,
कर न सका प्यार भी इन्सान को।

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर के अन्तर्गत

स्वरोजगार योजना के बढते कदम

—सुश्री सरोज कोचर
शिविर संचालिका

जैन धर्म मे सहधर्मी वात्सल्य अथवा साहम्मिवच्छल को तीर्थंकर नाम कर्म के बीस कारणो मे महत्त्वपूर्ण बंध हेतु के रूप मे गिना गया है। सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इस प्रवृत्ति के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए महान् ज्योतिर्धर न्यायाम्भोनिधि स्व० आचार्य श्री विजयानन्द सूरि जी ने समाज के उत्थान हेतु महान् सेवा की। आपके मतानुसार—"श्रावक का पुत्र धनहीन हो तो उसे किसी रोजगार मे लगाना चाहिए जिससे उसके कुटुम्ब का भरण-पोषण हो सके। भरण-पोषण के कार्य मे सहयोग करना साहम्मिवच्छल है। संघ वाले अपने श्रावक भाई-बहिनो को आत्मनिर्भर करने हेतु कटिबद्ध, प्रतिज्ञाबद्ध होकर कार्य करें इसी तथ्य को ध्यान मे रखते हुए चारित्र चूडामणि, जैन दिवाकर गच्छाधिपति परम श्रद्धेय आचार्य श्री विजयइन्द्रदिन्न सूरिश्वर जी म की पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से "श्री समुद्रइन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष" की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सार्धमियो को स्वावलम्बी बनाना, वृद्धावस्था मे भरण-पोषण, शिक्षा, चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना है। इस सेवा कोष के माध्यम से स्वरोजगार योजना प्रशिक्षण के तहत गत वर्ष की भाँति इस वर्ष के ग्रीष्मावकाश मे विदुषी साध्वी जी श्री देवेन्द्र श्री जी म० सा० एवं साध्वी जी श्री शासन ज्योति श्री जी म० सा० की पावन निश्रा मे दिनांक 6-5-93 से 5-6-93 तक एक माह का प्रशिक्षण शिविर श्री आत्मानन्द सभा भवन, घी वालो का रास्ता जयपुर में लगाया गया।

840 शिविरार्थियो के नि शुल्क प्रशिक्षण शिविर मे मोती के आभूषण, सिलाई, कढाई, मेहन्दी रचना, पर्स, बैग निर्माण, पाक कला, फल संरक्षण, पेन्टिंग, (स्टेन्सील ब्लॉक, टाइज), सॉफ्ट टॉयज का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर मे प्रत्येक शिविरार्थी ने औसतन 2 से 3 कलाओ का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर मे जिन प्रतिमा के दर्शन के साथ प्रतिदिन प्रशिक्षण के प्रारम्भ एवं अन्त मे तीन बार णमोकार महामन्त्र के सामूहिक सस्वर उच्चारण के साथ मंगल भावना, नवपद स्तुति की प्रार्थना की जाती थी। शिविरार्थियो के उत्तम चरित्र हेतु समय समय पर मार्गानुसारी जीवन के कतिपय गुणो पर प्रकाश भी डाला गया।

शिविर का समापन एवं पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 8-6-93 को स्व. परमपूज्य श्री राजेन्द्र श्री जी म० सा० की शिष्या विदुषी साध्वी जी श्री देवेन्द्र श्री जी म० सा० एवं साध्वी जी श्री शासन ज्योति श्री जी म० सा० की पावन निश्रा में प्रमुख रत्न व्यवसायी श्री नरेन्द्र कुमारजी लुणावत की अध्यक्षता में एवं प्रमुख उद्योगपति श्री देवेन्द्र कुमारजी जैन के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में हस्तकला में निष्णात बहिनों द्वारा जहाँ निःशुल्क प्रशिक्षण दिया वहीं पर शिविरार्थियों द्वारा निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसकी दर्शनार्थियों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। शिविर में आयोजित विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली शिविरार्थी बहिनों को मुख्य अतिथि श्री देवेन्द्र कुमारजी जैन ने पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये। प्रशिक्षण कार्य में निःशुल्क योगदान देने वाली बहिनों का समारोह के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार जी लुणावत ने भेंट देकर बहुमान किया।

शिविर के पश्चात् दिनांक 23 जून से 1 जुलाई 93 तक राखी निर्माण बिक्री एवं प्रदर्शनी का आयोजन श्री आत्मानन्द सभा भवन एवं कुशल भवन में किया गया।

गत ग्रीष्मावकाश से सिलाई प्रशिक्षण की निःशुल्क व्यवस्था सुचारु रूप से चली आ रही है। वर्तमान में रोजगार को बनाए रखने एवं जीवन स्तर को उच्च करने के लिए उपर्युक्त सेवा कोष के माध्यम से व्यापक विस्तृत स्वरोजगार योजना की कल्पना की गई है। जिसका माध्यम उत्तम स्तर का अधिक उत्पादन एवं डिजाइन विकास है। इस विशाल कार्यक्रम की मुख्य शक्ति है संघात्मक समर्थन। संघ के समर्थन, सहयोग के कारण ही हम विकास की अग्रधारा में जुड़ सके हैं। विकास की अग्रधारा से जुड़ने हेतु जिन उद्योगों के माध्यम से निरन्तर रोजगार उपलब्ध होने की सम्भावना है उन्हीं से सम्बन्धित प्रशिक्षण एवं उत्पादन का चयन किया गया है। यथा–

हैण्डक्राफ्ट – रेडीमेड गार्मेन्ट्स, चद्दर सेट, पर्स, बैग आदि का निर्माण।
हस्तकारी – कढ़ाई एवं पेंटिंग की उपयोगी सामग्री।
खाद्यवस्तु – अचार, शर्बत, चटनी आदि।

इस उद्योग शाला के प्रथम वर्ष में एक सीमित और प्रायोगिक योजना को [illegible] किया गया। जिससे इस योजना के माध्यम से [illegible] पर्स, बैग, बटुए, [illegible]

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ जयपुर

वार्षिक कार्य विवरण वर्ष 1992–93

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

☐ मोतीलाल भडकतिया, सघ मन्त्री

धर्म प्रेमी महानुभावो,

परमपूजनीय युगदृष्टा राष्ट्र सत प्रवचन प्रभावक जैनाचार्य श्री पदमसागर सूरीश्वरजी म सा के प्रथम पट्टधर उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म सा एव मुनिराज श्री प्रेमसागरजी म सा, आदि ठाणा–2

एव

श्रीमद् विजय वल्लभसूरिश्वरजी म सा के क्रमिक पट्टधर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरिश्वरजी म सा की आज्ञानुवर्ती सा श्री राजेन्द्रश्रीजी म सा की सुशिष्या सा श्री देवेन्द्र श्री जी म सा एव सा श्री शासन ज्योति श्री जी म सा आदि ठाणा–2 एव सभी सार्धर्मी भाइयो एव बहिनो।

वर्तमान कार्यरत महासमिति वर्ष (1991–93) की ओर से यह तीसरा वार्षिक प्रतिवेदन लेकर मैं आपकी सेवा मे उपस्थित हूँ।

विगत चातुर्मास

जैसा कि आपको विदित है कि पिछले वर्ष आचार्य श्रीमद् विजय हिरण्य प्रभ सूरिश्वरजी म सा आदि ठाणा–3 का चातुर्मास यहाँ पर हुआ था। आपकी पावन निश्रा मे उक्त चातुर्मास काल के पर्युषण पर्व तक सम्पन्न हुई आराधनाओ आदि का विवरण पिछले वार्षिक विवरण मे दिया जा चुका था। आपकी निश्रा मे पर्युषण पर्व की आराधनायें भव्यातिभव्य रूप मे सानन्द सम्पन्न हुई थी। स्वप्नो जी की बोलिया आदि से आवक भी लगभग पूर्व वर्ष के समान हुई।

चातुर्मास मे निर्विघ्न सम्पन्न विभिन्न कार्यक्रमो, सघ मे हुई विविध तपस्याओ एव धर्म आराधनाओ के अनुमोदनार्थ एव आसोज मास की शास्वती ओलीजी के उपलक्ष मे दि० 3 से 11 अक्टूबर, 92 तक अट्ठारह अभिषेक, श्री सिद्ध चक्र महापूजन, श्री शान्ति स्नात्र महापूजन एव विविध पूजाओ सहित नवान्हिका महोत्सव का आयोजन रखा गया

जो बहुत ही उल्लासपूर्ण वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् दीपावली महोत्सव एवं चौमासी चौदस आदि की आराधनायें भी आपकी निश्रा में सानन्द सम्पन्न हुई।

चातुर्मास परिवर्तन का लाभ श्रीमान हीराचन्द जी कोठारी परिवार ने लिया जहां पर आपके मांगलिक प्रवचन के साथ साथ साधर्मी भक्ति का आयोजन भी सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास पूर्ण होने पर जनता कालोनी में स्थित श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय का वार्षिकोत्सव भी आपकी पावन निश्रा में मनाया गया।

चातुर्मास पूर्ण कर आपने मेड़ता रोड़ स्थित तीर्थ की यात्रार्थ जयपुर से प्रस्थान किया। इस अवसर पर आपको भाव भीनी विदाई दी गई।

आचार्य भगवन्त, साधु साधु वृन्द का शुभागमन, वैय्यावच्छ एवं संघ भक्ति :—

विगत चातुर्मास काल के पश्चात् समय समय पर जयपुर में बाहर से पधारे हुए साधर्मी भाईयों, सामूहिक रूप से पधारे हुए यात्री संघों की भक्ति का लाभ तो श्रीसंघ को प्राप्त हुआ ही, साथ ही आचार्य श्री विजय आनन्दघन सूरिश्वरजी म. सा. का जयपुर आगमन विगत वर्ष की उल्लेखनीय घटना रही है।

आ. श्री आनन्दघनसूरिश्वरजी म० सा० का शुभागमन एवं महोत्सव :—

आचार्य भगवन्त श्री आनन्दघनसूरिश्वरजी म. सा. आदि ठाणा-4 के जयपुर आगमन पर दि० 20-1-93 माघ वदि 13 बुधवार को प्रातः भव्य जुलूस के साथ आपका यहां पर शुभागमन हुआ। आपके श्री आत्मानन्द सभा भवन पधारने पर अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने संघ की ओर से आपका स्वागत एवं अभिनन्दन किया। आपके जयपुर प्रवास काल में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन रखा गया जिसके अन्तर्गत दि० 22-1-93 को पंच कल्याणक पूजा दि० 21-1-93 को श्री माणिभद्र पूजन, दि० 22-1-93 को सिद्ध चक्र महापूजन एवं दि० 23-1-93 को [illegible] समारोह का आयोजन श्री शिवजीराम भवन के विशाल सभा भवन में सम्पन्न हुआ। [illegible]

[illegible]

दोसी परिवार द्वारा लिया गया । दोसी परिवार की इस अनूठी सेवा एव भक्ति के लिए श्री सघ द्वारा उनका बहुमान किया गया ।

पाँच दिवसीय प्रवास के पश्चात् आपने वापिस पाली की ओर विहार किया । विहार के समय आपको भावभरी विदाई दी गई ।

अन्य साधु साध्वी वर्ग का आगमन

विगत चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् निम्नांकित साधु-साध्वी वृन्द जयपुर पधारे जिनकी वैय्यावच्च, गुरु भक्ति तथा विहार आदि की समस्त व्यवस्था करने का लाभ श्री सघ को प्राप्त हुआ —

(1) मुनि श्री न्यायवर्धनसागरजी म० सा०—ठाणा 3

(2) मुनि श्री नेमीचन्द विजयजी

(3) मुनि श्री कीर्ति प्रभ विजयजी—2

(4) सा० श्री अमीयशाश्रीजी—3

(5) सा० श्री धर्मज्ञाश्रीजी—5

(6) सा० श्री हेमेन्द्रश्रीजी—4

(7) सा० श्री अनन्त यशा श्रीजी—4

(8) सा० श्री भव्यकलाश्रीजी—3

(9) सा० श्री महेन्द्रश्रीजी —2

(10) सा० श्री रत्नप्रज्ञाश्रीजी—10

(11) सा० श्री देवेन्द्रश्रीजी—ठाणा—2

वर्तमान चातुर्मास

विगत चतुर्मास समाप्ति के पश्चात् से ही इस वर्ष के चातुर्मास हेतु अनेक गुरु भगवन्तो की सेवा मे विनती पत्र प्रेषित किए गए तथा व्यक्तिगत सम्पर्क कर प्रयास किया गया । इसी क्रम मे विराजित उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म० सा० का चातुर्मास जयपुर मे हो सकने की शक्यता सम्भव प्रतीत होने पर दि० 21-3-93 को सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी की अध्यक्षता मे पाच सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने कोबा मे जाकर परमपूज्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् पदमसागरसूरीश्वरजी म० सा० से विनती की गई। जयपुर श्रीसघ की प्रबल भावना एव विनती को मान देकर आपने उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म० सा० एव मुनिराज श्री प्रेम सागरजी म० सा० को यह चातुर्मास जयपुर मे करने की आज्ञा प्रदान की । श्री आचार्य भगवत के वाई पास सर्जरी

कराकर प्रथम बार कोबा पधारने पर आयोजित समारोह में चातुर्मास की विनती की गई तथा पूज्य आचार्य भगवन्त ने अत्यन्त कृपा पूर्वक अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा उसी समय जय बुला दी गई। इस अवसर पर आचार्य भगवन्त आदि को जयपुर श्रीसंघ की ओर से कामली वोहराई गई।

आप श्री का चातुर्मास जयपुर होना निश्चित होने का समाचार पाकर न केवल जयपुर में ही अपितु राजस्थान के विभिन्न संघों में हर्ष की लहर दौड़ गई। यद्यपि आपका अधिकांश प्रवास गुजरात में रहा लेकिन आपका जन्म, दीक्षा, बड़ी दीक्षा आदि राजस्थान में होने से राजस्थानवासियों के साथ आपका निकट का एवं भावनात्मक सम्बन्ध रहा है। वैसाख सुदी 3 दि० 25-4-93 को कोबा में ही आपको प्रदान की जाने वाली उपाध्याय पदवी के अवसर पर एवं श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा के मध्य स्थित गुरु मंदिर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा आदि महोत्सव के अवसर पर भी श्रीसंघ के अध्यक्ष महोदय के नेतृत्व में संघ के सदस्य कोबा में उपस्थित हुए। आचार्य भगवन्त, उपाध्याय श्री को पंन्यास से उपाध्याय एवं गणिवर्य श्री वर्धमानसागरजी म० को पंन्यास पदवी प्रदान समारोह के अवसर पर भी उपस्थित होकर कामली वोहरा कर संघ की ओर से भक्ति की गई।

समारोह समाप्ति के तत्काल पश्चात् दि० 30-4-93 को आपने कोबा से जयपुर के लिए विहार किया। भीषण गर्मी, पहाड़ी मार्ग, मौसम की विषम प्रतिकूलताओं को सहन करते हुए उग्र विहार कर आप जयपुर पधारे जिसके लिए जयपुर श्रीसंघ आपका अत्यन्त कृतज्ञ एवं आभारी है।

विहार के मार्ग में उदयपुर, ब्यावर, अजमेर आदि स्थानों के साथ-साथ सम्पर्क भी निरन्तर सम्पर्क तो रखा ही गया. आपके जोबनेर आगमन के अवसर पर यहां से एक बस में यात्रीगण आपके दर्शनार्थ जोबनेर पहुँचे। श्री मंगलचन्द [illegible] की ओर से यहां पर पूजा पढ़ाई गई तथा यात्री संघ द्वारा सामायिक में शक्ति भेंट की गई। जोबनेर श्रीसंघ द्वारा भी यात्रियों की भावपूर्ण साधर्मी भक्ति की गई जिसके लिए जोबनेर श्रीसंघ को हार्दिक धन्यवाद है।

दि० 22-6-93 को आप जयपुर पधारे तथा विभिन्न स्थानों पर प्रवचन साधर्मी भक्ति आदि के कार्यक्रम होते रहे तथा दि० 27-6-93 को आपका [illegible] जयपुर में शुभागमन हेतु नगर प्रवेश हुआ।

इसी प्रकार पूज्य [illegible]

विनती को मान देते हुए अत्यन्त कृपा पूर्वक अपनी आज्ञा प्रदान की जिसके लिए जयपुर श्रीसंघ आपका कृतज्ञ है।

रविवार, दि 27 जून, 1993 को प्रात चैम्बर भवन पर आप सभी का समय्या किया गया तथा वहा से भव्य जुलूस प्रारम्भ हुआ। जुलूस मे हाथी घोडे बैण्ड आदि के साथ-साथ बडी सख्या मे साधर्मी भाई बहिन शामिल हुए। मार्ग मे जगह-जगह पर गवलिया कर आपके प्रति भक्ति व्यक्त की गई।

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पहुँचने पर आप सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापनार्थ एव अभिनन्दन हेतु सार्वजनिक सभा हुई जिसके मुख्य अतिथि भूतपूर्व वित्तमन्त्री राजस्थान मा श्री चन्दनमल वैद थे। श्रीसघ की ओर से सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चोधरी ने आपका अभिनन्दन किया तथा कामलिया वोहराई गई। मुख्य अतिथि महोदय को भी माल्यार्पण के साथ-साथ स्मृति चिन्ह भेंट कर बहुमान किया गया। श्री मोहनोत भाईपा सघ की ओर से भी कामली वोहराई गई। श्री लक्ष्मीचन्द जी भसाली एव सुश्री सरोज कोचर एव सहयोगियो के भजनो के साथ-साथ जयपुर के विभिन्न सघो के पदाधिकारियो ने भी आपके अभिनन्दन मे अपने-अपने सघो की ओर से श्रद्धा सुमन समर्पित किए। पूज्य उपाध्याय श्री ने भी अपने मार्मिक प्रवचन से श्रीसघ को लाभान्वित किया। प्रवेश के उपलक्ष्य मे एक सद्गृहस्थ की ओर से सामूहिक आयम्बिल की आराधना कराने का लाभ लिया गया तथा मगलचद ग्रुप की ओर से प्रभावना की गई। इस अवसर पर श्री महेन्द्रसिंहजी जैन द्वारा मिनरल वाटर पिलाने का लाभ लिया गया।

आराधनायें

जब से आप पधारे है श्रीसघ मे धर्म आराधनाओं की झडी लगी हुई है। सर्व प्रथम चौमासी चौदस की आराधनाओं के साथ-साथ सूत्र वोहराने की बोलिया हुई। "योग शास्त्र' एव "श्री चन्द्र केवली चरित्र' पर प्रतिदिन आपके मार्मिक सारगर्भित एव तत्वपूर्ण प्रवचन हो रहे हैं जिन्हे श्रवण कर श्रोतागण लाभावित हो रहे हैं। प्रतिदिन प्रवचन के पश्चात् प्रभावनाये हो रही हैं। नीवी, खीर एव ७ मिनिट मे आहार ग्रहण के एकासणे, सामूहिक आयम्बिल आदि अनेक तपस्यायें हुई हैं। क्रमवार अट्ठम एव आयम्बिल की आराधनाये चालू हैं।

साध्वी श्री राजेन्द्रश्रीजी म सा की 18वी पुण्य तिथि के उपलक्ष मे रत्नत्रयी महोत्सव का आयोजन रखा गया जिसमे सामूहिक स्नात्र पूजन एव अल्पाहार का लाभ श्री दलपतजी ढललानी परिवार ने लिया, खीर के एकासणे कराने लाभ मगलचन्द ग्रुप ने तथा श्री शान्ति स्नात्र महापूजन पढाने का लाभ श्रीमती बबीता एव मजूला भण्डारी तथा श्री हीराचन्दजी कोठारी परिवार ने लिया। भगवान श्री नेमीनाथ स्वामि के जन्म एव दीक्षा कल्याणक के उपलक्ष मे। छट्ठ उपवास की आराधना हुई तथा भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के कल्याणक के उपलक्ष मे श्री ज्ञानचन्दजी सुभाषचन्दजी सुशीलकुमारजी

छजलानी परिवार की ओर से भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की 108 पार्श्वनाथ महापूजन का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार की पूजाएँ पढ़ाई जाती रही है। एकासणा कराने का लाभ एक सद्‌गृहस्थ द्वारा लिया गया।

बालकों में धार्मिक संस्कार डालने एवं धर्म के बारे में जानकारी देना आज की महति आवश्यकता है और इस हेतु शिविरों का आयोजन होता रहा है। चूंकि प्रति रविवार को जप-तप-पूजाएँ आदि अन्य कार्यक्रम होते रहे है अतः एक नया प्रयोग आपके द्वारा किया गया है। विभिन्न विषयों—शत्रुंजय महातीर्थ, स्नात्र पूजा, सामायिक, भगवान महावीर का जीवन आदि पर प्रश्न पत्र तैयार कर उपलब्ध कराए जाते हैं जिनको पुस्तकों की सहायता, मुनि भगवन्त तथा तत्सम्बन्धी जानकारो से ज्ञान प्राप्त कर प्रश्न के उत्तर लिखित में प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें केवल बालकों तक को ही सीमित नहीं रखा गया अपितु 18 वर्ष तक, 18 से 35 वर्ष तक तथा 35 से ऊपर तक के भाई बहिनों के तीन विभाग बना कर उनमें प्रथम एवं द्वितीय आने वालों को पारितोषिक वितरित किए जा रहे है। सभी पारितोषिकों के अर्थ भार का दायित्व मंगलचन्द ग्रुप ने लिया है।

इस प्रकार आपके चातुर्मास काल में श्रीसंघ में जप-तप, ज्ञान ध्यान आदि विभिन्न आराधनाओं, पठन पाठन सहित हर्षोल्लास का वातावरण व्याप्त है।

श्रद्धांजलि सभा :

जैन धर्म के प्रकाण्ड विद्वान, प्रभावी प्रवचनकार, वर्द्धमान तपोनिधि न्यायवि-शारद [illegible] गच्छाधिपति पूज्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजयभुवनभानु-सूरिजी म. सा. के दि. १९ अप्रैल, १९९३ को अहमदाबाद में काल धर्म को प्राप्त होने पर जयपुर श्रीसंघ में शोक की लहर दौड़ गई। दि. २० अप्रैल, १९९३ को विराजित साध्वी श्री [illegible]श्रीजी म. सा. की निश्रा में शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें [illegible] गुणानुवाद करने के साथ [illegible] वक्ताओं ने आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा श्री संघ की ओर से शोक प्रस्ताव पारित किया गया। इसी प्रकार श्री [illegible] समिति की ओर से भी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर आपके प्रति [illegible] सुमन समर्पित किए गए।

दिनांक 5.9.93 को [illegible] श्रीमद् [illegible] 6.9.93 को [illegible]

[illegible]

7-9-93 को उनके सुपुत्र श्रीमान् सिद्धराजजी सा० टड्डा एव परिवार की ओर से पूजा पढाई गई। सभा मे उनका गुणगान कर श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

पदवी प्रदान प्रसग पर श्रीसघ की ओर से बहुमान

गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्नसूरिश्वरजी म सा की आज्ञा एव निश्रा मे आयोजित पदवी प्रदान समारोह पालीताणा मे आयोजित हुआ जिसमे परम पूज्य श्री नित्यानन्द विजयजी, रत्नाकर विजयजी, जगतचन्द्र विजयजी को आचार्य पदवी एव वसन्त विजयजी म सा को उपाध्याय पदवी प्रदान की गई।

इसी प्रकार आचार्य भगवन्त श्रीमद् पदमसागरसूरीश्वरजी म सा की आज्ञा एव निश्रा मे कौवा मे आयोजित पदवी प्रदान समारोह मे पू धरणेन्द्रसागरजी म सा को उपाध्याय एव वर्द्धमानसागरजी म सा को पन्यास पदवी के अवसर पर दोनो ही जगहो के महोत्सवो मे जयपुर श्रीसघ को ओर से सघ के अध्यक्ष हीराभाई चौधरी के नेतृत्व मे श्रीसघ के भाई-बहिनो ने भाग लिया तथा सभी को कामली वोहरा कर गुरु भक्ति व्यक्त कर आर्शीवाद ग्रहण किया गया।

स्थायी गतिविधिया

विगत वर्ष मे हुई विभिन्न गतिविधियो का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् अब मैं इस श्रीसघ की स्थायी गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय

श्रीसघ के मूल जिनालय श्री सुमतिनाथ स्वामी का मन्दिर जिसकी स्थापना सम्वत् १७८४ मे हुई थी, सेवा पूजा आराधना आदि का कार्य वर्ष भर सानन्द सम्पन्न होता रहा है।

भक्तिकर्त्ताओ द्वारा प्रदत्त पूजन सामग्री से सभी प्रकार के द्रव्य पूजाकर्त्ताओ को उपलब्ध होते रहे है। पूर्व मे आपसी सहमति से आठ भेटकर्त्ताओ को दिया गया लाभ इस बार भी उसी प्रकार दिया गया था।

इस वर्ष देव द्रव्य खाते मे ५,६५,३२८)२१ की आय हुई है जिसके मुकाबले में इस जिनालय के अ तर्गत तो व्यय मात्र ८५,६७०)८५ का हुआ है, जनता कालोनी स्थित श्री सीमन्धरस्वामी जिनालय के निर्माण कार्य पर इस सीगे से ४,१६,०२२)२५ व्यय किये गये हैं। चन्दलाई मन्दिर का जीर्णोद्धार भी कराया गया है जिस पर ४१३६३)७५ व्यय हुए हैं।

जिनालय का वार्षिकोत्सव जेठ सुदी १० दि ३०-५-९३ को मनाया गया जिसमें दो दिवसीय कार्यक्रम हुए। पहले दिन सामूहिक स्नात्रपूजा के साथ-साथ रात्रि

को श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल एवं श्री ज्ञान विचक्षण महिला मण्डल के सौजन्य से भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

फेरी में मार्बल लगाने का कार्य अभी पूर्ण नहीं हो सका है। मार्बल तो प्राप्त हो गया है, लगवाने का कार्य चतुर्मास पश्चात् कराने की भावना है।

भगवान श्री धर्मनाथ स्वामी की प्रतिमाजी की पुनर्स्थापना कराने का कार्य अभी तक पूर्ण नहीं हो सका था। अब विराजित उपाध्याय श्री की निश्रा में नवान्हिका महोत्सव सहित प्रभु प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा मिगसर वदी 5 सम्वत् 2050 को सम्पन्न कराने का निश्चय हुआ है। सम्पूर्ण व्यवस्था एवं प्रतिष्ठा कराने का लाभ सर्वश्री पतनमलजी सरदारमलजी, मनोहरमलजी लूनावत परिवार को दिया गया है। इनसे वर्षों से लम्बित यह कार्य भी अब पूर्ण हो सकेगा।

श्री सीमाधर स्वामी मन्दिर, जनता कालोनी, जयपुर :

इस जिनालय का कार्य लगभग पूर्ण हो गया है। श्री तरसेम कुमारजी पारख के संयोजकत्व में गठित उप समिति ने इस कार्य को जिस तत्परता से पूर्ण कराने का प्रयास किया है उसके लिए महासमिति को हार्दिक सन्तोष है। शेष कार्य भी शीघ्र ही पूर्ण हो जाने की आशा है।

जैसा कि पिछले विवरण में अंकित किया गया था, तोरण द्वार युक्त मार्बल का दरवाजा बनाने का निश्चय किया गया है जिसके अन्तर्गत मार्बल तैयार होकर प्राप्त नहीं हो सकने से अभी तक यह कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका है। पार्टी से निरन्तर सम्पर्क किया जा रहा है और ज्योंही पूरा सामान प्राप्त हो जावेगा यह कार्य भी पूर्ण कराया जावेगा। 16 देवियां आदि प्रतिमायें भी निर्मित हो रही हैं और उचित अवसर पर इनकी प्रतिष्ठा कराई जावेगी।

निर्माण कार्य पर भी इस विवरण वर्ष में 4,19,022)55 व्यय हुए हैं तथा 80,000) रु० तोरण द्वार, देवियां आदि के पेटे अग्रिम दिए हुए हैं।

यहाँ पर सेवा पूजा का कार्य पूर्व भार सन्तोषजनक रूप से होता रहा है। [illegible] मगसर वदी 12 दि. 21-11-92 को मनाया गया। [illegible] भगवान के [illegible] भेंट किए गए हैं।

श्री ऋषभदेव स्वामी का मन्दिर, [illegible] :

[illegible]

सर पर ग्राई झौंपडी की जमीन को क्रय करने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है लेकिन अभी तक इसमे सफलता प्राप्त नही हो सकी है । एक बार इकरार करने के बाद भी मालिक द्वारा मुकर जाने से यह कार्य पूर्ण नही सका ।

शिवदासपुरा से बरखेटा तक सडक बनाने के लिए राज्य सरकार से निरन्तर प्रयास करते रहे हैं । महासमिति को प्रसन्नता है कि अब यह कार्य भी प्रारम्भ हो गया है और प्रगति पर है ।

जिनालय का वार्षिकोत्सव दि २८-२-९३ को सानन्द सम्पन्न हुआ । श्री ज्ञान चन्दजी टुकलिया का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है ।

श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय, चन्दलाई

इस जिनालय की सेवा पूजा आदि का कार्य भी सयोजक श्री विमलकान्त देसाई के सयोजकत्व मे गठित उप समिति की देख-रेख मे सुचारु रूप से सम्पन्न होता रहा है ।

लगभग दस वर्ष पूर्व इस जिनालय का जीर्णोद्धार होकर पुनर्प्रतिष्ठा हुई थी । इस बीच मदिरजी की दीवारे आदि जीर्ण शीर्ण हो गई थी जिनका जीर्णोद्धार कराया गया है । लेट्रिन बाथरूम की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए यहाँ की धर्मशाला मे एक लेट्रिन और दो बाथरूम भी बना दिए गए हैं । मन्दिरजी के मूल भाग तथा सलग्न भवन के जीर्णोद्धार आदि पर कुल ८२,७२७) रु व्यय हुए हैं जिनमे से आधी रकम ४१३६३)७५ का समायोजन देव द्रव्य से एव ४१३६३)७५ का समायोजन साधारण खाते से किया गया है ।

इस वर्ष का वार्षिकोत्सव भी परम्परागत रूप से मगसर वदी ५ दि १५-११-९२ को हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण मे मनाया गया । इस अवसर पर इतनी उप-स्थिति पूर्व मे कभी नही हुई थी । साधर्मी वात्सल्य का लाभ श्रीमति मदनबाई साड परिवार द्वारा लिया गया ।

सोडाला मे मन्दिर निर्माण

यहाँ मन्दिर उपाश्रय निर्माण हेतु रूपरेखा एव नक्शे बनाकर भूमि के दान दाता को प्रेषित किए गए । उनके द्वारा यह उत्तर देने पर कि–"उन्हे नया प्रस्ताव तथा नक्शा स्वीकार नही है"– एव उनके द्वारा सम्बन्धित कागजात वापिस माग लेने से अब यह प्रकरण इस श्रीसघ के स्तर पर समाप्त हो गया है ।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन एव श्री ऋषभ देव स्वामी जिनालय मारजी का चौक के परिसर मे श्रीसघ द्वारा निर्मित कराए गए उपाश्रय की व्यवस्था सुचारु रूप से सम्पन्न होती रही है ।

इस वर्ष पुनः सफेदी, रंग रोगन, आवश्यक मरम्मत आदि का कार्य कराया गया है।

श्री ऋषभदेव स्वामी जिनालय एवं गुरुदेव की सेवा पूजा हेतु ट्रस्ट द्वारा प्रारम्भ की गई योजना के अन्तर्गत 751) रु० की मन्दिरजी की एवं 251) रु० की पूजा की कुल 59 एवं 51 मितियां इस श्रीसंघ द्वारा विगत पर्युषण में भरवाई गई है।

श्री वर्धमान आयम्बिलशाला :

श्री वर्धमान आयम्बिल की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारु रूप से संचालित होती रही है। इस सीगे में 48706)10 की आय एवं 32293)75 का व्यय हुआ है। आयम्बिलशाला में फोटो लगाने के अन्तर्गत 8777) रु० प्राप्त हुए है। बर्तनों आदि सहित रसोई बनाने के अनेक उपकरण और खरीदे गए है। पांच पंखे और लगाए गए हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर भोजनशाला :

आचार्य श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरिश्वरजी म० सा० की सद्प्रेरणा से स्थापित श्री जैन श्वेताम्बर भोजनशाला निरन्तर वर्ष भर सुचारु रूप से चलती रही है। बाहर से पधारे मेहमानों, आगन्तुकों सहित स्थानीय लोगों ने भी इसका उपयोग किया है। इस सीगे में 64,647)50 की आय तथा 67483)19 का व्यय हुआ है। टूट की राशि का समायोजन साधारण सीगे में किया गया है।

इस सीगे की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु विगत पर्युषण में स्थायी कोष में राशि एकत्रित की गई थी जिसके अन्तर्गत 34569) प्राप्त हुए है जिसमें से एफ. डी 27054) रु० की करवा दी गई है।

श्री समुद्रइन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

इस कोष के बारे में पूर्व विवरण में विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की जा चुकी है। 3,15,183) रु० की राशि स्थायी कोष में जमा है इस वर्ष ब्याज से 35,454) रु० तथा 4244)30 [illegible]

[illegible]

श्री साधारण खाता

सबसे अधिक व्यय भार युक्त इस सीगे के अन्तर्गत इस वर्ष 2,53,083)50 की आय तथा 1,97,585)33 का व्यय हुआ है। चन्दलाई मन्दिर मे सलग्न परिसर के जीर्णोद्वार पर 41363)75 का व्यय भोजन शाला की टूट वैय्यावच्च मे 20307) की आय के मुकावले 45,591)86 का व्यय का भार इसी सीगे के अन्तर्गत समायोजित किया गया है। विगत वर्ष की आय एव व्यय के मुकावले इस वर्ष और वृद्धि हुई है।

पुस्तकालय वाचनालय एव धार्मिक पाठशाला

पुस्तकालय, वाचनालय की व्यवस्था वर्ष भर सुचारु रूप मे सचालित होती रही हैं। नई पुस्तको की भी काफी खरीद की गई है।

धार्मिक पाठशाला भी वर्ष भर चलती रही है और वालकों मे धार्मिक शिक्षा के प्रति रुचि वढी है लेकिन अभी भी इसमे और अधिक वृद्धि होना अपेक्षित है। वालको मे धार्मिक सस्कार एव धर्म के प्रति आस्था वढे इसके लिए उन्हे धार्मिक प्रशिक्षण एव ज्ञान देना आवश्यक है जिसका सामान्य विद्यालयो मे अभाव ही है। इसका जितना अधिक से अधिक उपयोग हो सके उतना ही उचित है।

उद्योगशाला एव सिलाई शाला

सिलाई शाला जो पिछले कई वर्षों तक कार्यरत रहने के वाद प्रशिक्षित अध्यापिका के अभाव मे वन्द हो गई थी अव पुन चालू हो गई है और काफी अच्छी सख्या मे महिलायें सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

नियमित उद्योगशाला प्रारम्भ करने का प्रश्न भी विचाराधीन है लेकिन सबसे वडी वाधा स्थानाभाव की है। इस ओर भी प्रयास किया जा रहा है ताकि शिविर मे प्रशिक्षित महिलाओ को नियमित रोजगार उपलब्ध कराया जा सके और वे स्वावलम्बी वन सकें।

श्री माणिभद्र प्रकाशन

यह हर्ष और सन्तोष का विषय है कि इस सस्था के मुख पत्र "माणिभद्र" स्मारिका का प्रकाशन यथा समय हो रहा है साथ ही इसके स्तर मे भी निरन्तर निखार आ रहा है। आचार्य भगवन्तो, मुनिवृन्दो, विद्वानों आदि के शुभाशीर्वाद एव प्रशसा पत्र प्राप्त हो रहे हैं।

विगत वर्ष इसके प्रकाशन पर 19407) रु की आय तथा 19236) रु का व्यय हुआ है। इस वर्ष विज्ञापनो की दरो मे सशोधन करना आवश्यक हो गया था क्योंकि मुद्रण एव कागज की दरों मे काफी वृद्धि हो गई है।

इस वर्ष के अंक के प्रकाशन में पर्याप्त विज्ञापन प्राप्त हुए हैं एवं आशा है कि किसी प्रकार की टूट नहीं रहेगी।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

जैसा कि पूर्व में भी विदित कराया जाता रहा है कि तपागच्छ संघ की नव-युवकों की यह संस्था संघ की सबल शक्ति है जिनके सहयोग से संघ के सभी आयोजन सुचारु रूप से सम्पन्न कराने में इनका भरपूर योगदान प्राप्त होता है।

इस वर्ष मण्डल के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए हैं। मण्डल की विगत वर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

संघ की आर्थिक स्थिति

महासमिति को हार्दिक प्रसन्नता है कि संघ की आर्थिक स्थिति निरन्तर एवं उत्तरोत्तर सुदृढ़ होती जा रही है। वर्तमान में कार्यरत महासमिति द्वारा प्रस्तुत प्रथम आय-व्यय विवरण के अनुसार वर्ष 1990–91 के 969697/97 रु० के सामान्य कोष के मुकाबले 13,22,023.08 हो गया है। साधर्मी सेवा कोष, आयम्बिलशाला की स्थायी मितियां, भोजनशाला आदि की स्थायी जमा राशि को मिला कर संघ की निधि 18,63, 046)37 हो गए है। जनता कालोनी मन्दिर निर्माण, चन्दलाई मन्दिर का जीर्णोद्धार, आयम्बिलशाला एवं भोजनशाला में बर्तन, आदि की काफी बड़ी मात्रा में की गई खरीद के उपरान्त भी संघ की परिसम्पदा में संतोषजनक वृद्धि हुई है जिसका सम्पूर्ण श्रेय श्रीसंघ के उदारमना दानदाताओं एवं भक्तिकर्ताओं को है। महासमिति को आशा है कि इसके कार्यकाल के इस अन्तिम वर्ष में भी संघ की निधि में पर्याप्त वृद्धि होगी। लेकिन यह सब दानदाताओं के उदारमना सहयोग पर ही निर्भर रहेगा जिसके लिए महासमिति को पूर्ण विश्वास है कि इसमें कहीं कोई कमी नहीं होगी।

आगामी चुनाव

वर्ष 1991–93 के लिए निर्वाचित महासमिति का कार्यकाल मार्च 94 में पूर्ण होना है लेकिन महासमिति का प्रयास होगा कि चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् यथा सम्भव इस वर्ष में [illegible] यह कार्य पूर्ण हो जाए।

श्री संघ के सभी भाई बहिनों से निवेदन है कि जिन्होंने अपने नाम मतदाता सूची में अभी तक अंकित नहीं कराए हैं अथवा पारिवारिक सदस्यों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है तो उसके अनुसार अपने परिवार की संशोधित सूची प्रस्तुत कर मतदाता सूची में नाम अंकित कराने की कृपा करें।

साथ ही सभी [illegible] से विनम्र निवेदन है कि वे [illegible] अपना [illegible] के अनुसार श्री संघ की सेवा में [illegible]

श्री सघ का विश्वास अर्जित कर उत्तरदायित्व ग्रहण करने को अग्रसर हो। मतदाता सूची पेटी पर उपलब्ध है।

धन्यवाद ज्ञापन

महासमिति विगत वर्ष मे सघ की गतिविधियों एव कार्य सचालन मे प्राप्त सहयोग के लिए सभी महानुभावो का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती है, साथ ही अपने लगभग ढाई वर्ष के कार्यकाल मे प्राप्त सहयोग के लिए सभी का हार्दिक धन्यवाद और कृतज्ञता ज्ञापित करती है। महासमिति के सदस्यो एव पदाधिकारियों ने अपनी ओर से अच्छे ढग से कार्य सम्पादित करने का प्रयास किया है, फिर भी इसमे रही हुई त्रुटिया एव भूलो के लिए श्री सघ से क्षमा याचना करती है।

उपरोक्त विवरण मे प्रसंगवश आये हुए भक्तिकर्त्ताओ, दानदाताओं, पदाधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ का नामोल्लेख ही हो सका है लेकिन महासमिति ज्ञात अज्ञात सभी महानुभावों के प्रति जिनका हर सम्भव एव हर क्षेत्र मे सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए हार्दिक धन्यवाद एव आभार व्यक्त करती है।

श्री राजेन्द्रकुमारजी चतर, सी ए द्वारा नि स्वार्थ सेवा भावना से किये गए अकेक्षण कार्य माईक आदि की समुचित व्यवस्था के लिए श्री इन्दरचन्दजी गोपीचन्दजी चौरडिया परिवार एव सस्था के समस्त कर्मचारी वर्ग का भी आभार व्यक्त करती है जिनके सहयोग के बिना कार्यो का सफलतापूर्वक सचालन सम्भव होना कठिन था।

समापन

वर्ष 1991-93 के लिए निर्वाचित महासमिति की ओर मे यह दूसरे वर्ष के कार्यकलापो का विवरण आपकी सेवा मे प्रस्तुत करते हुए यह वार्षिक विवरण एव आय-व्ययक विवरण प्रस्तुत करते हुए अपना स्थान ग्रहण कर रहा हूँ।

जय वीरम्

Auditors' Report

I (Form No. 10-B)
(see Rule 17 b)

AUDIT REPORT UNDER SECTION 12 A (b) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 IN THE CASE OF CHARITABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OR INSTITUTIONS

We have examined the Balance Sheet of Shri JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH, Ghee Walon-ka-Rasta, Jaipur as at 31st March, 1993 and the Income and Expenditure Account for the year ended, on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust or institutions.

We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit. In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh, subject to the comments that old immovable properties & jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet, Income & Expendtitueres are accounted for on recipt Basis as usual.

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us, the said accounts subject to above give a true and fair view :—

1. In the case of the Balance Sheet of the state of affairs of the above named trust institutions as at 31st March, 1993 and
2. In the case of the Income and Expenditure account of the [illegible] of its accounting year ending on 31st March, 1993.

The prescribed [illegible] are annexed hereto

[illegible]

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

आय-व्यय खाता

कर निर्धारण

गत वर्ष का खर्च	व्यय		इस वर्ष का खर्च
1,74,836 89	श्री मन्दिर खर्च खाते		85,670 85
	आवश्यक खर्च	40832 10	
	विशेष खर्च	44838 75	
16,061 72	श्री जनता कालोनी मन्दिर खर्च खाते		28,812 50
1,71,550 95	श्री जनता कालोनी जीर्णोद्धार खाते		4,19,022 25
200 00	श्री माणीभद्र भण्डार खाते		111 00
1,68,345 74	श्री साधारण खर्च खाते		1,97,585 33
	आवश्यक खर्च	69,685 70	
	विशेष खर्च	1,27,899 63	

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

आय-व्यय खाता

कर निर्धारण

गत वर्ष का खर्च	व्यय		इस वर्ष का खर्च
64,341 90	श्री ज्ञान खर्च खाते		45,511 25
	आवश्यक खर्च	44055 75	
	विशेष खर्च	1455 50	
32,722 10	श्री आयम्बिल खर्च खाते		
	आवश्यक खर्च		32,293 75
	श्री गुरुदेव खाते		150 00
13,102 50	श्री जीव दया खाते		7,225 00
2,608 00	श्री आयम्बिल फोटो खाता नाम		967 50
3,628 95	श्री मन्दिर बरखेड़ा खर्च खाते नाम		5,999 85
27,924 85	श्री भोजन शाला खाते नामे		67,483 19
—	श्री उद्योग शाला व शिविर खाते नाम		15,047 75
3,675 00	श्री बरखेड़ा जोत खाते नाम		4,410 00
11,102 21	श्री वैयावच्च खाते नाम		45,591 86
36,120 00	श्री बरखेड़ा जीर्णोद्धार खाते नामे		1,170 50

घी वालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-92 से 31-3-93 तक

वर्ष 1993-94

गत वर्ष की आय	आय		इस वर्ष की आय
6,495.00	श्री साधर्मी सेवा कोष खाते जमा		39,698.30
	ब्याज	35,454.00	
	गोलक	4,244.30	
8,832.00	श्री जनता कालोनी साधारण		
18,677.00	श्री बरखेड़ा साधारण खाता		
12,371.00	श्री उपाश्रय खाता		
2,24,034.13	श्री चतुर्मास खाते		
1,311.00	श्री आयम्बिल जीर्णोद्धार		
12,12,438.21			12,45,456.61

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

31-3-1993 का

गत वर्ष की रकम	सम्पत्ति		चालू वर्ष की रकम
	श्री स्थाई सम्पत्ति		—
26,748.45	लागत पिछले वर्ष के अनुसार		26,748.45
53,09(.25	**श्री विभिन्न लेनदारियां**		74,373.25
	श्री उगाई	618.25	
	श्री अग्रिम खाता	73,028.00	
	रा० स्टे० इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड	727.00	
12,17,557.15	**श्री बैंकों में जमा**		16,00,499.95
	(क) स्थायी जमा खाता		
	स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर	12,56,754.95	
	देना बैंक	3,43,745.00	
	(ख) चालू खाता		
[illegible]	स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर		[illegible]
[illegible]	[illegible]		[illegible]

[illegible]

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

31-3-1993 का

गत वर्ष की रकम	सम्पत्ति		चालू वर्ष की रकम
	बैंक आफ बड़ौदा	295.17	
	स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर	1,45,696.30	
	बैंक आफ राजस्थान	2,436.36	
1,73,618.27	श्री रोकड़ बाकी		11,561.85
15,21,631.24			18,63,046.37

तपागच्छ संघ, जयपुर

[illegible]

[illegible]

यादों का

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर मे 40 वर्षों

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ, जयपुर का इतिहास यो तो सम्वत् 1784 से ही प्रारम्भ हो जाता है जब श्री सुमतिनाथ जिनालय, घीवालो का राम्ता की नीव रखी गई। कहते है कि जिस दिन जयपुर शहर की नीव रखी गई उसी दिन इस जिनालय की नीव भी रखी गई। तब से निरन्तर हमारे बुजुर्ग श्री सघ के स्व-नाम धन्य आगेवान सस्था एव श्रीसघ के कार्यकलापो का सचालन करते रहे जिनका अपना इतिहास है।

माणिभद्र के प्रथम अक का प्रकाशन विक्रम स० 2016 मे हुआ जिसमे वर्णित आलेख से ज्ञात होता है कि इस श्रीसघ के आगेवानो ने सम्वत् 2011 मे विधिवत रूप से

माणिभद्र का अक सख्या	सम्वत्	सन्	चातुर्मास
	2012	1955	मुनि श्री न्यायविजयजी
	2013	1956	मुनि श्री रगविजयजी
	2014	1957	मुनि श्री जयविजयजी
	2015	1958	मुनि श्री प्रेमसुन्दरविजयजी
1.	2016	1959	मुनि श्री भव्यानन्दविजयजी
2	2017	1960	खाली
3	2018	1961	साध्वी श्री जीतेन्द्रश्रीजी
4	2019	1962	खाली
5	2020	1963	मुनि श्री जिनप्रभविजयजी साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी
6	2021	1964	गणि श्री दर्शनसागरजी सा० श्री विद्याश्रीजी बसन्तश्री जी
7	2022	1965	यती श्री रूपचन्दजी
8	2023	1966	मुनि श्री विशालविजयजी
9	2024	1967	मुनि श्री विशालविजयजी
10	2025	1968	मुनि श्री भद्रगुप्तविजयजी
11	2026	1969	पन्यास श्री भुवनविजयजी

झरोखा

में हुए चातुर्मास एवं पदाधिकारियों का विवरण

संकलनकर्त्ता—मोतीलाल भड़कतिया

विधान बनाया तथा उसके प्रावधानों के अनुसार मताधिकार के आधार पर महासमिति का तीन वर्ष के लिए निर्वाचन होता रहा। मणिभद्र में प्रकाशित चातुर्मास सम्बन्धी विवरण एवं संघ पदाधिकारियों की नामावली एवं वार्षिक कार्य विवरण प्रस्तुतकर्त्ता संघमन्त्री के नामोल्लेख के अनुसार चातुर्मास एवं संघ के अध्यक्ष उपाध्यक्ष एवं संघमन्त्री के पद पर कार्यरत रहे महानुभावों का विवरण यहां पर उद्धृत किया जा रहा है। आशा है कि वर्तमान एवं भावी पीढ़ी की जानकारी एवं स्मृति के लिए यह विवरण उपयोगी सिद्ध होगा।

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	संघ मन्त्री
श्री गुलाबचन्दजी ढढ्ढा	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री उमरावमलजी सिंघी
श्री धनरूपमलजी भण्डारी	श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री आसानन्दजी भंसाली	श्री हीराचन्दजी वैद
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

माणिभद्र का अक संख्या	सम्वत्	सन्	चातुर्मास
12	2027	1970	मुनि श्री विनयविजयजी
13	2028	1971	सा० श्री निर्मलाश्रीजी
14	2029	1972	सा० श्री निर्मलाश्रीजी
15	2030	1973	प्र० सा० श्री दमयन्तीश्रीजी
16	2031	1974	गणिवर्य श्री विशालविजयजी
17	2032	1975	मुनि श्री नयरत्नविजयजी
18	2033	1976	मुनि श्री कलाप्रभविजयजी
19	2034	1977	पन्यास श्री न्यायविजयजी
20	2035	1978	पन्यास श्री न्यायविजयजी
21	2036	1979	मुनि श्री धर्मगुप्तविजयी सा० श्री रविन्द्रश्रीजी देवेन्द्रश्रीजी
22	2037	1980	पन्यास श्री पदमविजयजी
23	2038	1981	आ० श्री ह्रींकारसूरीजी सा० श्री शुभोदया श्री जी
24	2039	1982	आ० श्री मनोहरसूरीश्वरजी
25	2040	1983	आ० श्री ह्रींकारसूरीश्वरजी
26	2041	1984	मुनि श्री नयरत्नविजयजी
27	2042	1985	आचार्य श्री कलापूर्णसूरीजी
28	2043	1986	मुनि श्री अरुणविजयश्री
29	2044	1987	आ० श्री सदगुणसूरशीवरजी
30	2045	1988	सा० श्री चन्द्रकलाश्रीजी
31	2046	1989	मुनि श्री नित्यवर्धनसागरजी
32	2047	1990	खाली
33	2048	1991	आ० श्री इन्द्रदिन्नसूरीश्वरजी सा० श्री पदमलताश्रीजी यशकीर्तिश्री
34	2049	1992	आ० श्री हिरण्यप्रभसूरीश्वरजी
35	2950	1993	उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी सा० श्री देवेन्द्रश्रीजी

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	संघ मन्त्री
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री जवाहरलालजी चोरडिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री जवाहरलालजी चोरडिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री जवाहरलालजी चोरडिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री मदनराजजी सिंघी	श्री हीराचन्दजी वैद
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री मदनराजजी सिंघी	श्री रणजीतसिंहजी भंडारी
श्री किस्तूरमलजी शाह	श्री मदनराजजी सिंघी	श्री रणजीतसिंहजी भंडारी
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री कपिलभाई शाह	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री शिखरचन्दजी पालावत	श्री कपिलभाई शाह	श्री नरेन्द्रकुमारजी लूणावत
श्री शिखरचन्दजी पालावत	श्री कपिलभाई शाह	श्री नरेन्द्रकुमारजी लूणावत
श्री शिखरचन्दजी पालावत	श्री कपिलभाई शाह	श्री सुशीलकुमारजी छजलानी
श्री शिखरचन्दजी पालावत	श्री कपिलभाई शाह	श्री सुशीलकुमारजी छजलानी
श्री शिखरचन्दजी पालावत	श्री कपिलभाई शाह	श्री नरेन्द्रकुमारजी लूणावत
श्री कपिलभाई शाह	श्री मदनराजजी सिंघी	श्री नरेन्द्रकुमारजी लूणावत
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद	श्री मोतीलालजी भड़कतिया
श्री हीराभाई एम. चौधरी	श्री हीराचन्दजी वैद	श्री मोतीलालजी भड़कतिया

COMPLIMENTS

सोप
ओसवाल
सोप

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

फोन दुकान 560126
घर 552638

राजकुमार नेमीचन्द जैन

महावीर मार्का शुद्ध देशी घी

शुद्ध देशी घी के व्यापारी

341, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

विशेष : [illegible]

With Best Compliments From:

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

पदमकुमार शाह

गोदिका हाउस, बन्जी ठोलिया की धर्मशाला
के सामने, घी वालों का रास्ता
जयपुर–302 003
फोन–[illegible]

With Best Compliments from

WITH
BEST
COMPLIMENTS
FROM